संस्कृत-व्याकरण एवं रचना-प्रकाश

कक्षा ९, १० व ११ के लिए

लेखक

विद्यावाचस्पति नन्दकुमार शास्त्री *एम. ए. (हिन्दी-संस्कृत)*

पूर्व-प्राचार्य

श्री ऋषिकुल विद्यापीठ, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)

विश्वनाथ मिश्र *साहित्यशास्त्री, साहित्यरत्न*

संस्कृत-शिक्षक

बगड़िया बाल निकेतन सी. उ. मा. विद्यालय, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)

१९९६

अजमेरा बुक कम्पनी

त्रिपोलिया बाजार, जयपुर ३०२ ००२

संस्करण, १९९६



मूल्य : १९.७० रु. (उन्नीस रुपये सत्तर पैसे)
लेवी : ०.६० रु. (साठ पैसे)

इस पुस्तक में प्रयुक्त :
कागज : हिन्दुस्तान पेपर कार्पोरेशन लि.
५८ जी.एस.एम.; साइज ५६ × ९१; १४.८ किलो
कवर : बलारपुर इण्डस्ट्रीज लि.
२०० जी.एस.एम.

मुद्रित प्रतियाँ : ६,०००

लेजर टाइप सैटिंग :
कम्प्यूटर वर्ल्ड
चमेलीवाला मार्केट, जयपुर

मुद्रक :
मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर

किञ्चिन्निवेदनम्

व्याकरण-ज्ञान के बिना किसी भी भाषा का अध्ययन पूर्ण नहीं कहा जा सकता । व्याकरण शिक्षण के लिए अनेक पुस्तकें प्रकाशित एवं प्रचलित हैं। व्याकरण की तक ऐसी होनी चाहिए जिसके द्वारा सहज रूप से भाषा के अध्ययन में प्रवेश किया सके। प्रायः ऐसा देखा गया है कि शब्द एवं धातुओं के रूप एकत्र कर दिये जाते तथा कुछ प्रकरणों को एक स्थान पर संकलित कर दिया जाता है। आज छात्रों की मान्य प्रवृत्ति है कि कम से कम भार हो और सामग्री रुचिपूर्ण हो। कण्ठस्थीकरण की ृत्ति को आज न विद्यार्थी ही स्वीकारता है और न ही शिक्षाशास्त्री। विद्यार्थी व्याकरण पुस्तक की ओर आँख उठाना भी नहीं चाहता है। इसका मुख्य कारण दुरूह शैली है।

व्याकरण एवं रचना अभ्यास के द्वारा ही सम्भव है। अब तक जो कुछ कहा गया सीखा गया, उसका अभ्यास आवश्यक है। एक साथ धातु एवं रूप ज्ञान की क्रिया य-रचना की ओर प्रेरित करती है। छात्र में रचना के प्रति सहज आकर्षण होता है। क अध्याय में व्याकरण की विधि एवं ज्ञान-वस्तु अपेक्षित है। यह सम्भव नहीं है प्रत्येक छात्र गुरु के सान्निध्य में व्याकरण की शिक्षा ग्रहण कर सके। आजकल विद्यालयों ी अध्यापक व्याकरण-शिक्षा के प्रति विशेष आग्रहशील नहीं दिखाई देते, इसका कारण यह भी हो सकता है कि न्यूनतम कालांश निर्धारित हैं। स्वयंपाठी छात्र के तो व्याकरण एक सहज क्रिया के रूप में प्रस्तुत होना चाहिए, जिससे वह स्वयं अर्जित कर सके। अर्थात् ऐसी विधि से वर्णन हो, जो स्वयं शिक्षक की भूमिका कर सके। इसी दृष्टि से यह पुस्तक लिखी गई है। विद्यार्थी कण्ठस्थीकरण के भय क्त होकर भाषा-शिक्षण की ओर प्रेरित हो सकें, इस उद्देश्य को प्राथमिक स्थान गया है।

अष्टम कक्षा तक अध्ययन करने के बाद विद्यार्थी अनेक संस्कृत शब्दों का ज्ञान ता है। अनेक विद्यार्थी शब्द-रूपों को कण्ठस्थ भी कर लेते हैं, किन्तु अधिकांशतः थीकरण के भय से दूर भागने लगते हैं। यहाँ उन्हें शब्द रूप निर्माण के अभ्यास ोर प्रेरित किया गया है। इसी प्रकार संख्यात्मक शब्दों को सीखने के लिए अभ्यास को माध्यम बनाया गया है।

धातुरूप निर्माण के लिए प्रचलित सहज विधि को स्वीकार किया गया है। प्रयोगों

पूर्वज्ञान

संस्कृत भाषा का अर्थ है— "शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा।" भाषा के प्रमुख
क हैं— ध्वनि या वर्ण, शब्द और वाक्य। वर्ण दो प्रकार के होते हैं— स्वर एवं
ञ्जन। इन दोनों की कुल संख्या छियालीस है। स्वर तेरह और व्यञ्जन तेतीस हैं।

जिन ध्वनियों में उच्चारण में सांस बेरोक बाहर निकल जाती है, उन्हें स्वर कहते
र

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ—ये स्वर हैं।

अ, इ, उ, ऋ, लृ- ह्रस्व स्वर हैं।

आ, ई, ऊ, ॠ- दीर्घ स्वर हैं।

ए, ऐ, ओ, औ- मिश्रित स्वर हैं।

जिन वर्णों का उच्चारण दूसरे वर्ण की सहायता से होता है, व्यञ्जन कहलाते
स्वर वर्णों की सहायता से व्यञ्जन वर्णों का उच्चारण होता है। व्यञ्जन इस प्रकार
—

ञ्जन

क्, ख्, ग्, घ्, ङ्—कवर्ग

च्, छ्, ज्, झ्, ञ्—चवर्ग

ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्—टवर्ग

त्, थ्, द्, ध्, न्—तवर्ग

प्, फ्, ब्, भ्, म्—पवर्ग

य्, र्, ल्, व्—अन्तःस्थ

श्, ष्, स्, ह्—ऊष्म वर्ण

नुनासिक

ङ्, ञ्, ण्, न्, म्, (वर्ग के अन्तिम अक्षर) अनुनासिक कहलाते हैं।

नुस्वार- (ं) अनुस्वार कहलाता है, जिसका उच्चारण म् अथवा न् जैसा होता है।
से— अहं पठामि, एवं, यशांसि।

प्रत्येक वर्ण के उच्चारण में आभ्यन्तर और बाह्य, ये स्वाभाविक दो प्रयत्न होते

आभ्यन्तर प्रयत्न के पाँच भेद हैं—स्पृष्ट, ईषत्-स्पृष्ट, विवृत, ईषद्-विवृत और संवृत।

पाँचों वर्ग के अक्षरों का स्पृष्ट प्रयत्न होता है। अन्तःस्थ (य् र् ल् व्) का ईषत्-स्पृष्ट प्रयत्न होता है। स्वर वर्ण का विवृत प्रयत्न होता है। ऊष्म (श् ष् स् ह्) का ईषद्-विवृत प्रयत्न होता है। ह्रस्व अ वर्ण का संवृत प्रयत्न होता है।

बाह्य प्रयत्न ग्यारह होते हैं—विवार, श्वास, अघोष, संवार, नाद, घोष, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, अल्पप्राण और महाप्राण।

वर्ग के पहले, दूसरे वर्ण, तथा श् ष् स् वर्ण का विवार, श्वास, अघोष बाह्य प्रयत्न होता है। प्रत्येक वर्ग के ३, ४, ५वें वर्णों और य् र् ल् व् ह् का संवार, नाद, घोष प्रयत्न होता है। स्वर वर्णों का उदात्त, अनुदात्त, स्वरित प्रयत्न होता है। वर्ग के १, ३, ५, वें वर्णों तथा य् र् ल् व् और स्वर वर्णों का अल्पप्राण प्रयत्न होता है। प्रत्येक वर्ग के दूसरे व चौथे वर्णों तथा श् ष् स् ह् वर्णों का महाप्राण प्रयत्न होता है।

विसर्ग

(:) विसर्ग कहलाता है।—रामः और अन्तःस्थ।

सुवन्त (पद)

प्रथमा विभक्ति में 'सु' से लेकर सप्तमी विभक्ति के 'सुप्' तक शब्द के साथ जोड़े जाने वाले प्रत्यय सुप् कहलाते हैं। ये जिन शब्दों के अन्त में आते हैं, उन्हें सुवन्त (पद) कहते हैं।

संस्कृत भाषा के कारक छह हैं—कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, और अधिकरण। सम्बन्ध एवं संबोधन को मिलाकर आठ कारक होते हैं। संबोधन सहित विभक्तियाँ भी आठ हैं। इनके चिह्न इस प्रकार हैं—

विभक्ति	कारक	चिह्न (हिन्दी)
प्रथमा	कर्त्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, द्वारा, ने
चतुर्थी	सम्प्रदान	को, के लिए
पंचमी	अपादान	से (पृथक्)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी
सप्तमी	अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	—	हे, अरे, अये

वचन

संस्कृत में तीन वचन होते हैं—एकवचन, द्विवचन और बहुवचन।

सुप् विभक्ति का स्वरूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पंचमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

सम्बोधन के लिए प्रथमा विभक्ति का स्वरूप ही रहता है।

लिङ्ग

संस्कृत भाषा में तीन लिङ्ग होते हैं। पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग।

पुरुष-जाति का सूचक पुंल्लिङ्ग कहलाता है। स्त्री-जाति सूचक स्त्रीलिङ्ग तथा ज दोनों जातियों से पृथक् का सूचक हो वह नपुंसकलिङ्ग कहलाता है। जैसे— रामः (पुं०) रमा (स्त्री०), फलम् (नपुं०)। शोभनः, शोभना, शोभनम्। अनेक शब्द उभयलिङ्ग भ होते हैं।

धातु

संस्कृत में क्रिया को धातु कहते हैं। ये धातु दस भागों में विभक्त हैं— भ्वादिगण अदादिगण, जुहोत्यादिगण, दिवादिगण, स्वादिगण, तुदादिगण, रुधादिगण, तनादिगण क्र्यादिगण एवं चुरादिगण।

लकार

काल और अवस्था का जिनसे ज्ञान हो, उनको लकार कहा जाता है। लका दस होते हैं।

लट्—वर्तमान काल।
लिट्—परोक्षभूत।
लुट्—अनद्यतन भविष्यत्।
लृट्—सामान्य भविष्यत्।
लोट्—आज्ञा।
लङ्—अनद्यतनभूत।
विधिलिङ्—प्रेरणा या शिक्षा (चाहिए अर्थ में)।
आशीर्लिङ्—आशीर्वादार्थक।
लुङ्—सामान्य भूत।
लृङ्—हेतुहेतुमद्भाव।

प्रारम्भिक संस्कृत व्याकरण के लिए पांच लकार ही पर्याप्त हैं—

लट्—वर्तमान काल की क्रिया के लिए।

लोट्—आज्ञार्थक क्रिया के लिए।

लङ्—भूतकाल की क्रिया के लिए।

लृट्—भविष्यत् काल की क्रिया के लिए।

विधिलिङ्—प्रेरणा, शिक्षा, सुझाव आदि की क्रिया के लिए।

जैसे—

राम: पठति— (वर्तमान काल), राम: अपठत्— (भूतकाल), राम: पठतु (आज्ञा). राम: पठिष्यति— (भविष्यत् काल), राम: पठेत्— (प्रेरणार्थक)।

धातुएँ तीन प्रकार की होती हैं— परस्मैपदी, आत्मनेपदी और उभयपदी।

□ □ □

अध्याय-१

राम शब्द (पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	कारक	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्ता	राम: (ने)	रामौ (दो ने)	रामा: (अनेक ने)
द्वितीया	कर्म	रामम् (को)	रामौ (दो को)	रामान् (अनेक को)
तृतीया	करण	रामेण (से, द्वारा)	रामाभ्याम्	रामै:
चतुर्थी	सम्प्रदान	रामाय (को, लिए)	रामाभ्याम्	रामेभ्य:
पंचमी	अपादान	रामात् (से-पृथक्)	रामाभ्याम्	रामेभ्य:
षष्ठी	सम्बन्ध	रामस्य (का, के, की)	रामयो:	रामाणाम्
सप्तमी	अधिकरण	रामे (में, पर)	रामयो:	रामेषु
सम्बोधन	सम्बोधन	हे राम (अरे)!	हे रामौ!	हे रामा:!

अन्य अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्द राम शब्द की तरह ही बनते हैं। जैसे— बालक: (लड़का), समुद्र: (सागर), जनक: (पिता), मोहन: (नाम) आदि।

पठ् धातु- पठ = पढ़ना, लट् लकार (वर्तमान काल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष
पठति	पठतः	पठन्ति	प्रथम पुरुष
पठसि	पठथः	पठथ	मध्यम पुरुष
पठामि	पठावः	पठामः	उत्तम पुरुष

भ्वादिगण (परस्मैपदी) के किसी धातु के लट्लकार (वर्तमान) के रूप इस प्रकार बनाए जा सकते हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठ्+अति = पठति	पठ्+अतः = पठतः	पठ्+अन्ति = पठन्ति
म० पु०	पठ्+असि = पठसि	पठ्+अथः = पठथः	पठ्+अथ = पठथ
उ० पु०	पठ्+आमि = पठामि	पठ्+आवः = पठावः	पठ्+आमः = पठामः

भू (भव्) = होना, रक्ष् = रक्षा करना, वद् = बोलना, हस् = हँसना, चर् = चलना, त्यज् = छोड़ना, चल् = हिलना, अट् = घूमना, पच् = पकाना, नम् = नमस्कार करना, गम् (गच्छ्) = जाना, दृश् (पश्य) = देखना, आदि धातु के वर्तमान काल (लट् लकार) के रूप पठ् की तरह चलते हैं।

अनुवाद

(i) कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है।

(ii) जिस वचन में कर्त्ता होगा, उसी वचन की क्रिया होगी।

(iii) कर्त्ता के विशेषण भी उसी वचन के होंगे।

जैसे—राम पढ़ता है = रामः पठति। राम एवं केशव पढ़ते हैं = रामकेशवौ पठतः। (यहाँ राम और केशव दो व्यक्ति कर्त्ता हैं, अतः द्विवचन होगा।) राम, केशव और मोहन पढ़ते हैं—रामकेशवमोहनाः पठन्ति। (यहाँ दो से अधिक हैं, अतः बहुवचन होगा)। रामः पठति, रामौ पठतः, रामाः पठन्ति।

अभ्यास

१. अन्तस्थ-वर्ण हैं :—

(क) क् च् ट् त्।

(ख) ङ् ञ् ण् न्।

(ग) य् र् ल् व्।

(घ) श् ष् स् ह्।

२. 'कवर्ग' के लिए वर्णमाला में निर्धारित नासिक्य वर्ण है :—

(क) ण्

(ख) म्

(ग) ङ्

(घ) ञ्

३. "हिमालयात् गंगा प्रभवति।" रेखांकित शब्द में कौन सी विभक्ति है ?

(क) षष्ठी (ख) पंचमी (ग) द्वितीया (घ) सप्तमी (ङ) तृतीया ( )

४. "पश्यामः" का पुरुष और वचन निम्नांकित में से है :—

(क) प्रथम पुरुष, द्विवचन

(ख) उत्तम पुरुष, बहुवचन

(ग) मध्यम पुरुष, एकवचन

(घ) उत्तम पुरुष, एकवचन

(ङ) प्रथम पुरुष, एकवचन ( )

५. कृष्ण शब्द के रूप लिखो।

६. जनकाय, मल्लात्, कृष्णे, बालकेषु, मनुष्याणाम्, मार्गम्, मोहनेन, हे सोहनाः-इन शब्दों की विभक्ति एवं वचन बताओ।

७. वद् धातु के लट् लकार के रूप लिखो।

८. चलन्ति, त्यजसि, गच्छामि, पचतः, अटामि, नमसि, चरामः, गच्छावः, पश्यथ, रक्ष—इनके पुरुष एवं वचन बताओ।

९. कर्त्ता के सामने सही क्रिया लिखो—

कर्त्ता—रामः, बालकौ, मनुष्याः। क्रिया— पठति, गच्छतः, हसन्ति।

१०. हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करो—

गणेश हँसता है। राम और मोहन रक्षा करते हैं। मनुष्य बोलते हैं। बालक देखते हैं। पिता पढ़ता है। पुत्र नमस्कार करता है। सुन्दर लड़का आता है। (आ+गच्छ्)। मैं जाता हूँ।

११. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

-------पठति। मानवः-------(वद्)। सत्यः ओदन--------(पच्)।

रामश्यामौ-------(रक्ष्)। छात्राः-------(गच्छ्)। वयं -------- हस्।

( )

( )

अध्याय–२

लता शब्द (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	कारक	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्त्ता	लता	लते	लताः
द्वितीया	कर्म	लताम्	लते	लताः
तृतीया	करण	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	सम्प्रदान	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी	अपादान	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	सम्बन्ध	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	अधिकरण	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	सम्बोधन	हे लते !	हे लते !	हे लताः !

अन्य आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द लता की तरह ही चलते हैं।

जैसे—रमा, बाला, माला, कन्या, माया, प्रभा, शीला आदि।

सर्वनाम

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	सः (वह) पु०	तौ (वे दोनों) पु०	ते (वे सब) पु०
	सा (वह) स्त्री०	ते (वे दोनों) स्त्री०	ताः (वे सब) स्त्री०
म० पु०	त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)
उ० पु०	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब)

लोट् लकार (आज्ञार्थक)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष
पठतु	पठताम्	पठन्तु	प्रथम पुरुष
पठ	पठतम्	पठत	मध्यम पुरुष
पठानि	पठाव	पठाम	उत्तम पुरुष

भ्वादिगण के अन्य परस्मैपदी धातु के लोट् लकार (आज्ञार्थक) के रूप इस प्रकार बनाये जा सकते हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु०	पठ्+अतु = पठतु	पठ्+अताम् = पठताम्	पठ्+अन्तु = पठन्तु
म० पु०	पठ्+अ = पठ	पठ्+अतम् = पठतम्	पठ्+अत = पठत
उ० पु०	पठ्+आनि = पठानि	पठ्+आव = पठाव	पठ्+आम = पठाम

अध्याय- ३

फल शब्द (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	कारक	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्त्ता	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	कर्म	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	करण	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	सम्प्रदान	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पंचमी	अपादान	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	सम्बन्ध	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	अधिकरण	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	सम्बोधन	हे फल	हे फले	हे फलानि

इसी प्रकार मित्र (दोस्त), ज्ञान, पुस्तक, भवन, गृह, पुष्प, जल आदि के रूप चलते हैं।

लङ् लकार (भूतकाल)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष
अपठत्	अपठताम्	अपठन्	प्रथम पुरुष
अपठः	अपठतम्	अपठत	मध्यम पुरुष
अपठम्	अपठाव	अपठाम	उत्तम पुरुष

भ्वादिगण के अन्य परस्मैपदी धातु के लङ्लकार (भूतकाल) के रूप इस प्रकार बनाये जाते हैं—

धातु के आगे [पूर्व में] 'अ' लगाना होता है

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अ+पठ्+अत्+ = अपठत् (वह पढ़ा, उसने पढ़ा)	अ+पठ्+अताम् = अपठताम् (उन दोनों ने पढ़ा)	अ+पठ्+अन् = अपठन् (उन सबने पढ़ा)
अ+पठ्+अः = अपठः (तुमने पढ़ा)	अ+पठ्+अतम् = अपठतम् (तुम दोनों ने पढ़ा)	अ+पठ्+अत = अपठत (तुम सबने पढ़ा)
अ+पठ्+अम् = अपठम् (मैंने पढ़ा)	अ+पठ्+आव = अपठाव (हम दोनों ने पढ़ा)	अ+पठ्+आम = अपठाम (हम सबने पढ़ा)

अव्यय

सह = साथ   तूष्णीम् = चुप   चिरात् = बहुत समय तक

सदा = हमेशा   ननु = निश्चय करके   चिरेण = बहुत समय से

शनैः = धीरे	नमः = नमस्कार	चिराय = बहुत समय तक
शीघ्रम् = जल्दी	नाना = अनेक	झटिति = झट से
विना = बिना	नीचैः = नीचे	ततः = उसके बाद
श्वः = कल (आगामी)	उच्चैः = जोर से, ऊपर	अतः = इसके बाद
ह्यः = कल (बीता हुआ)	उपरि = ऊपर	ध्रुवम् = निश्चय करके
यतः = क्योंकि	उभयतः = दोनों ओर	धिक् = धिक्कार
वा = अथवा	अहर्निशम् = रात-दिन	क्व = कहाँ
यदि = अगर	आरात् = समीप, दूर	केवलम् = केवल
यत् = कि	यदा = जब	प्रातः = सुबह

प्रयोग

सदा शीघ्रं गच्छ। **श्वः** पठतु। **ह्यः** अपठत्। रामः सीता वा आगच्छतु। तूष्णीम् भव। **अहर्निशम्** पठ। **प्रातः** चलतु।

अनुवाद

(i) क्रिया की सिद्धि में सहायक को करण कहते हैं। करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे— राम कलम से लिखता है— रामः कलमेन लिखति।

(ii) सह अव्यय के रहने पर तृतीया विभक्ति होती है।

(iii) च (और) अव्यय बाद में (पीछे—एक शब्द को छोड़कर) लिखा जाता है। जैसे—रामः सीता च अगच्छताम्।

अभ्यास

१. अहम्----------------।

रिक्त स्थान की पूर्ति "धाव् धातु" लङ् लकार से करें तो निम्नांकित में सही विकल्प होगा—

(क) अधावत् (ख) धावतः

(ग) अधावम् (घ) अधावताम्

(ङ) अधावन्। ( )

२. सः लतां पुष्पाणि चिनोति।

रेखांकित शब्द में कौनसी विभक्ति एवं वचन है?

(क) प्रथमा, एकवचन (ख) प्रथमा, बहुवचन

(ग) द्वितीया, द्विवचन (घ) तृतीया, एकवचन

(ङ) द्वितीया, बहुवचन। ( )

३. जल शब्द के रूप लिखिए।

४. वद् धातु के लङ् लकार (भूतकाल) के रूप लिखिए।

५. अभवताम्, अचलः, अरक्षतम्, अत्यजम्, अगच्छाम—रूपों का पुरुष एवं वचन लिखिए।

६. श्वः, आरात्, उभयतः, ध्रुवम्, चिरेण, यत्—अव्यय शब्दों के अर्थ प्रयोग सहित लिखिए।

७. अनुवाद कीजिए—

रमेश गया। वह दोस्त के साथ आया। तुमने तलवार से रक्षा की। मैं प्रातः घूमा। तुम दोनों कल आए। हम दोनों ने झट से खाना पकाया। वे दोनों निश्चय करके वहाँ नहीं रहे। उन सभी ने केवल नमस्कार किया। मैं धीरे-धीरे गया और आया।

८. निम्न वाक्यों में रेखाङ्कित पदों की विभक्ति का कारण लिखिए—

(क) भूपतिना सह सेनापतिः गच्छति।

(ख) महेशः सुरेशाय क्रुध्यति।

(ग) स चौराद् बिभेति।

(घ) छात्राणां रामः पटुतमः।

□ □ □

अध्याय-४

कवि शब्द (इकारान्त पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कविः,	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पंचमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे	हे कवी	हे कवयः

इसी प्रकार हरि, मुनि, रवि, ऋषि आदि के रूप चलते हैं।

भानु शब्द (उकारान्त पुंल्लिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पंचमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो	हे भानू	हे भानवः

इसी प्रकार गुरु, पशु, ऋतु, विधु आदि के रूप चलते हैं।

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

एकवचन	द्विवचन	वहुवचन	पुरुष
पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति	प्रथम पुरुष
पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ	मध्यम पुरुष
पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः	उत्तम पुरुष

भ्वादिगण के कुछ धातुओं के लृट् लकार (भविष्यत् काल) के रूप इस प्रकार चलेंगे—

एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
पठ्+इष्यति = पठिष्यति (वह पढ़ेगा)	पठ्+इष्यतः = पठिष्यतः (वे दोनों पढ़ेंगे)	पठ्+इष्यन्ति = पठिष्यन्ति (वे सब पढ़ेंगे)
पठ्+इष्यसि = पठिष्यसि (तुम पढ़ोगे)	पठ्+इष्यथः = पठिष्यथः (तुम दोनों पढ़ोगे)	पठ्+इष्यथ = पठिष्यथ (तुम सब पढ़ोगे)
पठ्+इष्यामि = पठिष्यामि (मैं पढूँगा)	पठ्+इष्यावः = पठिष्यावः (हम दोनों पढ़ेंगे)	पठ्+इष्यामः = पठिष्यामः (हम सब पढ़ेंगे)

कुछ धातुओं के अन्त में स्यति आदि रूप जुड़ेंगे। जैसे—पा धातु।

पा+स्यति = पास्यति, पा+स्यतः = पास्यतः, पा+स्यन्ति = पास्यन्ति।

गम्, पा, स्था, दृश्, घ्रा आदि धातुओं के मूल रूप में (लृट् लकार में) परिवर्तन नहीं होता है।

अव्यय शब्द

सकृत् = एक वार	हि = निश्चय करके	पुनः = फिर
समम् = साथ	हे = अरे	पुरा = पहले
स्वयम् = खुद	हन्त = हर्ष, दुःख	प्रत्युत = वल्कि
सहसा = अचानक	मृषा = झूठ	मुहुः = फिर

सम्यक् = ठीक तरह	भृशम् = बहुत	मा = मत
सुष्ठु = अच्छा	भूयः = फिर	मिथ्या = झूंठ
सम्प्रति = अभी	पृथक् = अलग	अभितः = दोनों के मध्य
साम्प्रतम् = अभी	परितः = चारों ओर	अन्तरा = दोनों के मध्य
एव = ही	किल = अवश्य ही	अहो = आश्चर्य
यथा = जैसे	चिरम् = देर तक	खलु = निश्चय ही

सन्धि

सन्धि की परिभाषा—परः सन्निकर्षः संहिता।

अर्थात् वर्णों की अत्यधिक निकटता या वर्णों का एक ही श्वास में बोलना उनकी सन्धि है।

जब हम बोलते हैं तो शीघ्रतावश ध्वनियों का उच्चारण पृथक्-पृथक् रूप से नहीं होता है। सहज रूप से मिल-जुलकर एक नया उच्चारण होता है। इस मिले-जुले रूप को सन्धि रूप कहा जाता है।

दो या दो से अधिक स्वर अथवा व्यंजन मिलकर एक रूप धारण करते हैं। वह सन्धि का ही परिणाम है।

यथा—

विद्या+अर्थी = विद्यार्थी। अति+उत्तमः = अत्युत्तमः।

सत्+जनः = सज्जनः। मनस्+रथः = मनोरथः।

मुख्यतः सन्धि के तीन भेद हैं—

१. स्वर सन्धि। २. व्यञ्जन सन्धि या हल् सन्धि! ३. विसर्ग सन्धि।

स्वर सन्धि— दो या दो से अधिक स्वरों के बीच होने वाली सन्धि का नाम है।

व्यञ्जन (हल्) सन्धि— दो या दो से अधिक व्यञ्जनों अथवा हलों के मध्य होने वाली सन्धि का नाम है।

विसर्ग सन्धि— विसर्ग (:) के कारण जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहा जाता है।

स्वर सन्धि में आवश्यक सन्धियाँ ये होती हैं।

१. दीर्घ। २. गुण। ३. यण्। ४. वृद्धि। ५. अयादि। ६. पूर्वरूप। ७. पररूप।

अनुवाद

कोई क्रिया या कर्म (दानादिक) जिसके लिए किया जाता है, उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—ज्ञानाय पठति।

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के रूप उनके सामने दी गई विभक्ति में लिखिए—

(१) ऋषि (षष्ठी) ------------ ।

(२) गुरु (पंचमी) ------------ ।

(३) रवि (द्वितीया) ------------ ।

(४) विधु (सप्तमी) ------------ ।

"अगच्छत" शब्द में प्रयुक्त धातु को लृट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में लिखिए।

हरि शब्द के रूप लिखिए।

गुरु शब्द के रूप लिखिए।

हस् धातु के लृट् लकार के रूप लिखिए।

भूयः, हन्त, सकृत्, अन्तरा, मृषा, सम्यक् शब्दों के अर्थ लिखिए।

स्वर एवं व्यञ्जन सन्धि में क्या अन्तर है ?

सम्प्रदान किसे कहते हैं ?

अनुवाद कीजिए—

वह पढ़ेगा। वह कल गांव जाएगी। तुम राम के लिए बोलोगे। हम ज्ञान के लिए पुस्तक पढ़ेंगे। वे शीतल जल पीयेंगे। हम एक बार दूध पीएँगे। वह इस समय नहीं आयेगा। चारों ओर शोर हो जायगा। वे यज्ञ के लिए हव्य पकाएँगे। तुम ही नहीं, बल्कि हम सब चलेंगे। बीमार के लिए खुली हवा ठीक है। हम अभी अलग-अलग घूमेंगे।

□ □ □

अध्याय–५

मति (बुद्धि) शब्द (इकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पंचमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः

षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिसु
सम्बोधन	हे मते	हे मती	हे मतयः

इसी प्रकार रुचि, भूमि, गति, रात्रि, भक्ति आदि के रूप चलते हैं।

नदी शब्द (ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

इसी प्रकार कुमारी, देवी, भवती, यादृशी, तादृशी आदि के रूप चलते हैं।

विधिलिङ् (प्रेरणार्थक)

पढ़ना चाहिए, लिखना चाहिए आदि में सुझाव, प्रेरणा, सीख आदि की भावना है। ऐसी क्रियाओं के लिए विधिलिङ् का प्रयोग किया जाता है।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष
पठेत्	पठेताम्	पठेयुः	प्रथम पुरुष
पठेः	पठेतम्	पठेत	मध्यम पुरुष
पठेयम्	पठेव	पठेम	उत्तम पुरुष

भ्वादिगण के अन्य धातुओं के विधिलिङ् लकार के रूप इस प्रकार बनाए जा सकते हैं—

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पठ्+एत् = पठेत् (उसे पढ़ना चाहिए)	पठ्+एताम् = पठेताम् (उन दोनों को पढ़ना चाहिए)	पठ्+एयुः = पठेयुः (उन्हें पढ़ना चाहिए)
पठ्+एः = पठेः (तुम्हें पढ़ना चाहिए)	पठ्+एतम् = पठेतम् (तुम दोनों को पढ़ना चाहिए)	पठ्+एत = पठेत (तुम सभी को पढ़ना चाहिए)
पठ्+एयम् = पठेयम् (मुझे पढ़ना चाहिए)	पठ्+एव = पठेव (हम दोनों को पढ़ना चाहिए)	पठ्+एम = पठेम (हम सभी को पढ़ना चाहिए)

उपसर्ग

उपसर्ग अव्यय का एक भेद है। ये संज्ञा, विशेषण और क्रियापदों के पूर्व में जुड़ते हैं तथा उनके अर्थ में कुछ परिवर्तन करते हैं। कहीं कहीं स्वतन्त्र अर्थ भी रखते हैं। जैसे—प्र+भाव = प्रभाव = असर। प्र+माण = प्रमाण = सबूत। कुछ उपसर्ग अर्थ एवं प्रयोगों सहित दिए जा रहे हैं—

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
प्र	विशेष रूप से	प्रभाव, प्रणाम, प्रमाण, प्राचार्य, प्रभूत।
परा	पीछे, विपरीत	पराभव, पराजय।
अप	दूर, विरोध	अपमान, अपकर्ष, अपभ्रंश।
सम्	साथ, समान	समर्पण, समागत, समधिक।
अनु	पीछे, साथ-साथ	अनुगमन, अनुकरण, अनुकूल, अनुचर।
अव्	दूर, अनादर	अवगुण, अवमान, अवनति, अवधि।
निस्	बाहर, बिना	निष्काम, निष्फल, निष्पाप, निष्कपट।
निर्	बाहर, बिना	निरक्षर, निरादर, निरन्तर, निरंकुश।
दुस्	बुरा, कठिन, हीन	दुश्शासन, दुस्सह, दुस्साध्य, दुष्कर।
दुर्	बुरा, कठिन, हीन	दुराचार, दुर्गन्ध, दुराग्रह, दुर्दिन।

दीर्घ सन्धि (अकः सवर्णे दीर्घः)

अर्थात् सवर्ण अक्षरों में दीर्घ सन्धि होती है।

यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, के सामने समान स्वर आए तो उन दोनों के स्थान पर उनका दीर्घ स्वर हो जायेगा। अर्थात्—

अ+अ = आ
अ+आ = आ
आ+अ = आ
आ+आ = आ
दैत्य+अरिः = दैत्यारिः।
हिम+आलयः = हिमालयः।
विद्या+आलयः = विद्यालयः।
विद्या+अर्थी = विद्यार्थी।
भुवन+अन्तराले = भुवनान्तराले।
रत्न+आकरः = रत्नाकरः।
रचिता+अद्वितीया = रचिताद्वितीया।
विष्णु+उदयः = विष्णूदयः।
भानु+ऊष्मा = भानूष्मा।

इ+इ = ई
इ+ई = ई
ई+इ = ई
ई+ई = ई
अति+इव = अतीव।
रवि+इन्द्रः= रवीन्द्रः।
परि+ईक्षा = परीक्षा।
गिरि+ईशः = गिरीशः।
गौरी+ईशः = गौरीशः।
कवि+इन्द्रः = कवीन्द्रः।
महती+इच्छा = महतीच्छा।
नदी+ईशः = नदीशः।
पितृ+ऋणम् = पितृणम्।

वधू+उत्सवः = वधूत्सवः। होतृ+ऋकारः = होतृकारः।
गुरु+उपदेशः = गुरूपदेशः। मातृ+ऋणम् = मातृणम्।

अनुवादः

(i) जिससे कोई वस्तु आदि अलग या दूर हो, उसे अपादान कहते हैं।
(ii) अपादान में पंचमी विभक्ति होती है।
(iii) दो की तुलना में भी पंचमी विभक्ति होती है।

अभ्यास

१. असज्जनात् कस्य भयं न जायते ? रेखांकित पद में विभक्ति है—

(क) प्रथमा (ख) तृतीया
(ग) पञ्चमी (घ) द्वितीया
(ङ) सप्तमी। ( )

२. "धनात् ज्ञानं गुरुतरम्" रेखांकित में पंचमी विभक्ति का कारण है—

(क) दो पदों में दूरी (ख) अर्थ वैभिन्य
(ग) तुलना (घ) अन्तर
(ङ) अलग होना। ( )

३. भूमि शब्द के रूप लिखो।
४. देवी शब्द के रूप लिखो।
५. वद् धातु के विधिलिङ् लकार के रूप लिखिए।
६. निर्मक्षिकम्, दुःख, दुर्योग, अनुभव, दुस्त्यज, अपकार-शब्दों में उपसर्ग बताइए।
७. भानूदयः, पुस्तकालयः, गुणाकरः, होतृकारः, शब्दों में विच्छेद करते हुए सन्धि का कारण बताइए।
८. अनुवाद कीजिए—

राम को घर से जाना चाहिए। उन्हें वृक्ष से नहीं गिरना चाहिए। कुमारी को पढ़ना चाहिए। नदी में जल होना चाहिए। अभी रात्रि का प्रथम प्रहर होना चाहिए। आपको पढ़ना चाहिए। तुम सभी को बगीचे से चलना चाहिए।

९. अपादान किसे कहते हैं तथा अपादान में कौनसी विभक्ति होती है ?

□□□

अध्याय-६

पितृ (पिता) शब्द (ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पंचमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

भ्रातृ(भाई), जामातृ (जँवाई), देवृ (देवर) आदि के रूप पितृ की तरह चलेंगे।

पति (स्वामी) शब्द (इकारान्त पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पंचमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते	हे पती	हे पतयः

नरपति, श्रीपति आदि शब्द पति की तरह न चलकर कवि की तरह चलेंगे।

लभ् (पाना) आत्मनेपदी (लट् लकार)

एकवचन	द्विवचन	वहुवचन	पुरुष
लभते	लभेते	लभन्ते	प्रथम पुरुष
लभसे	लभेथे	लभध्वे	मध्यम पुरुष
लभे	लभावहे	लभामहे	उत्तम पुरुष

इस प्रकार सेव् (सेवा करना), वृध् (बढ़ाना), मुद् (प्रसन्न होना), सह् (सहना), वृत् (होना) व ईक्ष् (देखना) आदि के रूप बनेंगे।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सेव्+अते = सेवते	सेव्+एते = सेवेते	सेव्+अन्ते = सेवन्ते
(वह सेवा करता है)	(वे दोनों सेवा करते हैं)	(वे सब सेवा करते हैं)
सेव्+असे = सेवसे	सेव्+एथे = सेवेथे	सेव्+अध्वे = सेवध्वे
(तुम सेवा करते हो)	(तुम दोनों सेवा करते हो)	(तुम सब सेवा करते हो)
सेव्+ए = सेवे	सेव्+आवहे = सेवावहे	सेव्+आमहे = सेवामहे
(मैं सेवा करता हूँ)	(हम दोनों सेवा करते हैं)	(हम सब सेवा करते हैं)

उपसर्ग—

वि—अलग-अलग, विपरीत—विकल, विगत, विभिन्न, विक्रय।

आ—(आङ्)—कुछ-आख्यान, आचमन, आकर्षण, आक्रमण।

नि—नीचापन, निश्चय, समूह—निकट, नियत, निकृष्ट, निगम।

अधि—प्रधान, ऊपर, विषय से—अधिपति, अधिकार, अध्याय, अधीन।

अपि—निकट—अपिव्रत, अपिधान।

अति—अधिक, बाहर, अयोग्य—अतिमात्र, अतिरिक्त, अतीन्द्रिय।

सु—अच्छा, बिना श्रम के—सुकर, सुजन, सुग्रीव, सुलभ।

उत्—ऊपर—उत्तम, उत्तर, उत्कर्ष, उत्सव।

अभि—ओर, पक्ष, अधिक—अभिमान, अभिनन्दन, अभिनय, अभिज्ञान।

प्रति—ओर, विपक्ष, विरोध में—प्रतिकूल, प्रतिनायक, प्रतिशब्द, प्रतिलिपि।

परि—चारों ओर, विरोध में—परिचय, परिग्रह, परीक्षा।

उप—निकट, गौण—उपकार, उपरत, उपनयन, उपकरण।

उपसर्गयुक्त धातुएँ

उप+अर्ज् = उपार्जति।

प्र+इष् = प्रेषति, प्रेषते।

वि+कस् = विकसति।

अव्+लुक् = अवलोकयति, अवलोकयते।

नि+विद् = निवेदयते।

आ+ह्वे (ह्वय) = आह्वयति, आह्वयते।

उत्+डी = उड्डीयते।

सन्धि-ज्ञान

गुण सन्धि (आद्गुणः)

(i) अ अथवा आ के पश्चात् इ या ई हो तो दोनों (अ+इ) (आ+इ) को 'ए' होगा।

(ii) अ अथवा आ के बाद उ या ऊ हो तो दोनों (अ+उ) (आ+उ) को 'ओ' होगा।

(iii) इसी प्रकार अ या आ के बाद ऋ या लृ हो तो दोनों (अ+ऋ) (आ+ऋ) (अ+लृ) (आ+लृ) को क्रमशः अर् व अल् होगा। अर्थात्

अ+इ = ए	अ+उ = ओ
आ+इ = ए	आ+उ = ओ
अ+ई = ए	अ+ऊ = ओ
आ+ई = ए	आ+ऊ = ओ
अ+ऋ = अर्	अ+लृ = अल्

जैसे—

उप+इन्द्रः = उपेन्द्रः	सह+उदरः = सहोदरः	एक+ऊनम् = एकोनम्
नर+ईशः = नरेशः	अवसर+उचितम् = अवसरोचितम्	गङ्गा+उदकम् = गङ्गोदकम्
महा+ईशः = महेशः		राजा+ऋषिः = राजर्षिः
देव+ऋषिः = देवर्षिः	हित+उपदेशः = हितोपदेशः	तव+लृकारः = तवल्कारः
		महा+उत्सवः = महोत्सवः

अभ्यास

१. निम्नांकित विच्छेदयुक्त पदों में से गुणसन्धि हो सकती है—
   (क) बीजस्य+अंकुरः (ख) तदा+एव
   (ग) हरे+अत्र (घ) गंगा+उदकम्। ( )

२. धातु के साथ उपसर्गों के प्रयोग से अर्थ में जो परिवर्तन आया है, उसे लिखिए—
   (क) सम्+भवति -------------------।
   (ख) अनु+भवति -------------------।
   (ग) वदति -------------------।
   (घ) अनु+वदति -------------------।
   (ङ) गच्छति -------------------।
   (च) आ+गच्छति -------------------।

३. श्रीपति शब्द के रूप लिखिए

४. जामातृ शब्द के रूप लिखिए

५. मुद् (मोद्) धातु के लट् लकार के रूप लिखिए।

६. निकट, अध्याय, अतिरिक्त, उपकार, सुग्रीव शब्दों में उपसर्ग बताइए।

७. श्वासोच्छ्वासः, ब्रह्मर्षिः, देवेन्द्रः, परोपकारः इनमें विग्रह सहित सन्धि बताइये।

८. अनुवाद कीजिए—
   राम सेवा करता है। वे देखते हैं (ईक्ष्)। हम आगे बढ़ते हैं। तुम पुस्तकें प्राप्त करते हो। हम दोनों बहुत कष्ट सहते हैं। छात्र पुरस्कार पाते हैं।

९. निम्नांकित उपसर्गों से शब्द निर्माण कीजिए :—
   अति, प्रति, उप, उत्, परि।

□ □ □

अध्याय-७

मातृ (माता) शब्द (ऋकारान्त स्त्रीलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातृः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः	हे मातरौ	हे मातरः

इसी प्रकार यातृ (देवरानी), ननान्द्ृ (ननद), दुहितृ (लड़की) आदि के रूप बनेंगे।

स्वसृ (बहिन) शब्द (ऋकारान्त स्त्रीलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसृः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
चतुर्थी	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
पंचमी	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
षष्ठी	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसृणाम्
सप्तमी	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सम्बोधन	हे स्वसः	हे स्वसारौ	हे स्वसारः

सेव् धातु (आत्मनेपदी) लोट् लकार (आज्ञार्थक)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष
सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्	प्रथम पुरुष
सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्	मध्यम पुरुष
सेवै	सेवावहै	सेवामहै	उत्तम पुरुष

इसी प्रकार अन्य आत्मनेपदी धातुओं के रूप भी चलेंगे। लोट्लकार के रूप इस तरह बनाये जा सकते हैं—(लभ् = पाना)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लभ्+अताम् = लभताम् (वह पाए)	लभ्+एताम् = लभेताम् (वे दोनों पाएँ)	लभ्+अन्ताम् = लभन्ताम (वे सब पाएँ)

लभ्+अस्व = लभस्व (तुम पाओ)	लभ्+एथाम् = लभेथाम् (तुम दोनों पाओ)	लभ्+अध्वम् = लभध्वम् (तुम सभी पाओ)
लभ्+ऐ = लभै (मैं पाऊँ)	लभ्+आवहै = लभावहै (हम दोनों पाएँ)	लभ्+आमहै = लभामहै (हम सभी पाएँ)

सन्धि-ज्ञान (वृद्धि सन्धि) वृद्धिरेचि

'अ' से परे एच् (अर्थात् ए अथवा ओ व ऐ तथा औ) हो तो वृद्धि सन्धि होती है।

अर्थात् अ या आ से परे ए, ऐ होने पर ऐ होगा।

अ या आ से परे ओ अथवा औ होने पर औ होगा।

अ+ए = ऐ	अ+ओ = औ
आ+ए = ऐ	आ+ओ = औ
अ+ऐ = ऐ	अ+औ = औ
आ+ऐ = ऐ	आ+औ = औ

यथा—

अत्र+एकः = अत्रैकः	जन+एकता = जनैकता	महा+औदार्यम् =महौदार्यम्
सा+एषा = सैषा	दिव्य+ओषधिः = दिव्यौषधिः	दिव्य+औषधम् = दिव्यौषधम्
का+एषा = कैषा	महा+ओजस्वी = महौजस्वी	एका+एव = एकैव
सदा+एव = सदैव	तण्डुल+ओदनम् = तण्डुलौदनम्	जन+औचित्यम् = जनौचित्यम्

समास की परिभाषा

एक से अधिक पदों के मिलकर एक होने को समास कहते हैं। समास में दो या दो से अधिक पदों का मेल होता है। प्रत्येक पद का स्वतन्त्र अर्थ होता है, किन्तु पदों का सामूहिक रूप अर्थ रखता है। समास वाला पद समस्त पद कहलाता है। समस्त पद को विभक्ति सहित पृथक्-पृथक् करने को विग्रह कहा जाता है।

समास के भेद

ये छह होते हैं—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि एवं द्वन्द्व।

अव्ययीभाव समास

जिस समास का पूर्व पद अव्यय रहता है, उसे अव्ययीभाव कहते हैं। अव्यय के साथ जो समास बनता है, वह भी अव्ययीभाव होता है। अव्ययीभाव समास का पहला पद अव्यय और दूसरा संज्ञा रहता है। जैसे—

समस्तपद	विग्रह	अव्यय शब्द
प्रतिदिनम्	दिन-दिन	प्रति (प्रत्येक का अर्थ)
अनुरूपम्	रूप के अनुसार	अनु (रूप के योग्य)

उपकूलम्	कूल के समीप	उप (सामीप्य)
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	यथा (अनुसार)
आसमुद्रम्	समुद्र तक	आङ् (आ) (पर्यन्त)
अतिवसन्तम्	वसन्त के बीत जाने पर,	अति (बीतने पर)
निर्जनम्	जन का अभाव	निर् (अभाव)

अनुवाद

(i) सम्बन्ध कारक में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- राम का पुत्र = रामस्य पुत्रः। दो नदियों का जल = नद्योः जलम्। माताओं का सम्मेलन = मातॄणां सम्मेलनम्।

अभ्यास

१. "गङ्गैषा" का सन्धि विच्छेद होगा—

(क) गङ्गा+एषा (ख) गङ्ग+ऐषा

(ग) गङ्गे+षा (घ) गङ्गे+ऐषा

(ङ) गंग+ईषा। ( )

२. वृद्धिसन्धि का उदाहरण है :—

(क) सुध्युपास्यः।

(ख) परोपकारः।

(ग) कपीशः।

(घ) सदैव। ( )

३. दुहितृ शब्द के रूप लिखिए।

४. वर्धन्ताम्, मोदामहै, लभेथाम्, सेवस्व, वर्तै—इनके मूल धातु, लकार, पुरुष एवं वचन बताइए।

५. एकदा+एव, मानव+ऐक्यम्, मधुर+ओषधिः, तथा+एव—इनमें सन्धि कीजिए।

६. अनु, यथा, अति, निर् अव्ययों को प्रयुक्त कर शब्द बनाइए।

७. प्रतिवासरम्, उपकूपम्, अतिग्रीष्मः, निर्मक्षिकम्- पदों का हिन्दी में विग्रह कीजिए।

८. अनुवाद कीजिए—

वह समुद्र तक हो। हम राम के पुत्र प्रसन्न हों। तुम अपनी माता की सेवा करो। वे मधुर औषधि का सेवन करें। तुम दोनों संस्कृत की पुस्तकें पढ़ो। सीता अपनी ननद की सेवा करे।

९. सम्बन्ध कारक किसे कहते हैं? सोदाहरण लिखिए।

□□□

अध्याय-८

सखि (मित्र) शब्द (पुंल्लिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखाय:
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभि:
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्य:
पंचमी	सख्यु:	सखिभ्याम्	सखिभ्य:
षष्ठी	सख्यु:	सख्यो:	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्यो:	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे	हे सखायौ	हे सखाय:

सुधी (विद्वान्) शब्द (पुंल्लिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	सुधी:	सुधियौ	सुधिय:
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधिय:
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभि:
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधिभ्य:
पंचमी	सुधिय:	सुधीभ्याम्	सुधिभ्य:
षष्ठी	सुधिय:	सुधियो:	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियो:	सुधीषु
सम्बोधन	हे सुधी:	हे सुधियौ	हे सुधिय:

सेव् धातु (आत्मनेपदी) लङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	असेवथा:	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

इस प्रकार अन्य आत्मनेपदी धातुओं के लङ् लकार के रूप वनाए जा सकते हैं। जैसे- शुभ् = शोभा पाना (लङ् लकार में धातु के पूर्व 'अ' लगाना होगा।)

एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
अ+शोभ्+अत = अशोभत	अशोभ्+एताम् = अशोभेताम्	अशोभ्+अन्त = अशोभन्त
(वह शोभित हुए)	(वे दो शोभित हुए)	(वे शोभित हुए)

अशोभ्+अथाः = अशोभथाः	अशोभ्+एथाम् = अशोभेथाम्	अशोभ्+अध्वम् = अशोभध्वम्
(तुम शोभित हुए)	(तुम दो शोभित हुए)	(तुम सभी शोभित हुए)
अशोभ्+ए = अशोभे	अशोभ्+आवहि = अशोभावहि	अशोभ्+आमहि = अशोभामहि
(मैं शोभित हुआ)	(हम दो शोभित हुए)	(हम सभी शोभित हुए)

सन्धि-ज्ञान

यण् सन्धि (इको यणचि)

इक् के स्थान पर यण् होता है, यदि अच् परे हो। अर्थात् इक् (इ, उ, ऋ, तथा लृ) के स्थान पर क्रमशः यण् (य्, व्, र् तथा ल्) होता है, आगे अच् (स्वर) के होने पर।

इ = य्	अच्	
उ = व्	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ	दीर्घ सन्धि के
ऋ = र्	ऋ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ	क्षेत्र को छोड़कर
लृ = ल्	के रहने पर	

जैसे—

इति+अत्र = इत्यत्र	अनु+अयः = अन्वयः	पितृ+ए = पित्रे
इति+आदि = इत्यादि	सु+आगतम् = स्वागतम्	धातृ+अंश = धात्रंशः
इति+अलम् = इत्यलम्	मधु+अरिः = मध्वरिः	मातृ+आदेशः = मात्रादेशः
यदि+अपि = यद्यपि	चमू+अध्यक्षः = चम्वध्यक्षः	लृ+आकृतिः = लाकृतिः

तत्पुरुष समास

जिस समास में दूसरा पद प्रधान हो और पहले पद के बाद कारक के चिह्न का लोप हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। प्रथम पद द्वितीया, तृतीया आदि विभक्ति वाला होता है, जबकि उत्तर पद प्रथमा विभक्ति से युक्त होता है। जैसे— कूपम्+पतितः = कूपपतितः। यहाँ पूर्वपद 'कूपम्' में द्वितीया विभक्ति है और उत्तर पद प्रथमा विभक्ति से युक्त है।

तत्पुरुष के भेद

द्वितीया तत्पुरुष, तृतीया तत्पुरुष, चतुर्थी तत्पुरुष, पंचमी तत्पुरुष, षष्ठी तत्पुरुष और सप्तमी तत्पुरुष—इस प्रकार छह भेद होते हैं।

समास में जिस विभक्ति के चिह्न का लोप होता है, वह उसी विभक्ति से युक्त समास कहलाता है। जैसे—

द्वितीया तत्पुरुष— ग्रामगतः - ग्रामं गतः = ग्राम को गया हुआ।
कृष्णश्रितः - कृष्णं श्रितः = कृष्ण को चाहता हुआ।
सुखापन्नः—सुखं आपन्नः = सुख को प्राप्त हुआ।

तृतीया तत्पुरुष— प्रकाशयुक्तः—प्रकाशेन युक्तः = प्रकाश से युक्त।
व्याघ्रहतः—व्याघ्रेण हतः = व्याघ्र से हत (मारा हुआ)।
भासरचितः—भासेन रचितः = भास के द्वारा रचा हुआ।

चतुर्थी तत्पुरुष— विप्रदानम्—विप्राय दानम् = विप्र को दान।
अलंकारस्वर्णम्—अलंकाराय स्वर्णम् = अलंकार के लिए स्वर्ण।
हस्तलेपः—हस्ताय लेपः = हस्त (हाथ) के लिए लेप।

पंचमी तत्पुरुष— वृक्षपतितः—वृक्षात् पतितः = वृक्ष से गिरा हुआ।
भयभीतः—भयात् भीतः = भय से डरा हुआ।
संसारमुक्तः—संसारात् मुक्तः = संसार से मुक्त।

षष्ठी तत्पुरुष— ऋषिकन्या—ऋषेः कन्या = ऋषि की कन्या।
दासीपुत्रः—दास्याः पुत्रः = दासी का पुत्र।
नन्दगृहम्—नन्दस्य गृहम् = नन्द का घर।

सप्तमी तत्पुरुष— आनन्दमग्नः—आनन्दे मग्नः = आनन्द में मग्न।
युद्धवीरः—युद्धे वीरः = युद्ध में वीर।
मुनिश्रेष्ठः—मुनिषु श्रेष्ठः = मुनियों में श्रेष्ठ।

अनुवाद

(i) किसी क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं।

(ii) अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे— उद्याने वृक्षाः। कक्षायां छात्राः। स्थाल्यां ओदनम्।

अभ्यास

१. यण् सन्धियुक्त पद है :—

(क) स्वानुभवः। (ख) स्वादिष्टम्।
(ग) स्वागतम्। (घ) स्वाधीनम्। ( )

२. "देवमन्दिरम्" पद का विग्रह होगा—

(क) देव मन्दिरम् (ख) देवात् मन्दिरम्
(ग) देवस्य मन्दिरम् (घ) देवम् मन्दिरम्
(ङ) देवः मन्दिरम्। ( )

३. वृक्षपतितः में समास है—

(क) षष्ठी तत्पुरुष (ख) पञ्चमी तत्पुरुष
(ग) द्वितीया तत्पुरुष (घ) तृतीया तत्पुरुष
(ङ) चतुर्थी तत्पुरुष। ( )

४. मुद् धातु लङ् लकार के रूप लिखो।

५. सन्धि-विच्छेद कीजिए—इत्यहंकारः, वध्वागमनम्, पित्रंशः, इत्यपि।

६. विग्रह कीजिए एवं विभक्ति का नाम लिखिये—(हिन्दी में)
हरित्रातः, कालिदासरचितः, भूतबलिः, दानवीरः, सुखापन्नः।

७. अनुवाद कीजिए—
वृक्ष पर फूल शोभित हो रहे थे। घर में सभी प्रसन्न थे। गिलास में जल था। पाप से डरा हुआ कभी नहीं आता है। वह कक्षा में पुस्तक माँगता था। मैंने शहर में उन दोनों की सेवा की। तुम घोड़े पर शोभित हो रहे थे।
८. तत्पुरुष समास की परिभाषा भेदपूर्वक लिखिए।

□ □ □

अध्याय-९

धेनु (गाय) शब्द (उकारान्त स्त्रीलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेनवे, धेन्वै	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पंचमी	धेनोः, धेन्वाः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेनोः, धेन्वाः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ, धेन्वाम्	धेन्वोः	धेनुपु
सम्बोधन	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

आत्मन् (आत्म) शब्द (अन्नन्त पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पंचमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः

सेव् धातु (आत्मनेपदी) लृट् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

इस प्रकार आत्मनेपदी धातुओं के लृट्लकार के रूप वनाए जा सकते हैं—

शिक्ष् = शिक्षा पाना

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
शिक्ष्+इष्यते = शिक्षिष्यते (वह शिक्षा पाएगा)	शिक्ष्+इष्येते = शिक्षिष्येते (वे दोनों शिक्षा पाएँगे)	शिक्ष्+इष्यन्ते = शिक्षिष्यन्ते (वे सब शिक्षा पाएँगे)
शिक्ष्+इष्यसे = शिक्षिष्यसे (तुम शिक्षा पाओगे)	शिक्ष्+इष्येथे = शिक्षिष्येथे (तुम दोनों शिक्षा पाओगे)	शिक्ष्+इष्यध्वे = शिक्षिष्यध्वे (तुम सब शिक्षा पाओगे)
शिक्ष्+इष्ये = शिक्षिष्ये (मैं शिक्षा पाऊँगा)	शिक्ष्+इष्यावहे = शिक्षिष्यावहे (हम दो शिक्षा पायेंगे)	शिक्ष्+इष्यामहे = शिक्षिष्यामहे (हम सब शिक्षा पायेंगे)

सन्धि ज्ञान

अयादि सन्धि (एचोऽयवायाव:)

एच् के स्थान पर क्रमशः अयादि होते हैं अच् परे हो तो। अर्थात्—

ए को अय्   अच् परे रहने पर
ऐ को आय्
ओ को अव्
औ को आव्

यथा—

ने+अनम् = नयनम्	पो+अन: = पवन:
कवे+ए = कवये	भो+अनम् = भवनम्
नै+अक: = नायक:	गै+अक: = गायक:
पौ+अन: = पावन:	नौ+इक: = नाविक:

समास-ज्ञान

कर्मधारय समास

जिस समास में समस्त शब्द के खण्ड (पद) विशेष्य-विशेषण या उपमान-उपमेय होते हैं, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। इसमें पूर्वपद विशेषण रहता है। कभी-कभी दोनों पद विशेषण या संज्ञा रहते हैं, तो कभी उत्तर पद भी विशेषण होता है। जैसे—

नीलकमलम्— नीलं कमलम् (नीला कमल) पूर्वपद विशेषण।

सुन्दरनर:—सुन्दर: नर: = सुन्दरनर: (सुन्दर नर)

युवापलितः—युवा पलितः इति = युवापलितः (वह युवा जिसके बाल पके हैं) पूर्वपद विशेष्य।

नीलपीतः—नीलश्चासौ पीतश्च इति—नीलपीतः (कुछ नीला कुछ पीला) दो पद विशेषण।

घनश्यामः—घन इव श्यामः—घनश्यामः (घन की तरह श्याम) पूर्वपद उपमान

मुखकमलम्— मुखकमलम् इव (मुख कमल सा) उत्तरपद उपमान।

तत्पुरुष (नञ् तत्पुरुष)

पूर्व अध्याय में तत्पुरुष समास के बारे में विभक्ति-समास को समझा। इसका नञ् तत्पु भी एक भेद है।

इसमें समस्त पद का पूर्वपद 'नञ्' होता है। 'यह 'न' नञ् का संक्षिप्त रूप समास होने पर 'न' का संक्षिप्त रूप 'अ' रहता है। जैसे—नञ्+समर्थः, न+समर्थः असमर्थः।

अप्रियम्—न+प्रियम् = अप्रियम् (न+प्रिय) = प्रिय नहीं।

अशान्तिः—न+शान्तिः = अशान्तिः (न+शान्ति) = शांति नहीं।

अनुपस्थितिः—न+उपस्थितिः = अनुपस्थितिः (न+उपस्थिति) उपस्थिति नहीं।

असत्यम्—न+सत्यम् = असत्यम् (न+सत्य) = सत्य नहीं।

अस्वस्थः—न+स्वस्थः = अस्वस्थः (न+स्वस्थ) = स्वस्थ नहीं।

अशक्तः—न+शक्तः = अशक्तः (न+शक्त) = शक्त नहीं।

असुन्दरः—न+सुन्दरः = असुन्दरः = (न+सुन्दर) सुन्दर नहीं।

।८ (सम्बोधन)

सम्बोधन में सम्बोधन विभक्ति होती है। जैसे—अरे राम = (हे राम!) अरे कृ (हे कृष्ण!)

हे, भो, रे आदि सम्बोधन सूचक शब्दों के रहने पर सम्बोधन होता है। हे रा हे रामौ! हे रामाः!

अभ्यास

१. अयादि सन्धि कीजिए -

गै+अकः, हरे+ए, विष्णो+ए. पौ+अकः।

२. विग्रह कीजिए (समास के नाम के साथ)—

अनुत्तीर्णः, अहितम्, अनौचित्यम्, अन्यायः, अलौकिकम्।

३. समस्त पद बनाइए—

उत्तमा+विद्या, गम्भीरः+कूपः, दुःखम् इव सागरः, सुन्दरी+नारी।

४. अनुवाद कीजिए—

वह सेवा करेगा। वे दोनों शोभित होंगे। वे सब शिक्षा पायेंगे। तुम धन की या करोगे। तुम दोनों माता की सेवा करोगे। वे गाँव आज ही जायेंगे। वे व्यर्थ घूमेंगे। हम दोनों कहानी की पुस्तक पढ़ेंगे। वह क्रिकेट का मैच देखेगा।

अध्याय-१०

विद्वस् (विद्वान्) शब्द (असन्त पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पंचमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः

शशिन् (चन्द्रमा) शब्द (असन्त पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	शशी	शशिनौ	शशिनः
द्वितीया	शशिनम्	शशिनौ	शशिनः
तृतीया	शशिना	शशिभ्याम्	शशिभिः
चतुर्थी	शशिने	शशिभ्याम्	शशिभ्यः
पंचमी	शशिनः	शशिभ्याम्	शशिभ्यः
षष्ठी	शशिनः	शशिनोः	शशिनाम्
सप्तमी	शशिनि	शशिनोः	शशिषु
सम्बोधन	हे शशिन्	हे शशिनौ	हे शशिनः

शशिन् शब्द की तरह, विद्यार्थिन्, योगिन्, गुणिन्, करिन् आदि के रूप चलते हैं।

भू धातु (लुङ्) परस्मैपदी

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
मध्यम पुरुष	अभूः	अभूतम्	अभूत
उत्तम पुरुष	अभूवम्	अभूव	अभूम

इसी प्रकार अन्य धातुओं के लङ् लकार के रूप बनाये जा सकते हैं।

पठ् = पढ़ना।

धातु के पूर्व 'अ' जुड़ता है।

पठ्+ईत् = अपठीत् (उसने पढ़ा) पठ्+इष्टाम् = अपठिष्टाम् (उन दोनों ने पढ़ा) पठ्+इषु = अपठिषुः (उन्होंने पढ़ा)

युवापलितः—युवा पलितः इति = युवापलितः (वह युवा जिसके बाल पके हुए हैं) पूर्वपद विशेष्य।

नीलपीतः—नीलश्चासौ पीतश्च इति—नीलपीतः (कुछ नीला कुछ पीला) दोनों पद विशेषण।

घनश्यामः—घन इव श्यामः—घनश्यामः (घन की तरह श्याम) पूर्वपद उपमान।

मुखकमलम्— मुखकमलम् इव (मुख कमल सा) उत्तरपद उपमान।

तत्पुरुष (नञ् तत्पुरुष)

पूर्व अध्याय में तत्पुरुष समास के बारे में विभक्ति-समास को समझा। इसका नञ् तत्पुरुष भी एक भेद है।

इसमें समस्त पद का पूर्वपद 'नञ्' होता है। 'यह 'न' नञ् का संक्षिप्त रूप है। समास होने पर 'न' का संक्षिप्त रूप 'अ' रहता है। जैसे—नञ्+समर्थः, न+समर्थः = असमर्थः।

अप्रियम्—न+प्रियम् = अप्रियम् (न+प्रिय) = प्रिय नहीं।

अशान्तिः—न+शान्तिः = अशान्तिः (न+शान्ति) = शांति नहीं।

अनुपस्थितिः—न+उपस्थितिः = अनुपस्थितिः (न+उपस्थिति) उपस्थिति नहीं।

असत्यम्—न+सत्यम् = असत्यम् (न+सत्य) = सत्य नहीं।

अस्वस्थः—न+स्वस्थः = अस्वस्थः (न+स्वस्थ) = स्वस्थ नहीं।

अशक्तः—न+शक्तः = अशक्तः (न+शक्त) = शक्त नहीं।

असुन्दरः—न+सुन्दरः = असुन्दरः = (न+सुन्दर) सुन्दर नहीं।

अ[illegible] (सम्बोधन)

सम्बोधन में सम्बोधन विभक्ति होती है। जैसे—अरे राम = (हे राम!) अरे कृष्ण (हे कृष्ण!)

हे, भो, रे आदि सम्बोधन सूचक शब्दों के रहने पर सम्बोधन होता है। हे राम! हे रामौ! हे रामाः!

अभ्यास

१. अयादि सन्धि कीजिए-

गै+अकः, हरे+ए, विष्णो+ए, पौ+अकः।

२. विग्रह कीजिए (समास के नाम के साथ)—

अनुत्तीर्णः, अहितम्, अनौचित्यम्, अन्यायः, अलौकिकम्।

३. समस्त पद बनाइए—

उत्तमा+विद्या, गम्भीरः+कूपः, दुःखम् इव सागरः, सुन्दरी+नारी।

४. अनुवाद कीजिए—

वह सेवा करेगा। वे दोनों शोभित होंगे। वे सब शिक्षा पायेंगे। तुम धन की याचना करोगे। तुम दोनों माता की सेवा करोगे। वे गाँव आज ही जायेंगे। वे व्यर्थ नहीं घूमेंगे। हम दोनों कहानी की पुस्तक पढ़ेंगे। वह क्रिकेट का मैच देखेगा।

□□□

अध्याय-१०

विद्वस् (विद्वान्) शव्द (असन्त पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पंचमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः

शशिन् (चन्द्रमा) शव्द (असन्त पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	शशी	शशिनौ	शशिनः
द्वितीया	शशिनम्	शशिनौ	शशिनः
तृतीया	शशिना	शशिभ्याम्	शशिभिः
चतुर्थी	शशिने	शशिभ्याम्	शशिभ्यः
पंचमी	शशिनः	शशिभ्याम्	शशिभ्यः
षष्ठी	शशिनः	शशिनोः	शशिनाम्
सप्तमी	शशिनि	शशिनोः	शशिषु
सम्बोधन	हे शशिन्	हे शशिनौ	हे शशिनः

शशिन् शब्द की तरह, विद्यार्थिन्, योगिन्, गुणिन्, करिन् आदि के रूप चलते हैं।

भू धातु (लुङ्) परस्मैपदी

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
मध्यम पुरुष	अभूः	अभूतम्	अभूत
उत्तम पुरुष	अभूवम्	अभूव	अभूम

इसी प्रकार अन्य धातुओं के लङ् लकार के रूप बनाये जा सकते हैं।

पठ् = पढ़ना।

धातु के पूर्व 'अ' जुड़ता है।

पठ्+ईत् = अपठीत् (उसने पढ़ा) पठ्+इष्टाम् = अपठिष्टाम् (उन दोनों ने पढ़ा) पठ्+इषु = अपठिषुः (उन्होंने पढ़ा)

पठ्+ईः = अपठीः (तूने पढ़ा) | पठ्+इष्टम् = अपठिष्टम् (तुम दोनों ने पढ़ा) | पठ्+इष्ट = अपठिष्ट (तुमने पढ़ा)

पठ्+इषम् = अपठिषम् (मैंने पढ़ा) | पठ्+इष्व = अपठिष्व (हम दोनों ने पढ़ा) | पठ्+इष्म = अपठिष्म (हमने पढ़ा)

सेव् धातु (विधिलिङ्) आत्मनेपदी

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुष	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

इसी प्रकार अन्य आत्मनेपदी धातुओं के विधिलिङ् लकार के रूप बनाए जा हैं।

लभ् = पाना

लभ्+एत = लभेत (उसे पाना चाहिए)	लभ्+एयाताम् = लभेयाताम् (उन दोनों को पाना चाहिए)	लभ्+एरन् = लभेरन् (उन्हें पाना चाहिए)
लभ्+एथाः = लभेथाः (तुम्हें पाना चाहिए)	लभ्+एयाथाम् = लभेयाथाम् (तुम दोनों को पाना चाहिए)	लभ्+एध्वम् = लभेध्वम् (तुम सभी को पाना चाहिए)
लभ्+एय = लभेय (मुझे पाना चाहिए)	लभ्+एवहि = लभेवहि (हम दोनों को पाना चाहिए)	लभ्+एमहि = लभेमहि (हमें पाना चाहिए)

लुङ् लकार (सामान्यभूत) का सामान्य ज्ञान ऐसा कार्य जो बहुत ही हाल में (जैसे आज ही) हुआ हो अथवा अनिश्चित अतीतकाल का बोध कराने के अतिरिक्त नैरन्तर्य (Continuousness) का भी बोध कराता है। यथा— याचकेभ्यः यावज्जीवमन्नमदात् (न कि अददात्)। उसने जिन्दगी भर याचकों को भोजन दिया अर्थात् भोजन देना जिन्दगी भर जारी रक्खा।

सेव् (सेवा करना) लुङ् लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असेविष्ट	असेविषाताम्	असेविषत
मध्यम पुरुष	असेविष्टाः	असेविषाथाम्	असेविध्वम्
उत्तम पुरुष	असेविषि	असेविष्वहि	असेविष्महि

पूर्वरूप (एङः पदान्तादति)

पद के अन्त में एङ् [ए, ओ] हो और एङ् [ए, ओ] से 'अ' परे हो तो पूर्वरूप एकादेश होता है।

अर्थात् पद (सुबन्त या तिङन्त) के अन्तिम ए या ओ के बाद 'अ' हो तो उसको पूर्वरूप (अर्थात् ए या ओ जैसा रूप) हो जाता है। यथा :

लोके+अस्मिन् = लोकेऽस्मिन्   लोको+अयम् = लोकोऽयम्

गृहे+अस्ति = गृहेऽस्ति विष्णो+अत्र = विष्णोऽत्र

यज्ञे+अग्नि: = यज्ञेऽग्नि: संसारे+अस्मिन् = संसारेऽस्मिन्

पररूप (एङि पररूपम्)

उपसर्ग के परे एङादि धातु होने से पररूप एकादेश होता है।

अर्थात् अकारान्त उपसर्ग के पश्चात् धातु का प्रथम अक्षर ए या ओ हो तो दोनों स्थानों पर पररूप ए या ओ जैसा रूप हो जाता है। जैसे—

प्र+एजते = प्रेजते उप+ओषति = उपोषति

समास ज्ञान

द्विगु समास

जिस समस्त पद में पूर्व पद संख्यावाचक शब्द होता है—वह द्विगु समास कहलाता है। (द्विगु: संख्यावाचक:) समाहार (समूह) बताने, उत्तरपद के संयोजन करने तथा तद्धित प्रत्यय जोड़ने के लिए द्विगु समास किया जाता है। जैसे—

सप्तर्षि:—सप्तानां ऋषीणां समाहार:—सप्तर्षि: (सात ऋषियों का समूह)।

पञ्चग्रामम्—पञ्चानां ग्रामाणां समाहार:—पञ्चग्रामम् (पाँच ग्रामों का समूह)।

त्रिदिनम्—त्रयाणाम् दिनानां समाहार:—त्रिदिनम् (तीनों दिनों का समूह)।

चतुर्द्वार:—चतुर्णाम् द्वाराणां समाहार:—चतुर्द्वार: (चार दरवाजों का समूह)।

द्वैमातुर:—द्वयो: मात्रो अपत्यम् पुमान्—द्वैमातुर: (दो माताओं का पुत्र)

(यहाँ अण् (तद्धित) प्रत्यय है।)

त्रैमातुर:—तिसृणां मातृणां अपत्यं पुमान्—त्रैमातुर: (तीन माताओं का पुत्र)।

यहाँ अण् (तद्धित) प्रत्यय है।

कारक ज्ञान (कर्म)

(i) कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

(ii) अभित:, परित:, सर्वत: के साथ द्वितीया विभक्ति होती है।

(iii) समया, निकषा, हा, प्रति, धिक्, उपर्युपरि, अधोऽध: के साथ द्वितीया विभक्ति होती है।

(iv) गत्यर्थक धातुओं के साथ द्वितीया विभक्ति होती है।

(v) अन्तरा, अन्तरेण, विना के साथ द्वितीया विभक्ति होती है।

(vi) अनु, उप, अति, अभि— उपसर्गो के साथ द्वितीया विभक्ति होती है।

(vii) समयवाचक, मार्ग के दूरवाचक शब्दों के साथ द्वितीया विभक्ति होती है।

(viii) दुह् (दुहना), याच् (मांगना), पच् (पकाना), दण्ड् (सजा देना), रुध् (रोकना), प्रच्छ् (पूछना), चि (चुनना), जि (जीतना), मथ् (मथना),

मुष् (चुराना), ब्रू (बोलना), शास् (शासन करना), नी (ले जाना), हृ (छीनना), कृष् (खेती करना), वह् (ढोना),—इन धातुओं के साथ द्वितीया विभक्ति होती है।

उदाहरण

नगरं अभितः परिखा। सरोवरं परितः भवनानि। प्रासादं सर्वतः उद्यानानि। ग्रामं समया निकषा वापी। हा दुःखम्। अर्थातुरं न प्रतिभाति किञ्चित्। राममुभयतो वानराः। धिक् पापिनम्। गत्यर्थक धातु— उद्यानं विचरति। नगरं गच्छति। निद्रां ययौ। ज्ञानमन्तरेण सर्वं शून्यम्। धनम् विना शून्यं जीवनम्। कौशल्यां सुमित्रां अन्तरा कैकयी।

मासं पठति। क्रोशं गच्छति।

गोपः गां दोग्धि।

पुत्रः पितरम् धनं याचते।

तण्डुलान् ओदनं पचति।

न्यायाधीशः शतं दण्डयति।

कृषकः पन्थानं पृच्छति।

लतां पुष्पाणि चिनोति।

मोहनं धर्मम् ब्रूते।

राजा प्रजाः शास्ति।

शतं जयति देवदत्तम्।

राधा दधि मथ्नाति।

श्रेष्ठिनं धनं मुष्णाति।

अजां ग्रामं नयति, हरति, वहति।

कृषकः क्षेत्रं कर्षति।

अभ्यास

६. "त्रिभुवनम्" शब्द का विग्रह है—

(क) त्रि भुवनानां समाहारः।

(ख) त्रिभुवनानां समाहारः।

(ग) त्रयः भुवनानां समाहारः।

(घ) त्रयाणां भुवनानां समाहारः।

(ङ) त्रीणि भुवनानां समाहारः। ( )

७. योगिन् शब्द के रूप लिखो।

सेवेध्वम्, लभेमहि, शोभेय, मोदेरन्—इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

पूर्वरूप एवं पररूप सन्धि का अन्तर बताइए।

पञ्चवटी, पञ्चपात्रम्, नवग्रहम्, त्रिपुत्रम्—का विग्रह सहित समास बताइए।

६. निम्नलिखित वाक्यों में द्वितीया विभक्ति का कारण बताइए—
नेतारं सर्वतो जना:। बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित्। ग्रामं समया विद्यालय:। धिक् कृपणम्। श्रमं विना न सिद्धि:। अध्यापक: छात्रान् दण्डयति।

७. अनुवाद कीजिए—
उसे पिता की सेवा करनी चाहिए। उन दोनों को शिक्षा पानी चाहिए। उन्हें इनाम पाना चाहिए। तुम्हें अपना हक माँगना चाहिए। तुम सभी को यहाँ होना चाहिए। मुझे यह पुस्तक देखनी चाहिए। शहर के दोनों ओर नदी है। स्कूल के चारों ओर बगीचा है। वैज्ञानिक आकाश की ओर देखता है। वह उसके पीछे दौड़ता है।

□□□

अध्याय-११

सर्वनाम शब्द

सर्व (सब) शब्द पुंल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व:	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्यां	सर्वै:
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्यां	सर्वेभ्य:
पंचमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्यां	सर्वेभ्य:
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयो:	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयो:	सर्वेषु

सर्वा (सब) शब्द स्त्रीलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वा:
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वा:
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभि:
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्य:

पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

सर्व (सब) शब्द नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

शेष रूप पुंल्लिङ्ग के तुल्य

तत् (वह) शब्द पुंल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेपाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तत् (वह) शब्द स्त्रीलिंग   तत् (वह) शब्द नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः	तत्	ते	तानि
द्वितीया	ताम्	ते	ताः	तत्	ते	तानि
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः	(शेष पुंल्लिंग की तरह)		
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः	(तीनों लिंगों में सम्बोधन		
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः	विभक्ति नहीं होती है।)		
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्			
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु			

इस प्रकार यत् (जो) शब्द के रूप चलते हैं।

किम् (कौन) शब्द पुंल्लिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः

चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् (कौन) शब्द स्त्रीलिंग — किम् (कौन) शब्द नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः	किम्	के	कानि
द्वितीया	काम्	के	काः	किम्	के	कानि
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः	(शेष पुंल्लिंग की तरह)		
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः	(तीनों लिङ्गों में सम्बोधन		
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः	विभक्ति नहीं होती है।)		
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्			
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु			

एतद् (यह) शब्द पुंल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

एतद् शब्द (स्त्रीलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

एतद् शब्द (नपुंसकलिङ्ग)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतद्	एते	एतानि
द्वितीया	एतद्	एते	एतानि

(शेष पुंल्लिङ्ग की तरह)

इदम् (यह) शब्द

	पुंल्लिङ्ग			स्त्रीलिंग		
विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु	अस्याम्	अनयोः	आसु

(नपुंसकलिङ्ग)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
इदम्	इमे	इमानि
इदम्	इमे	इमानि

(शेष पुंल्लिङ्ग की तरह)

धातु ज्ञान (भ्वादिगण) परस्मैपदी

धातु	लट्	लोट्	लङ्	लृट्	विधिलिङ्
वद्—बोलना—	वदति	वदतु	अवदत्	वदिष्यति	वदेत्
रक्ष्—रक्षा करना—	रक्षति	रक्षतु	अरक्षत्	रक्षिष्यति	रक्षेत्
हस्—हंसना—	हसति	हसतु	अहसत्	हसिष्यति	हसेत्
भू (भव्)—होना—	भवति	भवतु	अभवत्	भविष्यति	भवेत्
चर्—चरना—	चरति	चरतु	अचरत्	चरिष्यति	चरेत्
चल्—चलना—	चलति	चलतु	अचलत्	चलिष्यति	चलेत्
तृ—तैरना—	तरति	तरतु	अतरत्	तरिष्यति	तरेत्
अट्—घूमना—	अटति	अटतु	आटत्	अटिष्यति	अटेत्
खन्—खोदना—	खनति	खनतु	अखनत्	खनिष्यति	खनेत्
खाद्—खाना—	खादति	खादतु	अखादत्	खादिष्यति	खादेत्

इन धातुओं के रूप पठ् धातु की तरह चलेंगे। आप अपनी उत्तर-पुस्तिका में पृथक् से इनके रूप लिखने का अभ्यास कर सकते हैं।

लिट् लकार (परोक्ष भूत) का सामान्य ज्ञान "परोक्षे लिट्" अर्थात् लिट् लक
आज से पहले हुए या किये हुए ऐसे कार्य का बोध कराता है जिसे वक्ता ने नहीं दे
हो। जब सुदूरवर्ती भूतकाल दिखाना हो तब केवल परोक्ष भूत का ही प्रयोग करना चाहि
यथा— 'कंसं जघान कृष्णः श्रीकृष्ण ने कंस को मार डाला।

व्यञ्जन या हल् सन्धि

क् से ह् तक के सभी वर्ण हल् कहे जाते हैं। इन्हें व्यञ्जन भी कहा जाता
दो या दो से अधिक हलों या व्यञ्जनों के बीच में जो सन्धि होती है, उसे व्यञ्
या हल् सन्धि कहा जाता है।

हल् अथवा व्यंजन-सन्धि के अनेक नियम हैं। जिनमें से प्रमुख ये हैं—

श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, षत्व, णत्व अनुनासिक एवं अनुस्वार।

श्चुत्व (स्तोः श्चुना श्चुः)

स् या तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) से पहले या बाद में श् या चवर्ग (च् छ् ज्
ञ्) हो तो स् को श् और तवर्ग को चवर्ग होगा।

अर्थात् स् के आगे या पीछे श् हो तो स् की जगह श् होगा। इसी प्रकार
थ् द् ध् न् को क्रमशः च् छ् ज् झ् ञ् होगा।

जैसे—

कस्+चित् = कश्चित्।   रामस्+च = रामश्च।
सत्+चित् = सच्चित्।   उत्+चारणम् = उच्चारणम्।
सद्+जनः = सज्जनः।   शार्ङ्गिन्+जयः = शार्ङ्गिञ्जयः।
उद्+ज्वलः = उज्ज्वलः।

ष्टुत्व (ष्टुना ष्टुः)

स् अथवा तवर्ग से पहले या बाद में ष् या टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्) कोई भी
तो स् को ष् और त् थ् द् ध् न् को क्रमशः ट् ठ् ड् ढ् ण् होता है। जैसे—

दुस्+टः = दुष्टः   इस्+टः = इष्टः
पेस्+टा = पेष्टा   तत्+टीका = तट्टीका

समास-ज्ञान

द्वन्द्व समास

जिस समास में दोनों खण्ड प्रधान होते हैं और विग्रह में, बीच में 'च' (औ
लगता है, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। अर्थात् दो या दो से अधिक प्रथमान्त पदों में द्व
समास होता है, इस समास में सभी पदों का अर्थ प्रधान रहता है। यह समास तीन त
का होता है—इतरेतर द्वन्द्व, समाहार द्वन्द्व व एकशेष द्वन्द्व।

इतरेतर द्वन्द्व—प्रत्येक शब्द के बीच में 'च' (और) प्रकट होता है। जैसे—राम
कृष्णश्च = रामकृष्णौ (राम और कृष्ण)। दो शब्द होने पर द्विवचन तथा दो से अधि
होने पर बहुवचन होता है।

समाहार द्वन्द्व—अनेक पदों का समाहार का ज्ञान हो, समस्त पद नपुंसकलिङ्ग व एकवचन में रहता है। जैसे- हस्तौ च पादौ च = हस्तपादम् (हस्त और पाद)।

एकशेष द्वन्द्व—दो पदों के स्थान पर एक पद ही शेष रह जाता है। जैसे माता च पिता च = पितरौ (माता और पिता)।

फलपुष्पे—फलं च पुष्पं च = फलपुष्पे (फल और पुष्प)

श्याममोहनौ—श्यामश्च मोहनश्च = श्याममोहनौ (श्याम और मोहन)

ऋक्सामे—ऋक् च साम च = ऋक्सामे (ऋक् और साम)।

पाणिपादम्—पाणी च पादौ च = पाणिपादम् (पाणि और पाद)।

आसनपाद्यम्—आसनं च पाद्यं च = आसनपाद्यम् (आसन और पाद्य)।

सर्पमयूरम्—सर्पश्च मयूरश्च = सर्पमयूरम् (सर्प और मयूर)।

हंसौ—हंसी च हंसश्च = हंसौ (हंसी और हंस)

दम्पती—जाया च पतिः च = दम्पती (पति-पत्नी)

कारक ज्ञान

(i) करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है।

(ii) साकम्, सार्धम्, समम्, सह (साथ) के होने पर तृतीया विभक्ति होती है।

(iii) अलम् एवं किम् के योग मे तृतीया विभक्ति होती है।

(iv) अङ्गविकार के कारण उस अङ्गवाचक शब्द में तृतीया विभक्ति होती है।

(v) जिस चिह्न से किसी पदार्थ का ज्ञान हो, उसमें तृतीया विभक्ति होती है।

उदाहरण- कृष्णेन साकम् राधा। रामेण समं सीता। रामेण सह लक्ष्मणः। गोविन्देन सार्धं मोहनः।

अलं गमनेन। कलहेन किम् ? शिरसा खल्वाटः। नेत्रेण काणः। कर्णेन बधिरः। पादेन खञ्जः। अयं जटाभिःतापसः।

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो :-

(क) अहं उद्यानस्य प्रति गच्छामि।

(ख) माम् मोदकाः रोचन्ते।

(ग) वालः चौरेण बिभेति।

(घ) मातृणाम् स्वस्ति अस्तु।

(च) तव सार्धं अहं न गच्छामि।

(छ) सः पादात् खञ्जः अस्ति।

(ज) स मां द्रुह्यति।

. यत् शब्द के तीनों लिङ्गों के रूप लिखिए।

. सन्धि कीजिए— कृष्णः+च। रामः+चिनोति। विपत्+ज्वाला। एतद्+जन्म। तत्+चक्रम्।

८. समास करो— कृष्णः च बलदेवः च। दधि च घृतं च।

. अनुवाद कीजिए–
राम के साथ लक्ष्मण वन को गया। वह कानों से बहरा है। विवाद से क्या? यात्रा पर्याप्त है। राम और कृष्ण नदी में तैर रहे हैं। भाई-बहिन मिठाई खा रहे थे। हम खान खोदेंगे। उन्हें सुबह घूमना चाहिए। झगड़ा बन्द करो। वह पैर से लंगड़ा है। सूरदास आँखों से अन्धा था।

६. ये आत्मनः साहाय्यं कुर्वन्ति ...... ईशोऽपि सफलतां ददाति।
इस वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए पद है—

(क) तेन (ख) तस्यै
(ग) तस्मात् (घ) तस्मिन्
(ङ) तेभ्यः। ( )

□ □ □

अध्याय-१२

सर्वनाम शब्द

युष्मद् (तुम) पुंल्लिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

अस्मद् (हम)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

धातु ज्ञान

पच् (पकाना)

लट्				लोट्		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पचति	पचतः	पचन्ति	प्र. पु.	पचतु	पचताम्	पचन्तु
पचसि	पचथः	पचथ	म. पु.	पच	पचतम्	पचत
पचामि	पचावः	पचामः	उ. पु.	पचानि	पचाव	पचाम

लङ्				लृट्		
:	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अपचत्	अपचताम्	अपचन्	प्र. पु.	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
अपचः	अपचतम्	अपचत	म. पु.	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
अपचम्	अपचाव	अपचाम	उ. पु.	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यम पुरुष	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव	पचेम

लुङ्

अपाक्षीत्	अपाक्ताम्	अपाक्षुः
अपाक्षीः	अपाक्तम्	अपाक्त
अपाक्षम्	अपाक्ष्व	अपाक्ष्म

नन्द् (प्रसन्न होना)	नन्दति	नन्दतु	अनन्दत्	नन्दिष्यति	नन्देत्।
धाव् (दौड़ना)	धावति	धावतु	अधावत्	धाविष्यति	धावेत्।
जीव् (जीना)	जीवति	जीवतु	अजीवत्	जीविष्यति	जीवेत्।

थ ज्ञान (हल् सन्धि)

त्व (झलां जशोऽन्ते)

१. पद के अन्त में विद्यमान झल् के स्थान पर जश् होता है।

झल्	जश्
क् ख् ग् घ् ह्	ग्
च् छ् ज् झ् श्	ज्
ट् ठ् ड् ढ् ष्	ड्
त् थ् द् ध् स्	द्
प् फ् ब् भ्	ब्

से—

दिक्+अम्बरः = दिगम्बरः। चित्+आनन्दः = चिदानन्दः।

षट्+आननः = षडाननः। दिक्+गजः = दिग्गजः।

अच्+अन्तः = अजन्तः। सुप्+अन्तः = सुबन्तः।

उत्+देश्यम् = उद्देश्यम्।

२. झल् के स्थान पर जश् हो जाता है, यदि झल् के आगे 'झश्' हो।

जैसे—झश् = झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द।

सिध्+धि = सिद्धिः दुक्+धम् = दुग्धम्।

लभ्+धः = लब्धः। क्षुभ्+धः = क्षुब्धः।

त्व (रषाभ्यां नो णः समानपदे)

र, ष् या ऋ के बाद न् को ण् हो जाता है। जैसे—

पूर्+नः = पूर्णः कीर्+नः = कीर्णः।

पितृ+नाम् = पितॄणाम् कर्तृ+नाम् = कर्तॄणाम्।

त्व

अ, आ को छोड़कर भी स्वर, इ, अन्तःस्थ और कवर्ग के बाद के स् को ष् हो जाता है, यदि वह किसी स्थान पर आदेश अथवा प्रत्यय का न हो।

से—

हरि+सु = हरिषु। रामे+सु = रामेषु।

मति+सु = मतिषु। नदी+सु = नदीषु।

बहुव्रीहि

जिस समास में अन्य पद का अर्थ प्रधान हो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। अर्थात् र्व पदार्थ एवं उत्तर पदार्थ दोनों मिलकर अन्य पदार्थ की विशेषता प्रकट करते हैं। जैसे—

दशाननः—दश आननानि यस्य सः—दशाननः (रावण)

दश आनन हैं जिसके—वह

पीताम्बरः—पीतम् अम्बरम् यस्य सः—पीताम्बरः (विष्णु)

(पीत अम्बर है जिसके—वह)

महाशोभः—महती-शोभा यस्य सः—महाशोभः (पुरुष)

(महती शोभा है जिसकी—वह)

कृतकर्मा—कृतं कर्म येन सः—कृतकर्मा (पुरुष)

(किया गया है कर्म जिसके द्वारा—वह)

वीणापाणिः—वीणा पाणौ यस्य सः—वीणापाणिः (नारद)

(वीणा हाथ में है जिसके वह—पुरुष)

सपुत्रः—पुत्रेण सह इति—सपुत्रः

(पुत्र के साथ-वह पिता)

शान्तिप्रियः—शांतिः प्रिया यस्य सः-शान्तिप्रियः

(शान्ति है प्रिय जिसे-वह)

कारक ज्ञान (विभक्ति सहित)

(i) सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है।

(ii) नमः, स्वस्ति शब्द के साथ चतुर्थी विभक्ति होती है।

(iii) नि+वेद्, उपदिश्, स्पृह्, क्रियापदों के साथ चतुर्थी विभक्ति होती है

(iv) क्रुध्, द्रुह्, व ईर्ष्य् धातु (क्रियापद) के साथ चतुर्थी विभक्ति होती है

(v) दा धातु का योग होने पर चतुर्थी विभक्ति होती है।

(vi) रुच् धातु के प्रयोग होने पर चतुर्थी विभक्ति होती है।

(vii) अलम् (समर्थवाचक) शब्द के प्रयोग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

उदाहरण

गुरवे नमः। रामाय स्वस्ति।

आचार्याय निवेदयते। शिष्याय उपदिशति। राधा सुमनेभ्यः स्पृहयति।

दुर्जनाय क्रुध्यति। सज्जनाय द्रुह्यति। मित्राय असूयति।

विप्राय धनं ददाति। मह्यं मोदकानि रोचन्ते। सः दुष्टेभ्यः अलम्।

अभ्यास

१. युष्मद् एवं अस्मद् शब्द की द्वितीया, चतुर्थी व षष्ठी विभक्ति के रूप लिखो।

२. विग्रह करो—भोजनप्रियः, नीलाम्बरः, महाशयः, चक्रपाणिः, चतुर्भुजः, षडाननः।

चतुर्थी विभक्ति होने के कारण वताइए—

श्रीगणेशाय नम:। शिष्याय स्वस्ति। विप्राय दानम्। तुभ्यं दुग्धं न रोचते। मल्ल: मल्लाय अलम्। पुत्र: पित्रे निवेदयति। धर्मगुरु: भक्तेभ्य: उपदिशति।

अनुवाद कीजिए—

वह प्रति मास कमाता है। उसे वड़े भाई को नमस्कार करना चाहिए। तुम दोनों यह गाँव क्यों छोड़ते हो ? हम इस नगर में रह रहे थे। तुम सड़क पर दौड़ो। वीणा रसोई घर में खाना पकाती है। वे औरों के लिए जीते हैं। हम दोनों कल विद्यालय नहीं जायेंगे। कल तुम्हें क्या हुआ ? हमारा कल्याण हो। तुझे धर्मवार्ता कहूँगा। गुरु शिष्य पर क्रोध करता है। वह भिखारी को रोटी देता है। मुझे मीठा अच्छा नहीं लगता है।

निम्नलिखित पदों का संस्कृत में विग्रह करते हुए समास का नामोल्लेख कीजिए—

(i) सुवर्णकङ्कणम् (ii) लुब्धकत्रासित:

(iii) श्लाघ्यगुण: (iv) गृहस्थधर्म:

(v) शक्तिहीन: (vi) दूतीवचनम्

□ □ □

अध्याय-१३

शब्द रूप

वणिक् (व्यापारी) शब्द (पुंल्लिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	वणिक्	वणिजौ	वणिज:
द्वितीया	वणिजम्	वणिजौ	वणिज:
तृतीया	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भि:
चतुर्थी	वणिजे	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्य:
पंचमी	वणिज:	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्य:
षष्ठी	वणिज:	वणिजो:	वणिजाम्

सप्तमी	वणिजि	वणिजो:	वणिक्षु
सम्बोधन	हे वणिक्	हे वणिजौ	हे वणिज:

भूभृत् (राजा, पर्वत) शब्द (पुंल्लिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृत:
द्वितीया	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृत:
तृतीया	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भि:
चतुर्थी	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्य:
पञ्चमी	भूभृत:	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्य:
षष्ठी	भूभृत:	भूभृतो:	भूभृताम्
सप्तमी	भूभृति	भूभृतो:	भूभृत्सु
सम्बोधन	हे भूभृत्	हे भूभृतौ	हे भूभृत:

धातु रूप

दृश् (पश्य) देखना

लट्

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष
पश्यति	पश्यत:	पश्यन्ति	प्रथम पुरुष
पश्यसि	पश्यथ:	पश्यथ	मध्यम पुरुष
पश्यामि	पश्याव:	पश्याम:	उत्तम पुरुष

लोट्

पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु	प्रथम पुरुष
पश्य	पश्यतम्	पश्यत	मध्यम पुरुष
पश्यानि	पश्याव	पश्याम	उत्तम पुरुष

लङ्

अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्	प्रथम पुरुष
अपश्य:	अपश्यतम्	अपश्यत	मध्यम पुरुष
अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम	उत्तम पुरुष

लृट्

द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यत:	द्रक्ष्यन्ति	प्रथम पुरुष
द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथ:	द्रक्ष्यथ	मध्यम पुरुष
द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्याव:	द्रक्ष्याम:	उत्तम पुरुष

विधिलिङ्

पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः	प्रथम पुरुष
पश्येः	पश्येतम्	पश्येत	मध्यम पुरुष
पश्येयम्	पश्येव	पश्येम	उत्तम पुरुष

लुङ्

अदर्शात्	अदर्शाताम्	अदर्शन्	प्रथम पुरुष
अदर्शः	अदर्शातम्	अदर्शात	मध्यम पुरुष
अदर्शम्	अदर्शाव	अदर्शाम	उत्तम पुरुष

पा (पिब्) पीना

लट्				लोट्		
पिबति	पिबतः	पिबन्ति	प्र. पु.	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
पिबसि	पिबथः	पिबथ	म. पु.	पिब	पिबतम्	पिबत
पिबामि	पिबावः	पिबामः	उ. पु.	पिबानि	पिबाव	पिबाम
लङ्				**लृट्**		
अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्	प्र. पु.	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
अपिबः	अपिबतम्	अपिबत	म. पु.	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम	उ. पु.	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

विधिलिङ्

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष
पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः	प्रथम पुरुष
पिबेः	पिबेतम्	पिबेत	मध्यम पुरुष
पिबेयम्	पिबेव	पिबेम	उत्तम पुरुष

लुङ्

अपात्	अपाताम्	अपुः	प्रथम पुरुष
अपाः	अपातम्	अपात	मध्यम पुरुष
अपाम्	अपाव	अपाम	उत्तम पुरुष

	लट्	लोट्	लङ्	लृट्	विधिलिङ्
स्था (तिष्ठ)	तिष्ठति	तिष्ठतु	अतिष्ठत्	स्थास्यति	तिष्ठेत्
गै (गाय्)	गायति	गायतु	अगायत्	गास्यति	गायेत्
अर्ह् (योग्य होना)	अर्हति	अर्हतु	आर्हत्	अर्हिष्यति	अर्हेत्
कृष् (जोतना)	कर्षति	कर्षतु	अकर्षत्	कर्क्ष्यति	कर्षेत्

धृ (धारण करना या रखना)	धरति	धरतु	अधरत्	धरिष्यति	धरेत्
वृष् (बरसना)	वर्षति	वर्षतु	अवर्षत्	वर्षिष्यति	वर्षेत्

सन्धि-ज्ञान (हल् सन्धि)

अनुनासिक (यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा)

(१) कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग के किसी भी वर्ण के आगे अनुनासि (ङ ञ् ण् न् म्) रहने पर पूर्व वर्ण को अनुनासिक होगा।

जैसे—

दिक्+नागः = दिङ्नागः सद्+मतिः = सन्मतिः।

षड्+मुखः = षण्मुखः। वाक्+मयम् = वाङ्मयम्।

अनुस्वार (मोऽनुस्वारः)

मान्त पद के स्थान पर अनुस्वार होता है, यदि बाद में व्यञ्जन वर्ण हो—

हरिम्+वन्दे = हरिं वन्दे सत्यम्+वद = सत्यं वद।

अहम्+पठामि = अहं पठामि। यूयम्+वदथ = यूयं वदथ।

त्वम्+गच्छसि = त्वं गच्छसि।

वयम्+हसामः = वयं हसामः।

(२) अपदान्त म् और न् को भी अनुस्वार होता है, यदि बाद में झल् प्रत्याहा का वर्ण हो। जैसे—

यशान्+सि = यशांसि। नम्+स्यसि = नंस्यसि।

समास ज्ञान

अलुक् समास

जिसमें (शब्द) पूर्व विभक्ति का लुक् (लोप) नहीं होता है, इस प्रकार के समास को 'अलुक्' समास कहते हैं। अर्थात् प्रथम पद की विभक्ति का लोप नहीं होता है। यह तत्पुरुष समास का ही एक भेद है। जैसे—युधि+स्थिरः = युधिष्ठिरः

देवानां+प्रियः = देवानांप्रियः।

आत्मने+पदम् = आत्मनेपदम्।

दूराद्+आगतः = दूरादागतः।

पश्यतः+हरः = पश्यतोहरः।

वाचः+पति = वाचस्पतिः।

अन्ते+वासी = अन्तेवासी।

कारक-ज्ञान (विभक्ति)

(i) अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है।

(ii) भय और रक्षा अर्थ की धातुओं के साथ पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे—सिंहात् बिभेति। चौरात् त्रायते। यहाँ 'बिभेति' भय अर्थ में और 'त्रायते' रक्षा अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं।

(iii) प्रश्न और उत्तर आदि में गुप्त क्रिया के कारण पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे—कुतः श्रीमान्? (श्रीमान् कहाँ से आ रहे हैं) यहाँ क्रिया गुप्त है। इसी प्रकार उत्तर में 'अजयमेरुतः' (अजमेर से आ रहा हूँ) यहाँ भी क्रिया गुप्त है।

(iv) दिशावाची शब्दों के रहने पर भी पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे—ग्रामात् पूर्वं विद्यालयः।

(v) तुलना करने पर भी पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे— रामात् श्रेष्ठतरः कृष्णः।

(vi) पृथक्, विना एवं नाना शब्दों के साथ पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे—कृष्णः रामात् पृथक् नास्ति।

(vii) आरात् एवं बहिः शब्द के योग में पञ्चमी विभुक्ति होती है। जैसे—विद्यालयात् आरात् कश्चिदपि नास्ति।

(viii) जन् (जन्म लेना) धातु के कर्त्ता का मूलकारण अपादान होता है। यथा—'गोमयाद् वृश्चिको जायते' गोबर से बिच्छू पैदा होता है। इसी प्रकार 'कामात् क्रोधोऽभिजायते' काम से क्रोध उत्पन्न होता है, इत्यादि।

उदाहरण

वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। व्याघ्रात् बिभेति। पापात् त्रायते। कुतो भवान्? उदयपुरतः। नगरात् दक्षिणा चित्रशाला। केशवात् गोपालः पटुतरः। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। रामात् पृथक् किमपि न। नानादेशादागतः। नगरात् बहिः देवालयः।

अभ्यास

१. निम्नलिखित सन्धिवियुक्त पदों को सन्धियुक्त करके लिखिए :-

(क) गतिम्+चकार।

(ख) वृथा+उद्यतम्।

(ग) प्रति+अर्पणीयम्।

(घ) हितेच्छुः+अस्य।

२. निम्नलिखित रूपों में लकार पुरुष एवं वचन की पहचान कीजिए—

आर्हत्, वर्षेयुः, स्थास्यन्ति, अकर्षत्, अधरः, त्रायन्ते, अर्हिष्यन्ति।

३. अनुस्वार कहाँ होता है?

४. अलुक् समास किसे कहते हैं?

५. निम्नलिखित वाक्यों में पञ्चमी विभक्ति का कारण लिखिए—

कुतो भगवन्? नगरात् बहिः उद्यानम्। शीलायाः राधा पटुतरा। पितुः विना सः दुः
नगरात् पूर्वतः। दुष्टात् त्रायते।

६. अनुवाद कीजिए—

शहर से बाहर सरोवर हैं। गाँव के दक्षिण में शिव मन्दिर है। वह पाप से ड
है। तुम ऊँचे स्थान पर रहोगे। वे चित्रपट गीत नहीं गायेंगे। आज वर्षा हो
है। वे अपने पास किताबें रखेंगे। राम से मोहन पढ़ने में कुशल है। यात्री
से डरता है। घर के उत्तर में पीपल का पेड़ है। पानी से अलग होने पर मछ
मर जाती है।

□ □

अध्याय-१४

शब्द रूप

स्त्री शब्द (स्त्रीलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पंचमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि!	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः

श्री (लक्ष्मी) शब्द (स्त्रीलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै / श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः / श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियः	श्रियोः	श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम् / श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	हे श्रीः	हे श्रियौ	हे श्रियः

धातु रूप

(अदादिगण)

अस् (होना)

लट्				लोट्		
अस्ति	स्तः	सन्ति	प्र. पु.	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
असि	स्थः	स्थ	म. पु.	एधि	स्तम्	स्त
अस्मि	स्वः	स्मः	उ. पु.	असानि	असाव	असाम

लङ्				लृट्		
आसीत्	आस्ताम्	आसन्	प्र. पु.	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
आसीः	आस्तम्	आस्त	म. पु.	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
आसम्	आस्व	आस्म	उ. पु.	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

विधिलिङ्

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष
स्यात्	स्याताम्	स्युः	प्रथम पुरुष
स्याः	स्यातम्	स्यात	मध्यम पुरुष
स्याम्	स्याव	स्याम	उत्तम पुरुष

या (जाना)

लट्				लोट्		
याति	यातः	यान्ति	प्र.पु.	यातु	याताम्	यान्तु
यासि	याथः	याथ	म. पु.	याहि	यातम्	यात
यामि	यावः	यामः	उ. पु.	यानि	याव	याम

लङ्				लृट्		
अयात्	अयाताम्	अयान् / अयुः	प्र. पु.	यास्यति	यास्यतः	यास्यन्ति
अयाः	अयातम्	अयात	म. पु.	यास्यसि	यास्यथः	यास्यथ
अयाम्	अयाव	अयाम	उ. पु.	यास्यामि	यास्यावः	यास्यामः

विधिलिङ्

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष
यायात्	यायाताम्	ययुः	प्रथम पुरुष
यायाः	यायातम्	यायात	मध्यम पुरुष
यायाम्	यायाव	यायाम	उत्तम पुरुष

सन्धि ज्ञान

विसर्ग सन्धि

किसी पद अथवा शब्द के पीछे (:) को विसर्ग कहा जाता है। विसर्ग में जं परिवर्तन होता है, वह विसर्ग सन्धि में आता है। स् को विसर्ग (:) होता है।

(विसर्जनीयस्य सः)

१. विसर्ग (:) को स् होता है, खर् परे रहने पर। खर् = क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स। जैसे—

राम:+तिष्ठति = रामस्तिष्ठति।

यहाँ रामः के (:) को स् हो गया, क्योंकि 'तिष्ठति' का 'त्' खर् है।

२. विसर्ग के बाद शर् (श् स् ष्) हो तो विसर्ग (:) को स् होता है। (यह ऐच्छिक है।) जैसे—

बाल:+स्वपिति = बालस्स्वपिति।

रुत्व

पद के अन्तिम स को रु (र्) होता है। यदि विसर्ग (:) के पूर्व अ और आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तथा विसर्ग के बाद में कोई स्वर या वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ अक्षर हो तो विसर्ग (:) को र् हो जाता है। जैसे—

नि:+मक्षिकम् = निर्मक्षिकम्   नि:+धनम् = निर्धनम्।

कवि:+जयति = कविर्जयति   मुनि:+गच्छति = मुनिर्गच्छति।

विसर्ग लोप

१. यदि विसर्ग (:) के पहले 'अ' हो और उसके आगे 'अ' के अतिरिक्त दूसरा कोई स्वर वर्ण हो तो विसर्ग (:) का लोप हो जाता है।

जैसे—

राम:+आगत: = राम आगत:। (विसर्ग लोप)

मनुज:+इह = मनुज इह। (विसर्ग लोप)

चन्द्र:+उदगात् = चन्द्र उदगात्। (विसर्ग लोप)

२. यदि विसर्ग (:) के पहले 'आ' हो उसके आगे स्वर वर्ण हो अथवा व्यञ्जन (वर्ग) का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ अक्षर या य् र् ल् व् ह् हो तो विसर्ग (:) का लोप हो जाता है। जैसे—

मनुजा:+यान्ति = मनुजा यान्ति (विसर्ग लोप)

(पूर्व में आ है और विसर्ग (:) के वाद य् है)

देवा:+इह = देवा इह (विसर्ग लोप)

(पूर्व में आ है और विसर्ग (:) के वाद 'इ' स्वर है)

मानवा:+हसन्ति = मानवा हसन्ति (विसर्ग लोप)

पूर्व में आ है और विसर्ग (:) के वाद ह है)

३. स: और एष: के विसर्ग के आगे 'अ' स्वर के अतिरिक्त अन्य कोई स्वर या व्यञ्जन हो तो स: और एष: के विसर्ग (:) का लोप हो जाता है। जैसे—

स:+आप्नोति = स आप्नोति।

स:+उत्तिष्ठति = स उत्तिष्ठति।

स:+पठति = स पठति।

एष:+आगच्छति = एष आगच्छति।

एष:+हसति = एष हसति।

एष:+इच्छति = एष इच्छति।

कारक ज्ञान (विभक्ति)

सम्वन्ध (षष्ठी)

(i) सम्बन्ध का वोध कराने के लिए षष्ठी विभक्ति होती है।

(ii) हेतु शब्द के रहने पर षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे— धन के लिए रहता है— धनस्य हेतो: वसति।

(iii) स्मृ धातु के योग में खेदपूर्वक स्मरण में षष्ठी विभक्ति होती है— मातु: स्मरति।

(iv) उपरि, पुर:, अध:, अग्रे, पश्चात् तथा दक्षिणत:, पूर्वत: आदि दिशावाचक शब्दों के रहने पर षष्ठी विभक्ति होती है।

उदाहरण

रामस्य पुत्रः। गृहस्य हेतोः अत्रागच्छत्। भ्रातुः स्मरामि।

गृहस्य उपरि कपोताः। गृहस्य पुरः प्राङ्गणम्।

गृहस्य पश्चात् वापी। नगरस्य दक्षिणतः यज्ञशाला।

अभ्यास

१. विसर्गसन्धि का उदाहरण है :—

(क) कर्मजा

(ख) वर्धमानः

(ग) सिद्धिर्भवति

(घ) गर्हणा

(ङ) प्रार्थना। ( )

२. सन्धि करो—

तथा+अपि। अति+उत्तमः। यदा+एषा। वाक्+दानम्। बालकाः+पठन्ति। एषः+इच्छति।

३. विग्रह करो (समस्त पदों में)—

त्रिलोकी, चतुष्पथः, यथाशक्ति, राजपुत्रः, अकृतः, गजपतिः।

. अनुवाद करो—

यह यहां है। तुम वहाँ हो। वे घर में नहीं थे। वह आज नहीं होगा। वे उत्तम हों। उन्हें सच्चरित्र होना चाहिए। मैं कल विद्यालय में नहीं था। हिमालय उत्तर में है। गंगा हिमालय से बहती है। यात्री शेर से डरते हैं।

५. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–(अस् धातु के रूप वर्तमान)

सः------------। तौ-----------। छात्रा कक्षायां-----------। अहं अध्यापकः-----------। वयं मानवाः-----------।

☐☐☐

अध्याय-१५

शब्द रूप

गतवत् (गया हुआ) शब्द (पुंल्लिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गतवान्	गतवन्तौ	गतवन्तः
द्वितीया	गतवन्तम्	गतवन्तौ	गतवतः
तृतीया	गतवता	गतवद्भ्याम्	गतवद्भिः
चतुर्थी	गतवते	गतवद्भ्याम्	गतवद्भ्यः
पंचमी	गतवतः	गतवद्भ्याम्	गतवद्भ्यः
षष्ठी	गतवतः	गतवतोः	गतवताम्
सप्तमी	गतवति	गतवतोः	गतवत्सु
सम्बोधन	हे गतवन्	हे गतवन्तौ	हे गतवन्तः

इस तरह धनवत्, बुद्धिमत् आदि शब्दों के रूप चलते हैं।

गच्छत् (गया हुआ) शब्द (पुंल्लिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
पंचमी	गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्	हे गच्छन्तौ	हे गच्छन्तः

इसी प्रकार पठत्, लिखत्, खेलत्, कुर्वत् आदि सभी शतृ प्रत्ययान्त पुंल्लिंग शब्दों के रूप चलते हैं।

धातु ज्ञान

हन् (मारना)

लट्				लोट्		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
हन्ति	हतः	घ्नन्ति	प्र. पु.	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
हंसि	हथः	हथ	म. पु.	जहि	हतम्	हत
हन्मि	हन्वः	हन्मः	उ. पु.	हनानि	हनाव	हनाम

लङ्					लृट्	
अहन्	अहताम्	अघ्नन्	प्र. पु.	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
अहः	अहतम्	अहत	म. पु.	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
अहनम्	अहन्व	अहन्म	उ. पु.	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

विधिलिङ्

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष
हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः	प्रथम पुरुष
हन्याः	हन्यातम्	हन्यात	मध्यम पुरुष
हन्याम्	हन्याव	हन्याम	उत्तम पुरुष

विद् (जानना)

	लट्				लोट्	
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वेत्ति	वित्तः	विदन्ति	प्र. पु.	वेत्तु	वित्ताम्	विदन्तु
वेत्सि	वित्थः	वित्थ	म. पु.	विद्धि	वित्तम्	वित्त
वेद्मि	विद्वः	विद्मः	उ. पु.	वेदानि	वेदाव	वेदाम
	लङ्				लृट्	
अवेत्	अवित्ताम्	अविदुः	प्र. पु.	वेदिष्यति	वेदिष्यतः	वेदिष्यन्ति
अवेः	अवित्तम्	अवित्त	म. पु.	वेदिष्यसि	वेदिष्यथः	वेदिष्यथ
अवेदम्	अविद्व	अविद्म	उ. पु.	वेदिष्यामि	वेदिष्यावः	वेदिष्यामः

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष
विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः	प्रथम पुरुष
विद्याः	विद्यातम्	विद्यात	मध्यम पुरुष
विद्याम्	विद्याव	विद्याम	उत्तम पुरुष

सन्धि ज्ञान (विसर्ग सन्धि) (ओत्व)

१. यदि विसर्ग (:) के पहले 'अ' हो और विसर्ग के आगे वर्ग का तीसरा (ग् ज् ड् द् ब्), चौथा (घ् झ् ढ् ध् भ्), पाँचवाँ (ङ् ञ् ण् न् म्) अथवा य् र् ल् व् ह् में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग के पूर्व अकार एवं विसर्ग (:) दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है।

राम:+हसति = रामो हसति।

(अ+: = ओ)

बालक:+याचते = बालको याचते।

मन:+रथ: = मनोरथ:।

मन:+हर = मनोहर:।

यश:+धन: = यशोधन:।

२. यदि विसर्ग (:) के पहले अ हो और विसर्ग (:) के परे 'अ' हो तो पूर्व वाले अकार और विसर्ग (:) दोनों को ओ' हो जाता है। जैसे— (बालः+अयम् = बालोऽयम् (अ+: = ओ) यहाँ अयम् के अ का लोप हो जाता है और इस प्रकार के स्थान पर अवग्रह का चिन्ह (ऽ) बनाया जाता है।

जैसे— बालः+अयम् = अ+: = (ो ऽ)।

रामः+अपि = रामोऽपि। अन्यः+अन्यः = अन्योऽन्यः।

कृष्णः+अस्ति = कृष्णोऽस्ति। अधः+अधः = अधोऽधः।

कारक ज्ञान (विभक्ति)

अधिकरण (सप्तमी)

(i) आधार या अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है।

(ii) समय बोधक शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे—मध्याह्ने कार्यं करोति। प्रातःकाले सूर्यः उदेति, सायंकाले अस्तमेति। शैशवे चञ्चलता, यौवने उत्कर्षः, वार्धक्ये शैथिल्यम्।

(iii) अनेक में एक को छांटने अथवा तमप् प्रत्यय के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे— कविषु कालिदासः। छात्रेषु रामः पटुतमः (तमप्प्रत्यय के रहने पर षष्ठी विभक्ति भी होती है, तुलना करने में)।

(iv) कुशल, निपुण, पटु, दक्ष, चतुर अर्थ वाले शब्दों के साथ सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे— कर्मणि कुशलः। कार्येषु दक्षः। शास्त्रेषु निपुणः।

(v) स्निह् (प्रेमार्थक) धातु के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा-माता पुत्रे स्निह्यति।

(vi) अनादर अर्थ में षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियाँ होती हैं। रुदति प्राव्राजीत्, रुदतः प्राव्राजीत्।

सति सप्तमी (विशिष्ट प्रयोग)

अपराधे कृतेऽप्यन्यैः सत्यसारे तदाश्रमे।
स्वीकृत्य दोषसर्वस्वमुपवासैस्तपस्यति॥

उपर्युक्त श्लोक के रेखांकित पद में सति के योग में (अपराध कर लेने पर) सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार पठिते सति, गते सति, लिखिते सति, आदि उदाहरणों द्वारा "सति सप्तमी" का अभ्यास कीजिए।

उदाहरण

गृहे आसनम्। शैशवे सुन्दरः। शास्त्रे प्रवीणः। पिता पुत्रे स्निह्यति। मनुष्येषु रामो वीरतमः।

अभ्यास

१. "यशोऽभिलाषी" सन्धि का विग्रह होगा—

(क) यशि+अभिलाषी (ख) यशोः+अभिलाषी
(ग) यशः+अभिलाषी (घ) यशसः+अभिलाषी
(ङ) यशसि+अभिलाषी। ( )

२. "......मानवा: श्रेष्ठा:।" रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए उपयुक्त पद है :

(क) जीवा: (ख) जीवेषु
(ग) जीवानि (घ) जीवेभ्य:
(ङ) जीवो:। ( )

३. लिखत् शब्द (पुंल्लिंग) के रूप लिखिए।

४. धनवत् शब्द (पुंल्लिंग) के रूप लिखिए।

५. **विग्रह कीजिए—**
रामोऽपि। केशवोऽहसत्। कोऽपि। मनोरम:। कोऽयम्।

६. मोक्षे इच्छाऽस्ति। यौवने पराक्रमी। विद्वत्सु श्रेष्ठतम:। मध्याह्ने सवितरि तपति— इन शब्दों में सप्तमी विभक्ति का कारण बताइए।

७. **अनुवाद कीजिए—**
उसने मुझे मारा। वह उसे जानता था। राम जाता हुआ गिर पड़ा। बुद्धिमान् से विवाद करना उचित नहीं है। आश्रम के वृक्षों पर धूल गिर रही है। वह रणनीति में दक्ष है। माता अपने पुत्रों से स्नेह करती है। केशव कक्षा के सभी छात्रों में श्रेष्ठ है।

८. अधिकरण में कौन सी विभक्ति होती है? सोदाहरण लिखिए।

९. सन्धि विच्छेद कर सन्धि का नामोल्लेख कीजिए—

(i) कस्त्वम् (ii) चिन्तयन्नेव
(iii) इत्युक्त्वा (iv) हिरण्यकेनोक्तम्

□□□

अध्याय-१६

शब्द रूप

वारि (जल) शब्द (नपुंसकलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभि:
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्य:

पंचमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि, वारे	हे वारिणी	हे वारीणि

मधु (शहद) शब्द (नपुंसकलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पंचमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु, मधो	हे मधुनी	हे मधूनि

दधि (दही) शब्द (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पंचमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दधनि, दध्नि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	हे दधि, दधे	हे दधिनी	हे दधीनि

तु रूप (अदादिगण)

स्वप् (सोना)

लट्				लोट्		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहु
स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति	प्र. पु.	स्वपितु	स्वपिताम्	स्व
स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ	म. पु.	स्वपिहि	स्वपितम्	स्व
स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः	उ. पु.	स्वपानि	स्वपाव	स्व

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्वपीत् / अस्वपत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्
मध्यम पुरुष	अस्वपीः / अस्वपः	अस्वपितम्	अस्वपित
उत्तम पुरुष	अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम

लृट्

प्रथम पुरुष	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्वप्स्यसि	स्वप्स्यथः	स्वप्स्यथ
उत्तम पुरुष	स्वप्स्यामि	स्वप्स्यावः	स्वप्स्यामः

विधिलिङ्

प्रथम पुरुष	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
मध्यम पुरुष	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
उत्तम पुरुष	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम

दुह् (दुहना)

लट्				लोट्		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति	प्र. पु.	दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु
दोक्षि	दुग्धः	दुग्ध	म. पु.	दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध
दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः	उ. पु.	दोहानि	दोहाव	दोहाम
लङ्				लृट्		
अधोक्	अदुग्धाम्	अदुहन्	प्र. पु.	धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति
अधोक्	अदुग्धम्	अदुग्ध	म. पु.	धोक्ष्यसि	धोक्ष्यथः	धोक्ष्यथ
अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म	उ. पु.	धोक्ष्यामि	धोक्ष्यावः	धोक्ष्यामः

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः
मध्यम पुरुष	दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात
उत्तम पुरुष	दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम

संख्यावाचकशब्दाः

(एक से दस अरब तक)

१. एकः, एकम्, एका
२. द्वौ, द्वे, द्वे
३. त्रयः, त्रीणि, तिस्रः
४. चत्वारः, चत्वारि, चतस्रः
५. पञ्च
६. षट्
७. सप्त
८. अष्ट, अष्टौ
९. नव
१०. दश
११. एकादश
१२. द्वादश
१३. त्रयोदश
१४. चतुर्दश
१५. पञ्चदश
१६. षोडश
१७. सप्तदश
१८. अष्टादश
१९. एकोनविंशतिः

२०. विंशतिः
२१. एकविंशतिः
२२. द्वाविंशतिः
२३. त्रयोविंशतिः
२४. चतुर्विंशतिः
२५. पञ्चविंशतिः
२६. षड्विंशति
२७. सप्तविंशतिः
२८. अष्टाविंशतिः
२९. एकोनत्रिंशत्
३०. त्रिंशत्
३१. एकत्रिंशत्
३२. द्वात्रिंशत्
३३. त्रयस्त्रिंशत्
३४. चतुस्त्रिंशत्
३५. पञ्चत्रिंशत्

३६. षट्त्रिंशत्
३७. सप्तत्रिंशत्
३८. अष्टात्रिंशत्
३९. एकोनचत्वारिंशत्
४०. चत्वारिंशत्
४१. एकचत्वारिंशत्
४२. द्विचत्वारिंशत्
४३. त्रिचत्वारिंशत्
४४. चतुश्चत्वारिंशत्
४५. पञ्चचत्वारिंशत्
४६. षट्चत्वारिंशत्
४७. सप्तचत्वारिंशत्
४८. अष्टचत्वारिंशत्
४९. एकोनपञ्चाशत्
५०. पञ्चाशत्
५१. एकपञ्चाशत्
५२. द्विपञ्चाशत्
५३. त्रिपञ्चाशत्
५४. चतुः पञ्चाशत्

५५. पञ्चपञ्चाशत्
५६. षट्पञ्चाशत्
५७. सप्तपञ्चाशत्
५८. अष्टपञ्चाशत्
५९. एकोनषष्टिः
६०. षष्टिः
६१. एकषष्टिः
६२. द्विषष्टिः
६३. त्रिषष्टिः
६४. चतुःषष्टिः
६५. पञ्चषष्टिः
६६. षट्षष्टिः
६७. सप्तषष्टिः
६८. अष्टषष्टिः
६९. एकोनसप्ततिः
७०. सप्ततिः

७१. एकसप्ततिः
७२. द्विसप्ततिः
७३. त्रिसप्ततिः
७४. चतुःसप्ततिः
७५. पञ्चसप्ततिः
७६. षट् सप्ततिः
७७. सप्तसप्ततिः
७८. अष्टसप्ततिः
७९. एकोनाशीतिः
८०. अशीतिः
८१. एकाशीतिः
८२. द्व्यशीतिः
८३. त्र्यशीतिः
८४. चतुरशीतिः
८५. पञ्चाशीतिः
८६. षडशीतिः
८७. सप्ताशीतिः
८८. अष्टाशीतिः
८९. नवाशीतिः, (एकोननवतिः)
९०. नवतिः
९१. एकनवतिः
९२. द्विनवतिः
९३. त्रिनवतिः
९४. चतुर्नवतिः
९५. पञ्चनवतिः
९६. षण्णवतिः
९७. सप्तनवतिः
९८. अष्टनवतिः
९९. नवनवतिः
१००. शतम्

१०१ आदि संख्याओं के लिए अधिक शब्द लगाकर संख्या शब्द बनाये जाते हैं। यथा— १०१ (एकाधिकं शतम्)।

२०० आदि के लिए दो आदि संख्यावाचक शब्द पूर्व में रखकर बाद में शत रखें, अथवा शत पहले रखकर द्वयम् आदि रखें।

यथा— २००	द्विशती अथवा शतद्वयम्
३००	त्रिशती अथवा शतत्रयम्
एक हजार (१०००)	सहस्रम्।
दस हजार (१००००)	अयुतम्।
एक लाख (१०००००)	लक्षम्।
दस लाख (१००००००)	नियुतम्।
एक करोड़ (१०००००००)	कोटिः।
दस करोड़ (१००००००००)	दशकोटिः।
एक अरब (१०००००००००)	अर्बुदम्।
दस अरब (१००००००००००)	दशार्बुदम्।

कारक ज्ञान (विभक्ति)

(शीङ्, स्था, आस्)

शीङ्(सोना-बसना), स्था (बैठना), आस् (रहना) ये धातुएँ अकर्मक हैं। इनके पूर्व में अधि उपसर्ग लगा हुआ हो तो इन क्रियाओं का आधार कर्म हो जाता है। अधि+शी। अधि+स्था। अधि+आस्। इन धातुओं के साथ द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—

अधि+शी

लोहकारः ग्राममधिशेते (लुहार गाँव में रहता है)।

ग्रामसेवकः ग्राममधिशेते (ग्राम-सेवक गाँव में सोता है)।

अधि+स्था

कुलपतिः आसनमधितिष्ठति (कुलपति आसन पर बैठता है)।

अधि+आस्

ऋषिः तपस्थलीमध्यास्ते (ऋषि तपस्थली में रहता है)।

तादर्थ्य (प्रयोजन)

जिस प्रयोजन या प्राप्ति के लिए जो वस्तु या क्रिया होती है, उनमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—मोक्षाय देवं भजति (मोक्ष के लिए देव को भजता है)। ज्ञानाय अध्ययनम् (ज्ञान के लिए अध्ययन)।

अभ्यास

१. निम्नांकित वाक्यों में रेखांकित शब्दों की विभक्ति बताओ और उसका कारण लिखो :—

(क) अहं त्वाम् धिक् करोमि

(ख) धनिकः याचकेभ्यः भोजनं प्रयच्छति।

(ग) अत्र श्रवणाभ्यां बधिराः भ्रमन्ति।

(घ) दुर्जनेभ्यः नमः।

(ङ) लोभात् क्रोधः प्रभवति।

(च) सर्पात् बिभेति बालकः।

सिंही........ सुपुत्रेण निर्भयं स्वपिति।

(क)	एकम्	(ख)	एकस्य
(ग)	एकेन	(घ)	एकः
(ङ)	एकस्मात्।		( )

६७, ८०, ४५, १८, २९, ६, ९१— इनके संस्कृत शब्द बनाओ।

दो सौ पांच। तीन सौ। दस हजार। दो लाख। एक अरब। इनके संस्कृत शब्द बनाओ।

अयुतम्-नियुतम्। कोटि-अर्बुदम्। एकाधिकं-शतम्-शतद्वयम्- इनके अन्तर बताइयें।

अर्थाय श्रमः। पुण्याय दानम्। आचार्यः आसनमधितिष्ठति। ब्रह्मचारी वनस्थलीमध्यास्ते। श्रमिकः यन्त्रशालामधिशेते। यहाँ द्वितीया विभक्ति का आधार बतलाइये।

अनुवाद कीजिए—

वह दो कोस जाता है। मैं गाय का दूध दुहता हूँ। उसे जल्दी सोना चाहिए। हम आज रात नहीं सोयेंगे। पृथ्वी धन दुहती है। वे भूमि पर ही सो गए। वह सफलता के लिए पढ़ रहा है। एक लाख जनसंख्या है। पाँच अरब रुपये की योजना है। वह दो सौ रुपये देता है। इस वर्ष का बजट दस अरब का है। यह भवन दस लाख का है। यह वर्ष १९९६ है।

□ □ □

अध्याय-१७

शब्द रूप (संख्यावाची)

एक (एक) शब्द

(एकवचन में ही रूप चलते हैं)

	पुंल्लिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग
प्रथमा	एक:	प्रथमा	एका
द्वितीया	एकम्	द्वितीया	एकाम्
तृतीया	एकेन	तृतीया	एकया
चतुर्थी	एकस्मै	चतुर्थी	एकस्यै
पञ्चमी	एकस्मात्	पञ्चमी	एकस्या:
षष्ठी	एकस्य	षष्ठी	एकस्या:
सप्तमी	एकस्मिन्	सप्तमी	एकस्याम्

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	एकम्
द्वितीया	एकम्

द्वि (दो) शब्द

(द्विवचन में ही रूप चलते हैं)

	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयो:	द्वयो:	द्वयो:
सप्तमी	द्वयो:	द्वयो:	द्वयो:

त्रि (तीन) शब्द

(तीन से अठारह तक की संख्याओं के रूप केवल बहुवचन में ही चलते हैं)

	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	त्रय:	तिस्र:	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्र:	त्रीणि
तृतीया	त्रिभि:	तिसृभि:	त्रिभि:

चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृषु	त्रिषु

धातु रूप (जुहोत्यादिगण)

दा (देना) धातु

लट्				लोट्		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
ददाति	दत्तः	ददति	प्र. पु.	ददातु	दत्ताम्	ददतु
ददासि	दत्थः	दत्थ	म. पु.	देहि	दत्तम्	दत्त
ददामि	दद्वः	दद्मः	उ. पु.	ददानि	ददाव	ददाम
लङ्				लृट्		
अददात्	अदत्ताम्	अददुः	प्र. पु.	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
अददाः	अदत्तम्	अदत्त	म. पु.	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
अददाम्	अदद्व	अदद्म	उ. पु.	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

विधिलिङ्

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष
दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः	प्रथम पुरुष
दद्याः	दद्यातम्	दद्यात	मध्यम पुरुष
दद्याम्	दद्याव	दद्याम	उत्तम पुरुष

लुङ्

अदात्	अदाताम्	अदुः
अदाः	अदातम्	अदात
अदाम्	अदाव	अदाम

प्रत्यय ज्ञान

किसी धातु के अन्त में या बाद में जिसे जोड़ा जाता है, उसे प्रत्यय कहते हैं। जैसे— नी+क्त्वा (त्वा) = नीत्वा। यहाँ 'नी' धातु और क्त्वा प्रत्यय है; नी धातु के बाद में इसे जोड़ा गया है।

प्रत्यय के अनेक भेद हैं, जैसे—कृत् प्रत्यय, कृत्य प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय एवं स्त्री प्रत्यय आदि।

एक से अधिक शब्द बनाने के लिए प्रत्यय को जोड़ा जाता है। धातु, संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषणों के अन्त में या बाद में प्रत्यय जोड़ने से असंख्य शब्द बन जाते हैं। प्रमुख प्रत्यय ये हैं—

कृदन्त (कृत्) प्रत्यय—क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, तव्य, शतृ, तृन्, शानच्, क्त और अनीयर् आदि।

तद्धित प्रत्यय—मतुप्, इनि, ष्यञ्, तरप्, अण्, यत्, ण्यत् आदि।

वाच्य-परिवर्तन

वाच्य का अर्थ है—'बताया जाने वाला'।

वाच्य तीन प्रकार के होते हैं—

१. कर्तृवाच्य।

२. कर्मवाच्य।

३. भाववाच्य।

कर्तृवाच्य—जिस धातु का वाच्य कर्त्ता हो, उसे कर्तृवाच्य कहा जाता है।

कर्मवाच्य—जिसका वाच्य कर्म हो, उसे कर्मवाच्य कहा जाता है।

भाववाच्य—कर्त्ता और कर्म दोनों के अनुसार न हो, उसे भाववाच्य कहा जाता है। जैसे-

१. **कर्तृवाच्य**— अहं वेदं पठामि।
   कर्मवाच्य—मया वेदः पठ्यते।

२. **कर्तृवाच्य**—अहं तिष्ठामि।
   भाववाच्य—मया स्थीयते।

अभ्यास

१. निम्नलिखित रूपों में मूल शब्द एवं विभक्ति बतलाइए—
   (क) धाम्नि
   (ख) हरेः
   (ग) भूमौ
   (घ) गौः
   (ङ) सर्वैः

२. **द्वयोः** फलयोः। **तिसृभिः** कन्याभिः। **त्रीणि** फलानि। **एकस्मिन्** ग्रामे। **एकस्याः** नद्याः। **द्वाभ्यां** नेत्राभ्याम्। रेखांकित (मोटे अक्षरों वाले) शब्दों के लिंग बताइये।

३. प्रत्यय किसे कहते हैं?

४. वाच्य कितने प्रकार के होते हैं?

५. अनुवाद कीजिए—
   वे दो फल खाते हैं। सीता दोनों हाथों से घड़ा उठाती है। एक विद्यालय में तीन सौ छात्र हैं। एक स्त्री के एक ही पुत्र है। तुम्हें मुझे पाँच रुपये देने चाहिए। हमने सभी को किताबें दीं। तुम विद्यालय में चन्दा दो। तीन स्त्रियाँ, दो पुरुष और एक बालिका इस भवन में हैं।

□□□

अध्याय-१८

शब्द रूप
(संख्यावाची)
चतुर् (चार) शब्द
बहुवचनान्त चतुर् शब्द

विभक्ति	पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्ण्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्ण्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

	पञ्चन् शब्द	षष् शब्द	सप्तन् शब्द
	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
प्रथमा	पञ्च	षट्, षड्	सप्त
द्वितीया	पञ्च	षट्, षड्	सप्त
तृतीया	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः
चतुर्थी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
पञ्चमी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
षष्ठी	पञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्
सप्तमी	पञ्चसु	षट्सु	सप्तसु

(तीनों लिङ्गों में समान रूप होते हैं)

	अष्टन् शब्द		नवन् शब्द
	बहुवचन		बहुवचन
प्रथमा	अष्ट, अष्टौ	प्रथमा	नव
द्वितीया	अष्ट, अष्टौ	द्वितीया	नव
तृतीया	अष्टाभिः, अष्टभिः	तृतीया	नवभिः
चतुर्थी	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	चतुर्थी	नवभ्यः
पञ्चमी	अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः	पञ्चमी	नवभ्यः
षष्ठी	अष्टानाम्	षष्ठी	नवानाम्
सप्तमी	अष्टसु, अष्टासु	सप्तमी	नवसु

(तीनों लिङ्गों में समान रूप होते हैं)

दशन् शब्द (तीनों लिङ्गों में समान रूप चलते हैं)

विभक्ति	रूप
प्रथमा	दश
द्वितीया	दश
तृतीया	दशभिः
चतुर्थी	दशभ्यः
पंचमी	दशभ्यः
षष्ठी	दशानाम्
सप्तमी	दशसु

(इसी प्रकार एकादशन्, द्वादशन्, त्रयोदशन्, चतुर्दशन्, पञ्चदशन्, षोडशन्, [illegible] और अष्टादशन् शब्दों के रूप चलते हैं)

धातु-रूप (दिवादिगण)

नश् (नष्ट होना)

लट् एकवचन	लट् द्विवचन	लट् बहुवचन	पुरुष	लोट् एकवचन	लोट् द्विवचन	लोट् बहुवचन
नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति	प्र. पु.	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ	म. पु.	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः	उ. पु.	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

लङ् एकवचन	लङ् द्विवचन	लङ् बहुवचन	पुरुष	लृट् एकवचन	लृट् द्विवचन	लृट् बहुवचन
अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्	प्र. पु.	नङ्क्ष्यति	नङ्क्ष्यतः	नङ्क्ष्यन्ति
अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत	म. पु.	नङ्क्ष्यसि	नङ्क्ष्यथः	नङ्क्ष्यथ
अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम	उ. पु.	नङ्क्ष्यामि	नङ्क्ष्यावः	नङ्क्ष्यामः

अथवा (लृट्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नशिष्यति	नशिष्यतः	नशिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नशिष्यसि	नशिष्यथः	नशिष्यथ
उत्तम पुरुष	नशिष्यामि	नशिष्यावः	नशिष्यामः

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
मध्यम पुरुष	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उत्तम पुरुष	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

दिवादिगण के अन्य धातुओं के रूप इस प्रकार बनाये जा सकते हैं—

कुप् (क्रुद्ध होना) लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	कुप्+यति = कुप्यति (क्रोध करता है)	कुप्+यतः = कुप्यतः (वे दो क्रोध करते हैं)	कुप्+यन्ति = कुप्यन्ति (वे क्रोध करते हैं)

म. पु.	कुप्+यसि = कुप्यसि (तुम क्रोध करते हो)	कुप्+यथः = कुप्यथः (तुम दो क्रोध करते हो)	कुप्+यथ = कुप्यथ (तुम सब क्रोध करते हो)
उ. पु.	कुप्+यामि = कुप्यामि (मैं क्रोध करता हूँ)	कुप्+यावः = कुप्यावः (हम दोनों क्रोध करते हैं)	कुप्+यामः = कुप्यामः (हम सब क्रोध करते हैं)

लोट्

प्र. पु.	कुप्+यतु = कुप्यतु (वह क्रोध करे)	कुप्+यताम् = कुप्यताम् (वे दोनों क्रोध करें)	कुप्+यन्तु = कुप्यन्तु (वे सब क्रोध करें)
म. पु.	कुप्+यः = कुप्यः (तुम क्रोध करो)	कुप्+यतम् = कुप्यतम् (तुम दोनों क्रोध करो)	कुप्+यत = कुप्यत (तुम सब क्रोध करो)
उ. पु.	कुप्+यानि = कुप्यानि (मैं क्रोध करूँ)	कुप्+याव = कुप्याव (हम दोनों क्रोध करें)	कुप्+याम = कुप्याम (हम सब क्रोध करें)

लङ्

(पूर्व में अ जुड़ेगा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अ+कुप्+यत् = अकुप्यत् (उसने क्रोध किया)	अकुप्+यताम् = अकुप्यताम् (उन दोनों ने क्रोध किया)	अकुप्+यन् = अकुप्यन् (उन्होंने क्रोध किया)
म. पु.	अ+कुप्+यः = अकुप्यः (तुमने क्रोध किया)	अकुप्+यतम् = अकुप्यतम् (तुम दोनों ने क्रोध किया)	अ+कुप्+यत = अकुप्यत (तुम सबने क्रोध किया)
उ. पु.	अ+कुप्+यम् = अकुप्यम् (मैंने क्रोध किया)	अकुप्+याव = अकुप्याव (हम दोनों ने क्रोध किया)	अकुप्+याम = अकुप्याम (हम सबने क्रोध किया)

लृट्

(कुप् का कोप हो जाएगा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	कोप्+इष्यति = कोपिष्यति (वह क्रोध करेगा)	कोप्+इष्यतः = कोपिष्यतः (वे दोनों क्रोध करेंगे)	कोप्+इष्यन्ति = कोपिष्यन्ति (वे सब क्रोध करेंगे)
म. पु.	कोप्+इष्यसि = कोपिष्यसि (तुम क्रोध करोगे)	कोप्+इष्यथः = कोपिष्यथः (तुम दोनों क्रोध करोगे)	कोप+इष्यथ = कोपिष्यथ (तुम सब क्रोध करोगे)
उ. पु.	कोप्+इष्यामि = कोपिष्यामि (मैं क्रोध करूँगा)	कोप्+इष्यावः = कोपिष्यावः (हम दोनों क्रोध करेंगे)	कोप्+इष्यामः = कोपिष्यामः (हम सब क्रोध करेंगे)

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	कुप्+येत् = कुप्येत् (उसे क्रोध करना चाहिए)	कुप्+येताम् = कुप्येताम् (उन दोनों को क्रोध करना चाहिए)	कुप्+येयुः = कुप्येयुः (उन्हें क्रोध करना चाहिए)
म. पु.	कुप्+येः = कुप्येः (तुम्हें क्रोध करना चाहिए)	कुप्+येतम् = कुप्येतम् (तुम दोनों को क्रोध करना चाहिए)	कुप्+येत = कुप्येत (तुम सबको क्रोध करना चाहिए)
उ. पु.	कुप्+येयम् = कुप्येयम् (मुझे क्रोध करना चाहिए)	कुप्+येव = कुप्येव (हम दोनों को क्रोध करना चाहिए)	कुप्+येम = कुप्येम (हमें क्रोध करना चाहिए)

इस प्रकार भ्रम् धातु के रूप भी चलते हैं—

लट्	भ्राम्यति	भ्राम्यतः	भ्राम्यन्ति
लोट्	भ्राम्यतु	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु
लङ्	अभ्राम्यत्	अभ्राम्यताम्	अभ्राम्यन्
लृट्	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
विधिलिङ्	भ्राम्येत्	भ्राम्येताम्	भ्राम्येयुः

(भ्रम् धातु के रूप भू धातु की तरह भी चलते हैं।)

इसी प्रकार लुभ् (लोभ करना) धातु के रूप भी चलेंगे।

प्रत्यय ज्ञान (क्त और क्तवतु)

भूतकाल में क्त और क्तवतु प्रत्यय होते हैं।

क्त का 'त' शेष रहता है।

क्तवतु का 'वत्' शेष रहता है।

क्त प्रत्ययान्त को वत् जोड़कर क्तवतु प्रत्ययान्त बनाया जा सकता है।

जैसे—कृ (करना), कृ+क्त (त) = कृतः (किया हुआ)

कृ+क्तवतु (तवत्) = कृतवत्।

कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में 'क्त' प्रत्यय होता है।

कर्तृवाच्य में 'क्तवतु' प्रत्यय होता है।

क्त प्रत्यय

धातु	प्रत्यय	रूप	धातु	प्रत्यय	रूप
अर्ज्	क्त	अर्जितः	चर्	क्त	चरितः
इ	क्त	इतः	चल्	क्त	चलितः
ईक्ष्	क्त	ईक्षितः	क्री	क्त	क्रीतः

कथ्	क्त	कथितः	क्रीड्	क्त	क्रीडितः
कम्प्	क्त	कम्पितः	खन्	क्त	खातः
कुप्	क्त	कुपितः	क्रुध्	क्त	क्रुद्धः
कूर्द्	क्त	कूर्दितः	खाद्	क्त	खादितः
घ्रा	क्त	घ्रातः	गम्	क्त	गतः
क्षिप्	क्त	क्षिप्तः	नी	क्त	नीतः
क्षुभ्	क्त	क्षुब्धः	पत्	क्त	पतितः
गर्ज्	क्त	गर्जितः	पठ्	क्त	पठितः
ग्रह्	क्त	गृहीतः	भाष्	क्त	भाषितः
गण्	क्त	गणितः	पाल्	क्त	पालितः
स्पृश्	क्त	स्पृष्टः	भिद्	क्त	भिन्नः
मुच्	क्त	मुक्तः	याच्	क्त	याचितः
रुच्	क्त	रुचितः	शिक्ष्	क्त	शिक्षितः
लभ्	क्त	लब्धः	शुभ्	क्त	शोभितः
चिन्त्	क्त	चिन्तितः	हस्	क्त	हसितः
चुर्	क्त	चोरितः	हन्	क्त	हतः
जि	क्त	जितः	हृ	क्त	हृतः
जीव्	क्त	जीवितः	स्ना	क्त	स्नातः
जन्	क्त	जनितः	स्निह्	क्त	स्निग्धः
छिद्	क्त	छिन्नः	शुष्	क्त	शुष्कः
ज्ञा	क्त	ज्ञातः	शी	क्त	शयितः
तप्	क्त	तप्तः	युध्	क्त	युद्धः
दण्ड्	क्त	दण्डितः	शक्	क्त	शक्तः
दा	क्त	दत्तः	मृज्	क्त	मृष्टः
दीप्	क्त	दीप्तः	सिच्	क्त	सिक्तः
दुह्	क्त	दुग्धः	श्रु	क्त	श्रुतः
दृश्	क्त	दृष्टः	वस्	क्त	उषितः
धाव्	क्त	धावितः	लिख्	क्त	लिखितः
धृ	क्त	धृतः	या	क्त	यातः
नम्	क्त	नतः	रक्ष्	क्त	रक्षितः
नश्	क्त	नष्टः	मिल्	क्त	मिलितः

वाच्य परिवर्तन

कर्तृवाच्य

जब कर्ता प्रथमा विभक्ति में, कर्म द्वितीया विभक्ति में एवं क्रिया के लिए धातु

रूप प्रयुक्त होता है, उसे 'कर्तृवाच्य' कहा जाता है। इसमें कर्त्ता के अनुसार क्रिय
पुरुष और वचन का प्रयोग होता है।

मोहनः पुस्तकं पठति।

यहाँ मोहनः कर्त्ता है। पुस्तकं कर्म एवं पठति क्रिया है। कर्त्ता मोहनः प्रथमा वि
का एकवचन है। अतः क्रिया (पठति) भी प्रथम पुरुष एकवचन की है।

तौ पुस्तके पठतः।

यहाँ कर्त्ता (तौ) प्रथमा विभक्ति का द्विवचन है। अतः क्रिया (पठतः) प्रथम
का द्विवचन है। इस प्रकार अन्य पुरुषों में भी क्रिया उस पुरुष एवं वचन की होती
जिस पुरुष का व जिस वचन का कर्त्ता होता है।

अभ्यास

१. "........नद्यः। रिक्त स्थान पूर्ति के लिए उपयुक्त पद है—

(क) चत्वारः (ख) चतस्रः

(ग) चत्वारि (घ) चतुर्भिः

(ङ) चतुरः। (

२. द्वादशन् एवं त्रयोदशन् शब्द के रूप लिखिए।

३. भ्राम्यथः, भ्राम्येयुः, कुप्येमः, अकुप्यः, नश्यन्ति इन शब्दों में लकार, पुरुष
वचन बताइए।

. क्त और क्तवतु प्रत्यय में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

५. पच्, मुद्, आप्, कृष्, वर्ण्, स्वप्, अर्च्, गै, वृ, विद् एवं नन्द् धातुओं के 'व
प्रत्यय जोड़कर रूप बनाइये।

६. अनुवाद कीजिए—

वसु आठ आदमियों पर क्रोध करता है। उस शहर में दस घर नष्ट हो गये। प
का नाश होना चाहिए। वह कभी क्रोध नहीं करेगा। तुम कहाँ कहाँ घूमोगे?
लोभ नहीं करना चाहिए। हम अठारह पुराणों का अध्ययन करेंगे। आठ और अ
सोलह होते हैं। उसने कहा- वह गया। उसने पुस्तक नहीं लिखी।

७. किन्हीं दो के प्रकृति-प्रत्यय लिखिए—

(i) गत्वा (ii) जातम् (iii) चिन्तयन् (iv) कर्तव्यम्

□□L

अध्याय-१९

शब्द रूप

पूर्व (शब्द)

पुंल्लिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे
द्वितीया	पूर्वम्	पूर्वौ	पूर्वान्
तृतीया	पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः
चतुर्थी	पूर्वस्मै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
पंचमी	पूर्वस्मात्	पूर्वाभ्याम्	पूर्वेभ्यः
षष्ठी	पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्
सप्तमी	पूर्वस्मिन्	पूर्वयोः	पूर्वेषु

स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पूर्वा	पूर्वे	पूर्वाः
द्वितीया	पूर्वाम्	पूर्वे	पूर्वाः
तृतीया	पूर्वया	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभिः
चतुर्थी	पूर्वस्यै	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्यः
पंचमी	पूर्वस्याः	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभ्यः
षष्ठी	पूर्वस्याः	पूर्वयोः	पूर्वासाम्
सप्तमी	पूर्वस्याम्	पूर्वयोः	पूर्वासु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि
द्वितीया	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि

शेष विभक्तियों के रूप पुंल्लिङ्ग की तरह चलते हैं।)

धातु-रूप—(दिवादिगण)

जन् (उत्पन्न होना) आत्मनेपदी

लट्				लोट्		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
जायते	जायेते	जायन्ते	प्र. पु.	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
जायसे	जायेथे	जायध्वे	म. पु.	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
जाये	जायावहे	जायामहे	उ. पु.	जायै	जायावहै	जायामहै

लङ्				लृट्		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	[cut off]
अजायत	अजायेताम्	अजायन्त	प्र. पु.	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
अजायेथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्	म. पु.	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्य[cut off]
अजाये	अजायावहि	अजायामहि	उ. पु.	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनि[cut off]

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
मध्यम पुरुष	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उत्तम पुरुष	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

प्रत्यय-ज्ञान (क्तवतु)

'क्तवतु' प्रत्यय क्रिया की समाप्ति अथवा भूतकाल के लिए ही प्रयुक्त होत

धातु के बाद 'क्तवतु' प्रत्यय जोड़ने पर 'क्तवतु' में से क् एवं उ का जाता है। 'तवत्' शेष रह जाता है—

स्मृ+क्तवतु (तवत्) = स्मृतवत्।

जि+क्तवतु (तवत्) = जितवत्।

नी+क्तवतु (तवत्) = नीतवत्।

क्तवतु प्रत्ययान्त शब्द के रूप पुंल्लिङ्ग में 'भवत्' की तरह चलते हैं, स्त्री में नदी शब्द की तरह चलते हैं और नपुंसकलिङ्ग में जगत् शब्द की तरह चल क्तवतु प्रत्ययान्त शब्द बनाने का यह भी तरीका है कि क्त प्रत्ययान्त शब्दों के में वत् जोड़ दें। जैसे गत+वत् = गतवत् आदि।

धातु	क्त प्रत्ययान्त शब्द	क्तवतु प्रत्ययान्त शब्द	पुंल्लिंग शब्द
अर्च्	अर्चितः	अर्चितवत्	अर्चितवान्
भू	भूतः	भूतवत्	भूतवान्
पठ्	पठितः	पठितवत्	पठितवान्
रक्ष्	रक्षितः	रक्षितवत्	रक्षितवान्
गम्	गतः	गतवत्	गतवान्
ज्ञा	ज्ञातः	ज्ञातवत्	ज्ञातवान्
दृश्	दृष्टः	दृष्टवत्	दृष्टवान्
चल्	चलितः	चलितवत्	चलितवान्
हस्	हसितः	हसितवत्	हसितवान्
वद्	उदितः	उदितवत्	उदितवान्

भज्	भक्तः	भक्तवत्	भक्तवान्
खाद्	खादितः	खादितवत्	खादितवान्
खन्	खातः	खातवत्	खातवान्
चर्	चरितः	चरितवत्	चरितवान्
क्रीड्	क्रीडितः	क्रीडितवत्	क्रीडितवान्
आप्	आप्तः	आप्तवत्	आप्तवान्
इष्	इष्टः	इष्टवत्	इष्टवान्
ईक्ष्	ईक्षितः	ईक्षितवत्	ईक्षितवान्
कथ्	कथितः	कथितवत्	कथितवान्
कम्प्	कम्पितः	कम्पितवत्	कम्पितवान्
कुप्	कुपितः	कुपितवत्	कुपितवान्
कूर्द्	कूर्दितः	कूर्दितवत्	कूर्दितवान्
कृ	कृतः	कृतवत्	कृतवान्
नम्	नतः	नतवत्	नतवान्
नश्	नष्टः	नष्टवत्	नष्टवान्
पत्	पतितः	पतितवत्	पतितवान्
पा	पीतः	पीतवत्	पीतवान्
पाल्	पालितः	पालितवत्	पालितवान्
पूज्	पूजितः	पूजितवत्	पूजितवान्
प्रच्छ्	पृष्टः	पृष्टवत्	पृष्टवान्
भाष्	भाषितः	भाषितवत्	भाषितवान्
मिल्	मिलितः	मिलितवत्	मिलितवान्
मुच्	मुक्तः	मुक्तवत्	मुक्तवान्
रच्	रचितः	रचितवत्	रचितवान्
लिख्	लिखितः	लिखितवत्	लिखितवान्
शंक्	शंकितः	शंकितवत्	शंकितवान्
शप्	शप्तः	शप्तवत्	शप्तवान्
शिक्ष्	शिक्षितः	शिक्षितवत्	शिक्षितवान्
शुभ्	शोभितः	शोभितवत्	शोभितवान्
सेव्	सेवितः	सेवितवत्	सेवितवान्
स्ना	स्नातः	स्नातवत्	स्नातवान्
स्था	स्थितः	स्थितवत्	स्थितवान्
हृ	हृतः	हृतवत्	हृतवान्

शुच्	शुचितः	शुचितवत्	शुचितवान्
याच्	याचितः	याचितवत्	याचितवान्

इसी प्रकार अन्य धातुओं से परे क्तवतु प्रत्यय जोड़कर शब्द रूप बनाए जा सकते हैं। इनके रूप इस प्रकार चलते हैं। (नम् = नमस्कार)

पुंल्लिंग				स्त्रीलिंग		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
नतवान्	नतवन्तौ	नतवन्तः		नतवती	नतवत्यौ	नतवत्यः
	[भवत् की तरह]				[नदी की तरह]	

नपुंसकलिङ्ग

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
नतवत्	नतवती	नतवन्ति

[जगत् की तरह]

वाच्य-परिवर्तन

कर्मवाच्य

कर्त्ता तृतीयान्त होता है तथा कर्म प्रथमान्त होता है। क्रिया कर्म के अनुसार होती — अर्थात् कर्म जिस पुरुष एवं वचन का होता है, क्रिया भी उसी पुरुष एवं वचन की होती है। क्रिया आत्मनेपदी होती है। जैसे—

मया पुस्तकं पठ्यते।

यहाँ कर्त्ता (अहम्) तृतीयान्त है।

पुस्तकम् कर्म है तथा प्रथमा का एकवचन है।

पठ्यते क्रिया भी प्रथम पुरुष का एकवचन है।

परिवर्तन (कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में)

अहम् ग्रामं गच्छामि

[अहम् (कर्त्ता) अस्मद् शब्द का प्रथमा का एकवचन है।
मया (कर्त्ता) अस्मद् शब्द का तृतीया का एकवचन होता है।]

[ग्रामम् (कर्म) द्वितीया का एकवचन है।
ग्रामः प्रथमा (प्रथमा विभक्ति) का एकवचन है।]

[गच्छामि उत्तम पुरुष का एकवचन है।
गम्यते कर्म के अनुसार प्रथम पुरुष का एकवचन होता है।]

कर्मवाच्य में परिवर्तन करने पर—

मया ग्रामः गम्यते।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सोहनः वेदं पठति।	सोहनेन वेदः पठ्यते।

रामः सूर्यं पश्यति।	रामेण सूर्यः दृश्यते।
रामकृष्णौ जलं पिबतः	रामकृष्णाभ्यां जलं पीयते।
वयं जलं पिबामः।	अस्माभिः जलं पीयते।
त्वं नगरं गच्छसि।	त्वया नगरं गम्यते।
त्वं धनं प्राप्नोपि।	त्वया धनं प्राप्यते।
यूयम् चन्द्रं पश्यथ।	युष्माभिः चन्द्रः दृश्यते।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में वाच्य परिवर्तन की स्थिति में कर्ता के तृतीयान्त होने पर विशेष्य के साथ विशेषण भी तृतीयान्त होते हैं, जैसे—सुन्दरः बालकः-के स्थान पर **सुन्दरेण बालकेन** हो जाता है।

इसी प्रकार कर्म का कर्ता में परिवर्तन होने पर कर्म प्रथमान्त होता है। इस परिवर्तन की स्थिति में कर्म (प्रथमान्त) के विशेषण भी प्रथमान्त ही होते हैं। जैसे—रामः एकं वेदं पठति—के स्थान पर रामेण एकः वेदः पठ्यते हो जाता है।

एकः वानरः मधुरं जलं पिबति। (कर्तृवाच्य)
एकेन वानरेण मधुरं जलं पीयते। (कर्मवाच्य)
एका स्त्री एकं बालकं पश्यति। (कर्तृवाच्य)
एकया स्त्रिया एकः बालकः दृश्यते। (कर्मवाच्य)

अभ्यास

१. खन्, कुप्, क्रीड्, शिक्ष्, याच्, सेव्, रच् धातुओं में क्तवतु प्रत्यय जोड़कर स्त्रीलिंग के शब्द रूप बनाइए।

२. भू, गम्, पठ्, पत्, पा, हस्, स्था—धातुओं के साथ क्तवतु प्रत्यय जोड़कर पुंल्लिङ्ग के तृतीया के एकवचन में रूप लिखिए।

३. वाच्य परिवर्तन कीजिए— (कर्मवाच्य में)

(क) अहम् गुरुं नमामि। (ख) सः पुस्तकं नयति।
(ग) ते ग्रामं गच्छन्ति। (घ) त्वं गगनं पश्यसि।
(ङ) ते वेदं पठन्ति। (च) वयं देवम् अर्चामः।
(छ) गोपालः धेनुम् पश्यति।

४. अनुवाद कीजिए—

पूर्व में पर्वत मालाएँ हैं। पूर्व दिशा में सूर्य चमकता है। उत्तर में हिमालय शोभित होता है। समुद्र में मोती पैदा होते हैं। खेतों में बहुत धान्य पैदा होगा। दक्षिण में सागर तट है। पश्चिम में सूर्य अस्त होता है। हमें सूर्य को नमस्कार करना चाहिए।

□ □

अध्याय-२०

शब्द रूप

भवत् (आप) शब्द

पुंल्लिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पंचमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवत्	हे भवन्तौ	हे भवन्तः

स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
[illegible]	भवती	भवत्यौ	भवत्यः
द्वितीया	भवतीम्	भवत्यौ	भवतीः
तृतीया	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभिः
चतुर्थी	भवत्यै	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
पञ्चमी	भवत्याः	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
षष्ठी	भवत्याः	भवत्योः	भवतीनाम्
सप्तमी	भवत्याम्	भवत्योः	भवतीषु
सम्बोधन	हे भवति	हे भवत्यौ	हे भवत्यः

राजन् (राजा) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः

तु रूप (स्वादिगण).

चि (चुनना या इकट्ठा करना) परस्मैपदी

लट्				लोट्		
‌वचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
‌नोति	चिनुतः	चिन्वन्ति	प्र. पु.	चिनोतु	चिनुताम्	चिन्वन्तु
‌नोषि	चिनुथः	चिनुथ	म. पु.	चिनु	चिनुतम्	चिनुत
‌नोमि	चिनुवः, चिन्वः	चिनुमः, चिन्मः	उ. पु.	चिनवानि	चिनवाव	चिनवाम

लङ्				लृट्		
‌वचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
‌चिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्	प्र. पु.	चेष्यति	चेष्यतः	चेष्यन्ति
‌चिनोः	अचिनुतम्	अचिनुत	म. पु.	चेष्यसि	चेष्यथः	चेष्यथ
‌चिनवम्	अचिनुव	अचिनुम	उ. पु.	चेष्यामि	चेष्यावः	चेष्यामः

विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुयुः
मध्यम पुरुष	चिनुयाः	चिनुयातम्	चिनुयात
उत्तम पुरुष	चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुयाम

इसी प्रकार स्वादिगण की अन्य धातुओं के रूप भी बनाए जा सकते हैं।

शक् (सकना)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
. पु.	शक्+नोति = शक्नोति (वह सकता है)	शक्+नुतः = शक्नुतः (वे दो सकते हैं)	शक्+नुवन्ति = शक्नुवन्ति। (वे सब सकते हैं)
. पु.	शक्+नोषि = शक्नोषि (तुम सकते हो)	शक्+नुथः = शक्नुथः (तुम दोनों सकते हो)	शक्+नुथ = शक्नुथ (तुम सब सकते हो)
. पु.	शक्+नोमि = शक्नोमि (मैं सकता हूँ)	शक्+नुवः = शक्नुवः (हम दो सकते हैं)	शक्+नुमः = शक्नुमः (हम सब सकते हैं)

लोट्

प्र. पु.	शक्+नोतु = शक्नोतु (वह सके)	शक्+नुताम् = शक्नुताम् (वे दोनों सकें)	शक्+नुवन्तु = शक्नुवन् (वे सब सकें)
म. पु.	शक्+नु = शक्नु (तुम सको)	शक्+नुतम् = शक्नुतम् (तुम दोनों सको)	शक्+नुत = शक्नुत (तुम सब सको)
उ. पु.	शक्+नुवानि = शक्नुवानि (मैं सकूँ)	शक्+नुवाव = शक्नुवाव (हम दोनों सकें)	शक्+नुवाम = शक्नुवा (हम सब सकें)

लङ्

(अ पूर्व में लगेगा)

प्र. पु.	अशक्+नोत् = अशक्नोत् (वह सका)	अशक्+नुताम् = अशक्नुताम् (वे दोनों सकें)	अशक्+नुवन् = अशक्नुवन् (वे सब सकें)
म. पु.	अशक्+नोः = अशक्नोः (तुम सके)	अशक्+नुतम् = अशक्नुतम् (तुम दोनों सके)	अशक्+नुत = अशक्नु (तुम सब सके)
उ. पु.	अशक्+नुवम् = अशक्नुवम् (मैं सका)	अशक्+नुव = अशक्नुव (हम दो सकें)	अशक्+नुम = अशक्नु (हम सब सकें)

लृट्

प्र. पु.	शक्ष्+यति = शक्ष्यति (वह सकेगा)	शक्ष्+यतः = शक्ष्यतः (वे दो सकेंगे)	शक्ष्+यन्ति = शक्ष्यन्ति (वे सब सकेंगे)
म. पु.	शक्ष्+यसि = शक्ष्यसि (तुम सकोगे)	शक्ष्+यथः = शक्ष्यथः (तुम दोनों सकोगे)	शक्ष्+यथ = शक्ष्यथ (तुम सब सकोगे)
उ. पु.	शक्ष्+यामि = शक्ष्यामि (मैं सकूंगा)	शक्ष्+यावः = शक्ष्यावः (हम दोनों सकेंगे)	शक्ष्+यामः = शक्ष्यामः (हम सब सकेंगे)

विधिलिङ्

प्र. पु.	शक्+नुयात् = शक्नुयात् (उसे सकना चाहिए)	शक्+नुयाताम् = शक्नुयाताम् (उन दोनों को सकना चाहिए)	शक्+नुयुः = शक्नुयुः (उन्हें सकना चाहिए)
म. पु.	शक्+नुयाः = शक्नुयाः	शक्+नुयातम् = शक्नुयातम्	शक्+नुयात = शक्नु

	(तुम्हें सकना चाहिए)	(तुम दोनों को सकना चाहिए)	(तुम सभी को सकना चाहिए)
उ. पु.	शक्+नुयम् = शक्नुयम्	शक्+नुयाव = शक्नुयाव	शक्+नुयाम = शक्नुयाम
	(मुझे सकना चाहिए)	(हम दोनों को सकना चाहिए)	(हमें सकना चाहिए)

इसी प्रकार स्वादिगण (परस्मैपदी) अन्य धातुओं के रूपों का निर्माण करना चाहिए

प्रत्यय ज्ञान (क्त्वा एवं ल्यप्)

पढ़कर, जाकर, लिखकर आदि 'कर' या 'करके' अर्थ में 'क्त्वा' प्रत्यय होता है।

क्त्वा का 'त्वा' शेष रहता है, अर्थात् 'क्' का लोप हो जाता है।

क्त्वा अव्यय है, अतः इसके रूप नहीं चलते हैं।

भू (होना) + क्त्वा (त्वा) = भूत्वा (होकर)

कृ (करना) + क्त्वा (त्वा) = कृत्वा (करके)

जहाँ धातु के पूर्व में उपसर्ग हो वहाँ 'क्त्वा' नहीं रहता है, उसे ल्यप् आदेश हो जाता है। ल्यप् का 'य' शेष रहता है।

सं+भू+ल्यप् (य) = संभूय (एक होकर)

वि+हस्+ल्यप् (य) = विहस्य (हँसकर)

क्त्वा तथा ल्यप् प्रत्ययान्त रूप

धातु	क्त्वा प्रत्ययान्त	ल्यप् प्रत्ययान्त
अर्च्	अर्चित्वा	समर्च्य
आप्	आप्त्वा	प्राप्य
आस्	आसित्वा	उपास्य
इ	इत्वा	प्रेत्य
ईक्ष्	ईक्षित्वा	समीक्ष्य
कृष्	कृष्ट्वा	आकृष्य
क्री	क्रीत्वा	विक्रीय
क्रीड्	क्रीडित्वा	प्रक्रीड्य
क्रुध्	क्रुद्ध्वा	संक्रुध्य
क्षिप्	क्षिप्त्वा	प्रक्षिप्य
गण्	गणयित्वा	संगणय्य
गम्	गत्वा	आगम्य
ग्रह्	गृहीत्वा	संगृह्य

घ्रा	घ्रात्वा	आघ्राय
चि	चित्वा	संचित्य
चर्	चरित्वा	आचर्य
चल्	चलित्वा	प्रचल्य
चिन्त्	चिन्तयित्वा	संचिन्त्य
जि	जित्वा	विजित्य
जीव्	जीवित्वा	संजीव्य
ज्ञा	ज्ञात्वा	विज्ञाय
तप्	तप्त्वा	संतप्य
त्यज्	त्यक्त्वा	परित्यज्य
तृ	तीर्त्वा	उत्तीर्य
दा	दत्वा	आदाय
दिश्	दिष्ट्वा	संदिश्य
दीप्	दीपित्वा	संदीप्य
दृश्	दृष्ट्वा	संदृश्य
धा	हित्वा	विधाय
धृ	धृत्वा	आधृत्य
नम्	नत्वा	प्रणम्य
नश्	नष्ट्वा	विनश्य
नी	नीत्वा	आनीय
पच्	पक्त्वा	संपच्य
पठ्	पठित्वा	संपठ्य
पत्	पतित्वा	निपत्य
पा	पीत्वा	निपीय
पूज्	पूजयित्वा	संपूज्य
प्रच्छ्	पृष्ट्वा	संपृच्छ्य
ब्रू	उक्त्वा	प्रोच्य
भक्ष्	भक्षयित्वा	संभक्ष्य
भज्	भक्त्वा	विभज्य
भञ्ज्	भङ्क्त्वा	विभञ्ज्य
भृ	भृत्वा	संभृत्य
भ्रंश्	भ्रष्ट्वा	प्रभ्रंश्य

भ्रम्	भ्रमित्वा	परिभ्रम्य
मन्	मत्वा	अनुमत्य
मिल्	मिलित्वा	संमिल्य
मुच्	मुक्त्वा	विमुच्य
यम्	यत्वा	अनुयम्य
याच्	याचित्वा	संयाच्य
युज्	युक्त्वा	प्रयुज्य
रक्ष्	रक्षित्वा	संरक्ष्य
रच्	रचित्वा	संरच्य
रभ्	रब्ध्वा	आरभ्य
रुध्	रुद्ध्वा	विरुध्य
रुह्	रुढ्वा	आरुह्य
लभ्	लब्ध्वा	परिलभ्य
लिख्	लिखित्वा	आलिख्य
लुभ्	लुब्ध्वा	प्रलुभ्य
वद्	उदित्वा	अनूद्य
वन्द्	वन्दित्वा	अभिवन्द्य
वस्	उपित्वा	उपोप्य
वृत्	वर्तित्वा	निवृत्य, परावृत्य
वृष्	वर्षित्वा	प्रवृष्य
शप्	शप्त्वा	अभिशप्य
शम्	शान्त्वा	निशम्य
शास्	शिष्ट्वा	अनुशिष्य
शुष्	शुष्ट्वा	परिशुष्य
शी	शयित्वा	संशय्य
श्रि	श्रित्वा	आश्रित्य
श्रु	श्रुत्वा	अनुश्रुत्य
श्लिष्	श्लिष्ट्वा	आश्लिष्य
सृज्	सृष्ट्वा	विसृज्य
सेव्	सेवित्वा	निषेव्य
हृ	हृत्वा	संहृत्य
स्मृ	स्मृत्वा	विस्मृत्य
स्तु	स्तुत्वा	संस्तुत्य

इस प्रकार अन्य धातुओं के क्त्वा एवं ल्यप् प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाये जा सकते हैं।

वाच्य परिवर्तन (कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य)

लोट्लकार में भी कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में वाच्य परिवर्तन किया जाता है।

परस्मैपदी लोट् लकार का आत्मनेपदी लोट् लकार में परिवर्तन हो जाता है। जैसे—

सः वेदं पठतु (कर्तृवाच्य)

तेन वेदः पठ्यताम्। (कर्मवाच्य)

यहाँ सः प्रथमान्त का तृतीयान्त में परिवर्तन हो गया।

वेद का प्रथमान्त में 'वेदः' परिवर्तन हो गया।

पठतु (लोट्लकार) के प्रथम पुरुष का एकवचन आत्मनेपदी में (पठ्यताम्) वेद के कर्तृत्व में होने के कारण प्रथम पुरुष का एकवचन हुआ।

अन्य उदाहरण

सोहनः सूर्यं पश्यतु। (कर्तृवाच्य)

सोहनेन सूर्यः दृश्यताम्। (कर्मवाच्य)

कृष्णः पुस्तकं पठतु। (कर्तृवाच्य)

कृष्णेन पुस्तकं पठ्यताम्। (कर्मवाच्य)

त्वं मां पश्य। (कर्तृवाच्य

त्वया अहं दृश्यै। (कर्मवाच्य

लङ् लकार में परिवर्तन

सः तं अपश्यत्। (कर्तृवाच्

तेन सः अदृश्यत। (कर्मवाच्

वयं चन्द्रम् अपश्याम। (कर्तृवाच्

अस्माभिः चन्द्रः अदृश्यत। (कर्मवाच्

त्वं फलं प्राप्नोः। (कर्तृवा

त्वया फलं प्राप्यत। (कर्मवाच्

त्वं माम् अपश्यः। (कर्तृवा

त्वया अहं अदृश्ये। (कर्मवा

लृट् लकार में परिवर्तन

सः नगरं गमिष्यति। (कर्तृव

तेन नगरं गंस्यते। (कर्म

रामः धर्मं ज्ञास्यति। (कर्तृ

रामेण धर्मः ज्ञास्यते। (कर्म

विप्रः वेदं पठिष्यति। (कर्तृवाच्य)

विप्रेण वेदः पठिष्यते। (कर्मवाच्य)

सोहनः सूर्यं द्रक्ष्यति। (कर्तृवाच्य)

सोहनेन सूर्यः द्रक्ष्यते। (कर्मवाच्य)

वयं जलं पास्यामः। (कर्तृवाच्य)

अस्माभिः जलं पास्यते। (कर्मवाच्य)

इस तरह अन्य परिवर्तन भी किये जा सकते हैं।

अभ्यास

"सौधं निर्जनं विधाय वत्सराजं अवदत्" रेखांकित में प्रत्यय है—

(क) तुमुन् (ख) शतृ

(ग) ल्यप् (घ) क्त्वा

(ङ) शानच्। ( )

"अहम् भवता सह मित्रताम् वाञ्छामि"। रेखांकित पद है—

(क) पंचमी, एकवचन (ख) चतुर्थी, एकवचन

(ग) तृतीया, एकवचन (घ) षष्ठी, एकवचन

(ङ) सप्तमी एकवचन। ( )

भवते, भवत्यै, भवति, भवन्तौ, भवत्यौ, भवतीषु— इनमें लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन की पहिचान कीजिए।

वि+हा, अनु+भू, नि+पा, परि+गम्, वि+हन्, सम्+चि, आ+नी इनके ल्यप् प्रत्ययान्त शब्द बनाइए।

शक्त्वा, शान्त्वा, लब्ध्वा, स्पृष्ट्वा, उषित्वा, नत्वा, कृत्वा, भित्वा— इनकी मूल धातु बताइए।

वाच्य परिवर्तन कीजिए—

१. सीता भोजनं पक्ष्यति।

२. रामः शिवं ध्यायति।

३. सः तं प्रश्नं पृच्छति।

४. वयं कार्य करिष्यामः।

५. त्वं चन्द्रं पश्य।

६. मोहनः पुस्तकम् अपठत्।

७. अहं त्वां पश्यामि।

७. अनुवाद कीजिए—

आप फूल चुनते हैं। आप गीत गाती हैं। आप दोनों पढ़ सकती हैं। वे पढ़ गए। तुम आकर क्या करोगे? उसने लिखकर क्या किया? वे हँसकर बोलते। तुम्हें इनकार नहीं करना चाहिए।

□□

अध्याय-२१

शब्द रूप

जगत् (संसार) शब्द (नपुंसकलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति
तृतीया	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
चतुर्थी	जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
पंचमी	जगतः	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
षष्ठी	जगतः	जगतोः	जगताम्
सप्तमी	जगति	जगतोः	जगत्सु
सम्बोधन	हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति

चक्षुष् (आँख) शब्द (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	चक्षुः	चक्षुषी	चक्षूंषि
द्वितीया	चक्षुः	चक्षुषी	चक्षूंषि
तृतीया	चक्षुषा	चक्षुर्भ्याम्	चक्षुर्भिः
चतुर्थी	चक्षुषे	चक्षुर्भ्याम्	चक्षुर्भ्यः
पञ्चमी	चक्षुषः	चक्षुर्भ्याम्	चक्षुर्भ्यः
षष्ठी	चक्षुषः	चक्षुषोः	चक्षुषाम्

सप्तमी	चक्षुषि	चक्षुषोः	चक्षुःसु चक्षुष्षु
सम्बोधन	हे चक्षुः	हे चक्षुषी	हे चक्षूंषि

संख्यावाची शब्द

एकोनविंशति, विंशति, एकविंशति, द्वाविंशति, त्रयोविंशति, चतुर्विंशति, पञ्चविंशति, षड्विंशति, सप्तविंशति, अष्टाविंशति, ऊनषष्टि, एकषष्टि, द्विषष्टि, त्रिषष्टि, चतुःषष्टि, पंचषष्टि, षट्षष्टि, सप्तषष्टि, अष्टषष्टि, ऊनसप्तति के रूप मति शब्द की तरह चलते हैं।

सप्तति से नवनवति (७०-९९) तक के रूप मति की तरह ही चलते हैं।

एकोनत्रिंशत् से अष्टपंचाशत् (२९-५८) तक के रूप भृभूत् शब्द की तरह चलते हैं।

शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्, एवं अर्बुदम्—शब्द फल शब्द के तरह चलते हैं।

कोटि एवं दशकोटि— शब्द मति की तरह चलते हैं।

धातु ज्ञान (तुदादिगण)

प्रच्छ्

लट्				लोट्		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति	प्र. पु.	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ	म. पु.	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः	उ. पु.	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम
लङ्				लृट्		
अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्	प्र. पु.	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत	म. पु.	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम	उ. पु.	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

विधिलिङ्

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यम पुरुष	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

इसी प्रकार तुदादिगण के अन्य परस्मैपदी धातुओं के रूप बनाए जा सकते हैं—

लिख्—लिखना

लट्

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लिख्+अति = लिखति	लिख्+अतः = लिखतः	लिख्+अन्ति = लिखन्ति
(वह लिखता है)	(वे दोनों लिखते हैं)	(वे सब लिखते हैं)
लिख्+असि = लिखसि	लिख्+अथः = लिखथः	लिख्+अथ = लिखथ
(तुम लिखते हो)	(तुम दोनों लिखते हो)	(तुम सब लिखते हो)
लिख्+आमि = लिखामि	लिख्+आवः = लिखावः	लिख्+आमः = लिखामः
(मैं लिखता हूँ)	(हम दोनों लिखते हैं)	(हम सब लिखते हैं)

लोट्

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
लिख्+अतु = लिखतु	लिख्+अताम् = लिखताम्	लिख्+अन्तु = लिखन्तु
(वह लिखे)	(वे दोनों लिखें)	(वे सब लिखें)
लिख्+अ = लिख	लिख्+अतम् = लिखतम्	लिख्+अत = लिखत
(तुम लिखो)	(तुम दोनों लिखो)	(तुम सब लिखो)
लिख्+आनि = लिखानि	लिख्+आव = लिखाव	लिख्+आम = लिखाम
(मैं लिखूँ)	(हम दोनों लिखें)	(हम सब लिखें)

लङ्

(पूर्व में अ लगने पर)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अलिख्+अत् = अलिखत्	अलिख्+अताम् = अलिखताम्	अलिख्+अन् = अलिखन्
(उसने लिखा)	(उन दोनों ने लिखा)	(उन्होंने लिखा)
अलिख्+अः = अलिखः	अलिख्+अतम् = अलिखतम्	अलिख्+अत = अलिखत
(तुमने लिखा)	(तुम दोनों ने लिखा)	(तुम सब ने लिखा)
अलिख्+अम् = अलिखम्	अलिख्+आव = अलिखाव	अलिख्+आम = अलिखाम
(मैंने लिखा)	(हम दोनों ने लिखा)	(हम सबने लिखा)

लृट्

(लिख् का लेख होगा)

लेख्+इष्यति = लेखिष्यति	लेख्+इष्यतः = लेखिष्यतः	लेख्+इष्यन्ति = लेखिष्यन्ति
(वह लिखेगा)	(वे दोनों लिखेंगे)	(वे सब लिखेंगे)
लेख्+इष्यसि = लेखिष्यसि	लेख्+इष्यथः = लेखिष्यथः	लेख्+इष्यथ = लेखिष्यथ
(तुम लिखोगे)	(तुम दोनों लिखोगे)	(तुम सब लिखोगे)
लेख्+इष्यामि = लेखिष्यामि	लेख्+इष्यावः = लेखिष्यावः	लेख+इष्यामः = लेखिष्यामः
(मैं लिखूँगा)	(हम दोनों लिखेंगे)	(हम सब लिखेंगे)

विधिलिङ्

लिख्+एत् = लिखेत्	लिख्+एताम् = लिखेताम्	लिख्+एंयुः = लिखेयुः
(उसे लिखना चाहिए)	(उन दोनों को लिखना चाहिए)	(उन्हें लिखना चाहिए)
लिख्+एः = लिखेः	लिख्+एतम् = लिखेतम्	लिख्+एत = लिखेत
(तुम्हें लिखना चाहिए)	(तुम दोनों को लिखना चाहिए)	(तुम सभी को लिखना चाहिए)
लिख्+एयम् = लिखेयम्	लिख्+एव = लिखेव	लिख्+एम = लिखेम
(मुझे लिखना चाहिए)	(हम दोनों को लिखना चाहिए)	(हम सभी को लिखना चाहिए)

इस प्रकार इष् (चाहना), स्पृश् (छूना), क्षिप् (फेंकना), मुच् (छोड़ना), दिश् (कहना), मिल् (मिलना) आदि धातुओं के रूप बनाए जा सकते हैं।

प्रत्यय ज्ञान (शतृ)

जा रहा, जा रही, जा रहे या पढ़ रहा, पढ़ रही—जैसी क्रियाओं को बनाने के लिए शतृ प्रत्यय प्रयुक्त होता है। शतृ प्रत्यय का 'अत्' शेष रहता है। तीनों लिङ्गों में रूप चलते हैं। शतृ प्रत्यय परस्मैपदी धातुओं के लट् के स्थान पर होता है।

पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्

शतृ प्रत्ययान्त रूप

शतृ प्रत्ययान्त रूप (पुंल्लिङ्ग)

धातु	मूल	शब्द	अर्थ
अर्च्	अर्चत्	अर्चन्	पूजता हुआ
अद्	अदत्	अदन्	खाता हुआ
आ+ह्वे	आह्वयत्	आह्वयन्	बुलाता हुआ
इष्	इच्छत्	इच्छन्	चाहता हुआ
क्रीड्	क्रीडत्	क्रीडन्	खेलता हुआ
कुप्	कुप्यत्	कुप्यन्	क्रोध करता हुआ
क्रन्द्	क्रन्दत्	क्रन्दन्	चिल्लाता हुआ
कृ	कुर्वत्	कुर्वन्	करता हुआ
कथ्	कथयत्	कथयन्	कहता हुआ
खाद्	खादत्	खादन्	खाता हुआ
खन्	खनत्	खनन्	खोदता हुआ
गम्	गच्छत्	गच्छन्	जाता हुआ
गै	गायत्	गायन्	गाता हुआ
गर्ज्	गर्जत्	गर्जन्	गरजता हुआ
गण्	गणयत्	गणयन्	गिनता हुआ
घ्रा	जिघ्रत्	जिघ्रन्	सूंघता हुआ
चर्	चरत्	चरन्	घूमता हुआ
चल्	चलत्	चलन्	चलता हुआ
चि	चिन्वत्	चिन्वन्	चुनता हुआ
जप्	जपत्	जपन्	जपता हुआ
क्षिप्	क्षिपत्	क्षिपन्	फेंकता हुआ
जीव्	जीवत्	जीवन्	जीता हुआ
तप्	तपत्	तपन्	तपता हुआ
त्यज्	त्यजत्	त्यजन्	छोड़ता हुआ
तुष्	तुष्यत्	तुष्यन्	तुष्ट होता हुआ
तृ	तरत्	तरन्	तैरता हुआ
दण्ड्	दण्डयत्	दण्डयन्	दण्ड देता हुआ
दृश्	पश्यत्	पश्यन्	देखता हुआ

दा	ददत्	ददन्	देता हुआ
दह्	दहत्	दहन्	जलता हुआ
दुह्	दुहत्	दुहन्	दुहता हुआ
धाव्	धावत्	धावन्	दौड़ता हुआ
धृ	धरत्	धरन्	धारण करता हुआ
नम्	नमत्	नमन्	नमस्कार करता हुआ
नश्	नश्यत्	नश्यन्	नष्ट करता हुआ
निन्द्	निन्दत्	निन्दन्	निन्दा करता हुआ
नृत्	नृत्यत्	नृत्यन्	नाचता हुआ
पठ्	पठत्	पठन्	पढ़ता हुआ
पत्	पतत्	पतन्	गिरता हुआ
पा	पिबत्	पिबन्	पीता हुआ
पाल्	पालयत्	पालयन्	पालता हुआ
पृच्छ्	पृच्छत्	पृच्छन्	पूछता हुआ
भक्ष्	भक्षयत्	भक्षयन्	खाता हुआ
भू	भवत्	भवन्	होता हुआ
मिल्	मिलत्	मिलन्	मिलता हुआ
रक्ष्	रक्षत्	रक्षन्	रक्षा करता हुआ
रच्	रचयत्	रचयन्	रचता हुआ
रुद्	रुदत्	रुदन्	रोता हुआ
लिख्	लिखत्	लिखन्	लिखता हुआ
वद्	वदत्	वदन्	बोलता हुआ
वस्	वसत्	वसन्	रहता हुआ
वह्	वहत्	वहन्	ढोता हुआ
वृष्	वर्षत्	वर्षन्	बरसता हुआ
शक्	शक्नुवत्	शक्नुवन्	सकता हुआ
शप्	शपत्	शपन्	शाप देता हुआ
शम्	शाम्यत्	शाम्यन्	शान्त होता हुआ
श्रु	शृण्वत्	शृण्वन्	सुनता हुआ
सिंच्	सिञ्चत्	सिञ्चन्	सींचता हुआ
सृज्	सृजत्	सृजन्	सृजन करता हुआ

स्तु	स्तुवत्	स्तुवन्	स्तुति करता हुआ
स्था	तिष्ठत्	तिष्ठन्	ठहरता हुआ
स्पृश्	स्पृशत्	स्पृशन्	छूता हुआ
स्मृ	स्मरत्	स्मरन्	याद करता हुआ
स्वप्	स्वपत्	स्वपन्	सोता हुआ
हंन्	घ्नत्	घ्नन्	मारता हुआ
हस्	हसत्	हसन्	हँसता हुआ
हा	जहत्	जहन्	छोड़ता हुआ
हृ	हरत्	हरन्	हरता हुआ

इस प्रकार अन्य धातुओं से शतृ प्रत्यय जोड़कर रूप बनाये जा सकते हैं।

वाच्य परिवर्तन (भाववाच्य)

भाववाच्य हमेशा अकर्मक धातुओं से होता है।

भाववाच्य में कर्त्ता तृतीयान्त होता है।

कर्म होता ही नहीं है।

क्रिया हमेशा प्रथम पुरुष के एकवचन की होती है।

भाववाच्य के रूप (धातु) आत्मनेपद में ही होते हैं। जैसे—राधया हस्यते।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन

लट्

अहं हसामि (कर्तृवाच्य)

मया हस्यते (भाववाच्य)

अहं तिष्ठामि (कर्तृवाच्य)

मया स्थीयते (भाववाच्य)

त्वं तिष्ठसि (कर्तृवाच्य)

त्वया स्थीयते (भाववाच्य)

लोट्

त्वं तिष्ठ (कर्तृवाच्य)

त्वया स्थीयताम् (भाववाच्य)

अहं हसानि (कर्तृवाच्य)

मया हस्यताम् (भाववाच्य)

लङ्

स अभवत् (कर्तृवाच्य)

तेन अभूयत (भाववाच्य)

इस प्रकार कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन किया जा सकता है।

अभ्यास

- "........छात्रेभ्यः इदं भोजनम् अस्ति।"

  रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए उपयुक्त शब्द है—

  (क) नवविंशत्यै (ख) नवविंशति

  (ग) नवविंश (घ) नवविंशेभ्यः

  (ङ) नवविंशाः। ( )

- क्षिप् धातु के लङ् लकार के रूप लिखिए।
- अर्ज्, अर्ह्, आगच्छ्, चुर्, क्री, जीव्— धातुओं के शतृ प्रत्ययान्त रूप लिखिए।
- पठत्, लिखत्, गच्छत्, त्यजत्, तपत्— शतृ प्रत्ययान्त शब्दों का स्त्रीलिंग में परिवर्तन कीजिए।
- अनुवाद कीजिए—

  मैं चलता हुआ गिर गया। वह लिखता हुआ सो गया। राधा पढ़ती हुई कहने लगी। वह अपने पिता से पूछेगा। तुम दोनों दीवार पर स्पर्श नहीं करोगे। हम मधुर फल चाहेंगे। उसे अपने भाई को पत्र लिखना चाहिए।

- भाववाच्य में परिवर्तन कीजिए—

  अहं लिखामि। ते हसन्ति। सा ओदनं पचति। यूयं ग्रामं गच्छथ।

□ □ □

अध्याय-२२

शब्द रूप

वधू (बहू) शब्द (स्त्रीलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वे	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पंचमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः

गिर् (वाणी) शब्द (स्त्रीलिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गीः	गिरौ	गिरः
द्वितीया	गिरम्	गिरौ	गिरः
तृतीया	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
चतुर्थी	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
पञ्चमी	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
षष्ठी	गिरः	गिरोः	गिराम्
सप्तमी	गिरि	गिरोः	गीर्षु
सम्बोधन	हे गीः	हे गिरौ	हे गिरः

गरीयस् शब्द (पुंल्लिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गरीयान्	गरीयांसौ	गरीयांसः
द्वितीया	गरीयांसम्	गरीयांसौ	गरीयसः
तृतीया	गरीयसा	गरीयोभ्याम्	गरीयोभिः
चतुर्थी	गरीयसे	गरीयोभ्याम्	गरीयोभ्यः
पञ्चमी	गरीयसः	गरीयोभ्याम्	गरीयोभ्यः
षष्ठी	गरीयसः	गरीयसोः	गरीयसाम्
सप्तमी	गरीयसि	गरीयसोः	गरीयस्सु
सम्बोधन	हे गरीयन्	हे गरीयांसौ	हे गरीयांसः

इसी प्रकार लघीयस्, द्रढ़ीयस् आदि के रूप चलते हैं।

धातु रूप (तनादिगण)

कृ (करना) (डुकृञ्)

लट्				लोट्		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	प्र. पु.	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
करोषि	कुरुथः	कुरुथ	म. पु.	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
करोमि	कुर्वः	कुर्मः	उ. पु.	करवाणि	करवाव	करवाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः
मध्यम पुरुष	अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
उत्तम पुरुष	अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म

उभयपदी धातु (भ्वादिगण)

नी (ले जाना)

परस्मैपद			लट्	आत्मनेपद		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
नयति	नयतः	नयन्ति	प्र. पु.	नयते	नयेते	नयन्ते
नयसि	नयथः	नयथ	म. पु.	नयसे	नयेथे	नयध्वे
नयामि	नयावः	नयामः	उ. पु.	नये	नयावहे	नयामहे

परस्मैपद			लोट्	आत्मनेपद		
नयतु	नयताम्	नयन्तु	प्र. पु.	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
नय	नयतम्	नयत	म. पु.	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
नयानि	नयाव	नयाम	उ. पु.	नयै	नयावहै	नयामहै

लङ् (परस्मैपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनयत्	अनयताम्	अनयन्
मध्यम पुरुष	अनयः	अनयतम्	अनयत
उत्तम पुरुष	अनयम्	अनयाव	अनयाम

लङ् (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
मध्यम पुरुष	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उत्तम पुरुष	अनये	अनयावहि	अनयामहि

परस्मैपद			लृट्	आत्मनेपद		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति	प्र. पु.	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
नेष्यसि	नेष्यथः	नेष्यथ	म. पु.	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
नेष्यामि	नेष्यावः	नेष्यामः	उ. पु.	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

परस्मैपद			लिङ्	आत्मनेपद		
नयेत्	नयेताम्	नयेयुः	प्र. पु.	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
	नयेतम्	नयेत	म. पु.	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
	नयेव	नयेम	उ. पु.	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

लुङ् (परस्मैपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनैषीत्	अनैष्टाम्	अनैषुः
मध्यम पुरुष	अनैषीः	अनैष्टम्	अनैष्ट
उत्तम पुरुष	अनैषम्	अनैष्व	अनैष्म

इस प्रकार हृ (हरना), याच् (मांगना), वह् (ढोना), खन् (खोदना), धाव् (दौड़ना) श्रि (आश्रय लेना), ह्वे (बुलाना) धातुओं के उभयपदी रूप चलते हैं।

प्रत्यय ज्ञान (शानच् प्रत्यय)

आत्मनेपदी धातुओं के लट् के स्थान् पर शानच् प्रत्यय होता है।

उभयपदी धातुओं के लट् के स्थान पर शानच् होता है।

'शानच्' का आन रह जाता है।

भ्वादिगण, चुरादिगण, तुदादिगण एवं दिवादिगण की आत्मनेपदी धातुओं के शानच् के शेष रूप 'आन' को 'मान' हो जाता है।

शानच् प्रत्ययान्त रूप पुंल्लिंग में राम शब्द की तरह चलते हैं।

स्त्रीलिंग में लता की तरह चलते हैं।

नपुंसकलिङ्ग में फल की तरह चलते हैं।

हुआ, हुई आदि अर्थ को बताने के लिए किसी भी धातु से शानच् प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाए जा सकते हैं। जैसे—

लभ्+शानच् (आन)= मान = लभमानः (पुं.)

लभ्+शानच् (आन) = मान (टाप्) = लभमाना (स्त्री.)

लभ्+शानच् (आन) = मान = लभमानम् (नपुं.)

शानजन्त शब्द (पुंल्लिङ्ग)

अर्थ्	अर्थमानः	माँगता हुआ
ईक्ष्	ईक्षमाणः	देखता हुआ
कम्प्	कम्पमानः	काँपता हुआ
कूर्द्	कूर्दमानः	कूदता हुआ
लभ्	लभमानः	पाता हुआ
सेव्	सेवमानः	सेवा करता हुआ
वृध्	वर्धमानः	बढ़ता हुआ
सह्	सहमानः	सहता हुआ
जन्	जायमानः	पैदा होता हुआ
त्रै	त्रायमाणः	रक्षित होता हुआ
दय्	दयमानः	दया करता हुआ
मुद्	मोदमानः	खुश होता हुआ
यत्	यतमानः	यत्न करता हुआ
आस्	आसीनः	बैठता हुआ
शी	शयमानः	सोता हुआ
मन्	मन्यमानः	मानता हुआ
लज्ज्	लज्जमानः	लजाता हुआ
युध्	युध्यमानः	लड़ता हुआ
मृ	म्रियमाणः	मरता हुआ
भुज्	भुञ्जानः	खाता हुआ
मन्त्र्	मन्त्र्यमाणः	सलाह करता हुआ
वञ्च्	वञ्च्यमानः	धोखा करता हुआ
पलाय्	पलायमानः	भागता हुआ

त्वर्	त्वरमाणः	शीघ्रता करता हुआ
याच्	याचमानः	माँगता हुआ
भाष्	भाषमाणः	भाषण करता हुआ
वन्द्	वन्दमानः	वन्दना करता हुआ
वृत्	वर्तमानः	रहता हुआ
व्यथ्	व्यथमानः	व्यथित होता हुआ
शंक्	शंकमानः	शंकित होता हुआ
शुभ्	शोभमानः	शोभित होता हुआ
शुच्	शोचमानः	पवित्र होता हुआ
कथ्	कथ्यमानः	कहता हुआ
कृ	कुर्वाणः	करता हुआ
चि	चिन्वानः	चुनता हुआ
चुर्	चोरयमाणः	चुराता हुआ
ज्ञा	जानानः	जानता हुआ
दा	ददानः	देता हुआ
धा	दधानः	रखता हुआ
नी	नयमानः	ले जाता हुआ
पच्	पचमानः	पकाता हुआ
ब्रू	ब्रुवाणः	बोलता हुआ
मुच्	मुञ्चमानः	छोड़ता हुआ
यज्	यजमानः	यजन करता हुआ
स्मि	स्मयमानः	मुस्कराता हुआ
रुध्	रुन्धानः	रोकता हुआ
उत्+डी	उड्डीयमानः	उड़ता हुआ
स्तु	स्तुवानः	स्तुति करता हुआ
द्युत्	द्योतमानः	चमकता हुआ
ध्वंस्	ध्वंसमानः	ध्वंस होता हुआ
वि+राज्	विराजमानः	विराजमान होता हुआ
तन्	तन्वानः	फैलता हुआ
हृ	हरमाणः	छीनता हुआ
श्लाघ्	श्लाघमानः	प्रशंसा करता हुआ
वह्	वहमानः	ढोता हुआ
युज्	युञ्जानः	युक्त होता हुआ

इस प्रकार अन्य धातुओं से भी शानच् प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाये जा सकते हैं।

प्रयोग

सा लज्जमाना स्थिता।

मोहनः मोदमानः आगच्छति।

लभमानम् विनष्टम्।

संख्यावाचक शब्द ज्ञान (पूरणी संख्याएँ)

पूरणी संख्याएँ इस प्रकार हैं—

पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
पंचमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
नवमः	नवमी	नवमम्
दशमः	दशमी	दशमम्
एकादशः	एकादशी	एकादशम्
द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्
त्रयोदशः	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
चतुर्दशः	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
पञ्चदशः	पञ्चदशी	पञ्चदशम्
षोडशः	षोडशी	षोडशम्
सप्तदशः	सप्तदशी	सप्तदशम्
अष्टादशः	अष्टादशी	अष्टादशम्
एकोनविंशतितमः	एकोनविंशतितमा	एकोनविंशतितमम्
विंशतितमः	विंशतितमा	विंशतितमम्
एकविंशतितमः	एकविंशतितमा	एकविंशतितमम्
द्वाविंशतितमः	द्वाविंशतितमा	द्वाविंशतितमम्
त्रयोविंशतितमः	त्रयोविंशतितमा	त्रयोविंशतितमम्
चतुर्विंशतितमः	चतुर्विंशतितमा	चतुर्विंशतितमम्
पंचविंशतितमः	पंचविंशतितमा	पंचविंशतितमम्
षड्विंशतितमः	षड्विंशतितमा	षड्विंशतितमम्

इस प्रकार सप्तविंशतितमम्, अष्टाविंशतितमम्, एकोनत्रिंश, त्रिंश, एकत्रिंश, द्वात्रिंश आदि रूप बनेंगे। अष्टापञ्चाशत् तक यह क्रम रहेगा। एकोनषष्टि (उनसठ) की तरह शेष शब्द बनेंगे।

प्रयोग

प्रथमः पाठः—(पहला पाठ)

द्वितीया कथा—(दूसरी कथा)

तृतीयं फलम्—(तीसरा फल)

पञ्चमः पुरुषः—(पांचवाँ पुरुष)

सप्तमी तिथिः—(सातवीं तिथि)

षष्ठी विभक्तिः—(छठी विभक्ति)

षोडशी कन्या—(सोलहवीं कन्या)

विंशतितमः पाठः—(बीसवाँ पाठ)

त्रिंशत्तमम् गृहम्—(तीसवाँ घर)

अभ्यास

१. लघीयस् शब्द के रूप लिखिये।

२. करोमि, करवाम, कुर्युः, करिष्यन्ति, करवाणि— इन्हें वाक्यों में प्रयुक्त कीजिये।

३. मुद्, युध्, सेव्, ईक्ष्, भुज्, पच्, शुच्— धातुओं से शानच् प्रत्ययान्त शब्द बनाइये।

४. सात, पन्द्रह, चालीस, साठ, पिच्चासी, नब्बे की— पूरणी संख्याएँ (स्त्रीलिंग) बनाइए।

५. अनुवाद कीजिए—

पांचवीं बहू ने नमस्कार किया।

हम दिन भर काम करेंगे।

तुम शीघ्र ही कार्यारम्भ करो।

हमें आलस छोड़कर काम करना चाहिए।

तुम इस घड़े को ले जाओ।

वह इस कुर्सी को ले जायेगा।

तुम सब एकादशी को जाओ।

वह कूदता हुआ गिर पड़ा।

वे सोते हुए कहने लगे।

हम खाते हुए झूठ नहीं कहेंगे।

□□□

अध्याय-२३

शब्द रूप

दातृ (देने वाला) ऋकारान्त शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄः
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पंचमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	हे दातः	हे दातारौ	हे दातारः

इसी प्रकार कर्तृ, नेतृ, धातृ, भर्तृ आदि शब्दों के रूप चलते हैं।

गो शब्द (ओकारान्त)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पंचमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	हे गौः	हे गावौ	हे गावः

धातु रूप (क्र्यादिगण)

बन्ध् (बाँधना)

लट्				लोट्		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
बध्नाति	बध्नीतः	बध्नन्ति	प्र. पु.	बध्नातु	बध्नीताम्	बध्नन्तु
बध्नासि	बध्नीथः	बध्नीथ	म. पु.	बधान	बध्नीतम्	बध्नीत
बध्नामि	बध्नीवः	बध्नीमः	उ. पु.	बध्नानि	बध्नाव	बध्नाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अबध्नात्	अबध्नीताम्	अबध्नन्
मध्यम पुरुष	अबध्नाः	अबध्नीतम्	अबध्नीत
उत्तम पुरुष	अबध्नाम्	अबध्नीव	अबध्नीम

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भन्त्स्यति	भन्त्स्यतः	भन्त्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	भन्त्स्यसि	भन्त्स्यथः	भन्त्स्यथ
उत्तम पुरुष	भन्त्स्यामि	भन्त्स्यावः	भन्त्स्यामः

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	बध्नीयात्	बध्नीयाताम्	बध्नीयुः
मध्यम पुरुष	बध्नीयाः	बध्नीयातम्	बध्नीयात
उत्तम पुरुष	बध्नीयाम्	बध्नीयाव	बध्नीयाम

उभयपदी

ज्ञा (जानना)

परस्मैपद			लट्	आत्मनेपद		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहु
जानाति	जानीतः	जानन्ति	प्र. पु.	जानीते	जानाते	जान
जानासि	जानीथः	जानीथ	म. पु.	जानीषे	जानाथे	जानी
जानामि	जानीवः	जानीमः	उ. पु.	जाने	जानीवहे	जानी

परस्मैपद			लोट्	आत्मनेपद		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुव
जानातु	जानीताम्	जानन्तु	प्र..पु.	जानीताम्	जानाताम्	जान
जानीहि	जानीतम्	जानीत	म. पु.	जानीष्व	जानाथाम्	जानी
जानानि	जानाव	जानाम	उ. पु.	जानै	जानावहै	जाना

लङ् (परस्मैपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्
मध्यम पुरुष	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उत्तम पुरुष	अजानाम्	अजानीव	अजानीम

लङ् (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
मध्यम पुरुष	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
उत्तम पुरुष	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि

परस्मैपद			लृट्	आत्मनेपद		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति	प्र. पु.	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ	म. पु.	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे
ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः	उ. पु.	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

विधिलिङ् (परस्मैपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
मध्यम पुरुष	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
उत्तम पुरुष	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

विधिलिङ् (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
मध्यम पुरुष	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उत्तम पुरुष	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

लुङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अज्ञासीत्	अज्ञासिष्टाम्	अज्ञासिषुः
मध्यम पुरुष	अज्ञासीः	अज्ञासिष्टम्	अज्ञासिष्ट
उत्तम पुरुष	अज्ञासिषम्	अज्ञासिष्व	अज्ञासिष्म

इस प्रकार क्र्यादिगण की अन्य धातुओं के रूप बनाये जा सकते हैं।

क्री (मोल लेना, खरीदना) उभयपदी

लट् (परस्मैपद)

(न को ण हो जाता है)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
क्री+नाति = क्रीणाति (वह खरीदता है)	क्री+नीतः = क्रीणीतः (वे दो खरीदते हैं)	क्री+नन्ति = क्रीणन्ति (वे सब खरीदते हैं)
क्री+नासि = क्रीणासि (तुम खरीदते हो)	क्री+नीथः = क्रीणीथः (तुम दोनों खरीदते हो)	क्री+नीथ = क्रीणीथ (तुम सब खरीदते हो)

क्री+नामि = क्रीणामि	क्री+नीवः = क्रीणीवः	क्री+नीमः = क्रीणीमः
(मैं खरीदता हूँ)	(हम दो खरीदते हैं)	(हम सब खरीदते हैं)

लट् (आत्मनेपदी)

क्री+नीते = क्रीणीते	क्री+नाते = क्रीणाते	क्री+नते = क्रीणते
क्री+नीषे = क्रीणीषे	क्री+नाथे = क्रीणाथे	क्री+नीध्वे = क्रीणीध्वे
क्री+ने = क्रीणे	क्री+नीवहे = क्रीणीवहे	क्री+नीमहे = क्रीणीमहे

लोट् (परस्मैपद)

क्री+नातु = क्रीणातु	क्री+नीताम् = क्रीणीताम्	क्री+नन्तु = क्रीणन्तु
(वह खरीदे)	(वे दो खरीदें)	(वे सब खरीदें)
क्री+नीहि = क्रीणीहि	क्री+नीतम् = क्रीणीतम्	क्री+नीत = क्रीणीत
(तुम खरीदो)	(तुम दो खरीदो)	(तुम सब खरीदो)
क्री+नानि = क्रीणानि	क्री+नाव = क्रीणाव	क्री+नाम = क्रीणाम
(मैं खरीदूँ)	(हम दोनों खरीदें)	(हम सब खरीदें)

लोट् (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणन्ताम्
मध्यम पुरुष	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उत्तम पुरुष	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

लङ् (परस्मैपद)

(धातु से पूर्व अ जुड़ेगा)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अ+क्री+नात् = अक्रीणात्	अ+क्री+नीताम् = अक्रीणीताम्	अ+क्री+नन् = अक्रीणन्
(उसने खरीदा)	(उन दोनों ने खरीदा)	(उन्होंने खरीदा)
अ+क्री+नाः = अक्रीणाः	अ+क्री+नीतम् = अक्रीणीतम्	अ+क्री+नीत = अक्रीणीत
(तुमने खरीदा)	(तुम दोनों ने खरीदा)	(तुम सबने खरीदा)
अ+क्री+नाम् = अक्रीणाम्	अ+क्री+नीव = अक्रीणीव	अ+क्री+नीम = अक्रीणीम
(मैंने खरीदा)	(हम दोनों ने खरीदा)	(हम सबने खरीदा)

लङ् (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
मध्यम पुरुष	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
उत्तम पुरुष	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

लृट् (परस्मैपद)

क्रेष्यति	क्रेष्यत:	क्रेष्यन्ति
क्रेष्यसि	क्रेष्यथ:	क्रेष्यथ
क्रेष्यामि	क्रेष्याव:	क्रेष्याम:

लृट् (आत्मनेपद)

क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

विधिलिङ् (परस्मैपद)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
़ी+नीयात् = क्रीणीयात्	क्री+नीयाताम् = क्रीणीयाताम्	क्री+नीयु: = क्रीणीयु:
उसे खरीदना चाहिए)	(उन दोनों को खरीदना चाहिए)	(उन्हें खरीदना चाहिए)
़ी+नीया: = क्रीणीया:	क्री+नीयातम् = क्रीणीयातम्	क्री+नीयात = क्रीणीयात
तुम्हें खरीदना चाहिए)	(तुम दोनों को खरीदना चाहिए)	(तुम सब को खरीदना चाहिए)
़ी+नीयाम् = क्रीणीयाम्	क्री+नीयाव = क्रीणीयाव	क्री+नीयाम = क्रीणीयाम
मुझे खरीदना चाहिए)	(हम दोनों को खरीदना चाहिए)	(हम सबको खरीदना चाहिए)

विधिलिङ् (आत्मनेपद)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
मध्यम पुरुष	क्रीणीथा:	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उत्तम पुरुष	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

लुङ् (परस्मैपद)

अक्रैषीत्	अक्रैष्टाम्	अक्रैषु:
अक्रैषी:	अक्रैष्टम्	अक्रैष्ट
अक्रैषम्	अक्रैष्व	अक्रैष्म

इस गण के आत्मनेपदी धातुओं के रूप निर्माण के लिए धातु के अन्त में इस प्रकार जोड़ना होगा—

लट्				लोट्		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
नीते	नाते	नते	प्र. पु.	नीताम्	नाताम्	नताम्
नीषे	नाथे	नीध्वे	म. पु.	नीष्व	नाथाम्	नीध्वम्
ने	नीवहे	नीमहे	उ. पु.	नै	नावहै	नामहै

(धातु से पूर्व अ) लङ्

नीत	नाताम्	नत	प्र. पु.	नीत	नीयाताम्	नीरन्
नीथाः	नाथाम्	नीध्वम्	म. पु.	नीथाः	नीयाथाम्	नीध्वम्
नि	नीवहि	नीमहि	उ. पु.	नीय	नीवहि	नीमहि

प्रत्यय-ज्ञान (तुमुन्)

'को' अथवा 'के लिए' अर्थ में तुमुन् प्रत्यय होता है। जैसे—खाने को, खाने के लिए आदि।

तुमुन् प्रत्यय का तुम् शेष रहता है। जैसे—घ्रा+तुमुन् (तुम्) = घ्रातुम् (सूंघने के लिए)।

तुमुन् प्रत्ययान्त अव्यय होते हैं। अतः किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है। सदा एक सा रूप रहता है। जैसे—

सः	पठितुम्	इच्छति।
सा	पठितुम्	इच्छति।
तौ	पठितुम्	इच्छतः।
ते	पठितुम्	इच्छन्ति।
ताः	पठितुम्	इच्छन्ति।
अयं	गन्तुम्	इच्छति।
इयं	गन्तुम्	इच्छति।
एतद्	गन्तुम्	इच्छति।

लिङ्ग या वचन के कारण तुमुन् प्रत्ययान्त शब्दों में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है।

धातु को गुण होता है। जैसे—

क्रुध्+तुमुन् (तुम्) = क्रोद्धुम् (क्रोध के लिए)

भुज्+तुमुन् (तुम्) = भोक्तुम् (खाने के लिए)

स्तु+तुमुन् (तुम्) = स्तोतुम् (स्तुति करने को)

जि+तुमुन् (तुम्) = जेतुम् (जीतने के लिए)

उपसर्ग सहित धातुओं के साथ भी तुमुन् प्रत्यय जुड़ते हैं, किसी प्रकार का प नहीं होता है। जैसे—

उप+लभ्+तुमुन् (तुम्) = उपलब्धुम्।

वि+ज्ञा+तुमुन् (तुम्) = विज्ञातुम्।

तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द

अद्	(तुमुन्) अत्तुम्	खाने के लिए
अस् (भव्)	भवितुम्	होने के लिए

इष्	एषितुम्	चाहने के लिए
ईक्ष्	ईक्षितुम्	देखने के लिए
कथ्	कथयितुम्	कहने के लिए
कुप्	कोपितुम्	क्रोध करने के लिए
कृ	कर्तुम्	करने के लिए
क्री	क्रेतुम्	खरीदने के लिए
क्षिप्	क्षेप्तुम्	फेंकने के लिए
गम्	गन्तुम्	जाने के लिए
आ+गम्	आगन्तुम्	आने के लिए
ग्रह्	गृहीतुम्	लेने के लिए
घ्रा	घ्रातुम्	सूंघने के लिए
चि	चेतुम्	चुनने के लिए
चिन्त्	चिन्तयितुम्	सोचने के लिए
चुर्	चोरयितुम्	चोरने के लिए
जन्	जनितुम्	पैदा होने के लिए
त्यज्	त्यक्तुम्	छोड़ने के लिए
दा	दातुम्	देने के लिए
तप्	तप्तुम्	तपने के लिए
दुह्	दोग्धुम्	दुहने के लिए
दृश्	द्रष्टुम्	देखने के लिए
धा	धातुम्	धारण करने के लिए
नम्	नन्तुम्	झुकने के लिए
नी	नेतुम्	ले जाने के लिए
नश्	नशितुम्	नष्ट होने के लिए
नृत्	नर्तितुम्	नाचने के लिए
पच्	पक्तुम्	पकाने के लिए
पठ्	पठितुम्	पढ़ने के लिए
पा	पातुम्	पीने के लिए
प्रच्छ्	प्रष्टुम्	पूछने के लिए
ब्रू	वक्तुम्	बोलने के लिए
भक्ष्	भक्षयितुम्	खाने के लिए
भ्रम्	भ्रमितुम्	घूमने के लिए
मुच्	मोक्तुम्	छोड़ने के लिए

मुद्	मोदितुम्	प्रसन्न होने के लिए
या	यातुम्	जाने के लिए
याच्	याचितुम्	मांगने के लिए
रक्ष्	रक्षितुम्	रक्षा करने के लिए
रुद्	रोदितुम्	रोने के लिए
रुध्	रोद्धुम्	रोकने के लिए
लभ्	लब्धुम्	पाने के लिए
लिख्	लेखितुम्	लिखने के लिए
वद्	वदितुम्	बोलने के लिए
वस्	वस्तुम्	रहने के लिए
वह्	वोढुम्	ढोने के लिए
विद्	वेदितुम्	जानने के लिए
वृत्	वर्तितुम्	होने के लिए
वृध्	वर्धितुम्	बढ़ने के लिए
शक्	शक्तुम्	सकने के लिए
शी	शयितुम्	सोने के लिए
श्रु	श्रोतुम्	सुनने के लिए
सह्	सोढुम्	सहने के लिए
स्था	स्थातुम्	रुकने के लिए
स्पृश्	स्प्रष्टुम्	छूने के लिए
स्मृ	स्मर्तुम्	स्मरण के लिए
हन्	हन्तुम्	मारने के लिए
हस्	हसितुम्	हँसने के लिए
हृ	हर्तुम्	छीनने के लिए

इस प्रकार अन्य धातुओं से भी तुमुन् प्रत्ययान्त शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। उपसर्गपूर्वक शब्द भी सरलता से बन जाते हैं—

अनु+भू (भव्) तुमुन् = अनुभवितुम् (अनुभव के लिए)

उत्+भू (भव्) तुमुन् = उद्भवितुम् (पैदा होने के लिए)

अनु+गम् तुमुन् = अनुगन्तुम् (पीछे आने के लिए)

प्रति+गम् तुमुन् = प्रतिगन्तुम् (लौटने के लिए)

निर्+गम् तुमुन् = निर्गन्तुम् (निकलने के लिए)

आ+कृष् तुमुन् = आकर्ष्टुम् (आकर्षित करने के लिए)

उप+कृ तुमुन् = उपकर्तुम् (भला करने के लिए)

वि+क्री	तुमुन् = विक्रेतुम् (बेचने के लिए)
उत्+खन्	तुमुन् = उत्खनितुम् (उखाड़ने के लिए)
सम्+ग्रह्	तुमुन् = संग्रहीतुम् (संग्रह करने के लिए)
उत्+तॄ	तुमुन् = उत्तरितुम् (उत्तीर्ण होने के लिए)
वि+धा	तुमुन् = विधातुम् (करने के लिए)
वि+भज्	तुमुन् = विभक्तुम् (बांटने के लिए)
आ+रभ्	तुमुन् = आरब्धुम् (आरम्भ करने के लिए)

अभ्यास

१. "कृष्णां द्रष्टुं गमनं वरमस्ति" रेखांकित में प्रत्यय है—

(क) शतृ (ख) शानच्

(ग) ल्यप् (घ) तुमुन्

(ङ) क्त। ( )

२. भर्तृ शब्द के रूप लिखिए।

३. बध्नीयात्, भन्त्स्यसि, बधान, अबध्नाः, बध्नीयुः— इनके लकार, पुरुष एवं वचन बताइये।

४. तुमुन् प्रत्ययान्त शब्द बनाइए —

प्र+कृ, अनु+या, परि+दृश्, आ+गम्, वि+हा।

५. अनुवाद कीजिए —

गोविन्द बाजार से वस्तुएँ खरीदेगा।

वह अपना घर नहीं बेचेगा।

हम फल खाने बगीचे में जायेंगे।

तुम दोनों नहर नहीं बाँधते हो।

हम दोनों पास होने के लिए परिश्रम करेंगे।

तुम कहानी सुनने कहाँ जाओगे?

वे सब कष्ट सहने के लिए पैदा हुए हैं।

उन्हें पढ़ने के लिए विद्यालय जाना चाहिए।

खेलने के लिए गाँव के बाहर मैदान है।

□ □ □

अध्याय-२४

सूक्ति-प्रकरण

सूक्ति का अर्थ है— अच्छी उक्ति। सूक्ति एवं लोकोक्तियों की विशेष उपयोगिता है। इनके कारण भाषा में लालित्य आ जाता है। संस्कृत साहित्य में सूक्ति एवं लोकोक्तियों का भण्डार भरा हुआ है। कुछ चुनी हुई सूक्तियों को यहाँ अर्थ सहित दिया जा रहा है-

अति सर्वत्र वर्जयेत्।
(ज्यादती हर स्थान पर बुरी होती है) अति का हर स्थान पर त्याग करना चाहिए।

अजीर्णे भोजनं विषम्।
(अजीर्ण होने पर भोजन जहर हो जाता है)

अर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
(अध जल गगरी छलकत जाय)

धातु-रूप (चुरादिगण)

चुर् (चुराना)

(परस्मैपद)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरय	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

इस प्रकार चुरादिगण की अन्य परस्मैपदी धातुओं व लकारों के रूप बनाये जा सकते हैं।

कथ् (कहना)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्र. पु.	कथ+यति = कथयति (वह कहता है)	कथ+यतः = कथयतः (वे दो कहते हैं)	कथ+यन्ति = कथयन्ति (वे सव कहते हैं)
म. पु.	कथ+यसि = कथयसि (तुम कहते हो)	कथ+यथः = कथयथः (तुम दोनों कहते हो)	कथ+यथ = कथयथ (तुम सव कहते हो)
उ. पु.	कथ+यामि = कथयामि (मैं कहता हूँ)	कथ+यावः = कथयावः (हम दोनों कहते हैं)	कथ+यामः = कथयामः (हम सव कहते हैं)

लोट्

प्र. पु.	कथ+यतु = कथयतु (वह कहे)	कथ+यताम् = कथयताम् (वे दोनों कहें)	कथ+यन्तु = कथयन्तु (वे सब कहें)
म. पु.	कथ+य = कथय (तुम कहो)	कथ+यतम् = कथयतम् (तुम दोनों कहो)	कथ+यत = कथयत (तुम सव कहो)
उ. पु.	कथ+यानि = कथयानि (मैं कहूँ)	कथ+याव = कथयाव (हम दोनों कहें)	कथ+याम = कथयाम (हम सव कहें)

लङ्

(धातु के पूर्व 'अ' लगेगा)

प्र. पु.	अ+कथ+यत् = अकथयत् (उसने कहा)	अकथ+यताम् = अकथयताम् (उन दोनों ने कहा)	अकथ+यन = अकथयन (उन सबने कहा)

म. पु.	अ+कथ+यः = अकथयः (तुमने कहा)	अकथ+यतम् = अकथयतम् (तुम दोनों ने कहा)	अकथ+यत = अकथयत (तुम सबने कहा)
उ. पु.	अकथ+यम् = अकथयम् (मैंने कहा)	अकथ+याव = अकथयाव (हम दोनों ने कहा)	अकथ+याम = अकथयाम (हम सबने कहा)

लृट्

प्र. पु.	कथ+यिष्यति = कथयिष्यति (वह कहेगा)	कथ+यिष्यतः = कथयिष्यतः (वे दोनों कहेंगे)	कथ+यिष्यन्ति = कथयिष्यन्ति (वे सब कहेंगे)
म. पु.	कथ+यिष्यसि = कथयिष्यसि (तुम कहोगे)	कथ+यिष्यथः = कथयिष्यथः (तुम दोनों कहोगे)	कथ+यिष्यथ = कथयिष्यथ (तुम सब कहोगे)
उ. पु.	कथ+यिष्यामि = कथयिष्यामि (मैं कहूंगा)	कथ+यिष्यावः = कथयिष्यावः (हम दोनों कहेंगे)	कथ+यिष्यामः = कथयिष्यामः (हम सब कहेंगे)

विधिलिङ्

प्र. पु.	कथ+येत् = कथयेत् (उसे कहना चाहिए)	कथ+येताम् = कथयेताम् (उन दोनों को कहना चाहिए)	कथ+येयुः = कथयेयुः (उन्हें कहना चाहिए)
म. पु.	कथ+येः = कथयेः (तुम्हें कहना चाहिए)	कथ+येतम् = कथयेतम् (तुम दोनों को कहना चाहिए)	कथ+येत = कथयेत (तुम सब को कहना चाहिए)
उ. पु.	कथ+येयम् = कथयेयम् (मुझे कहना चाहिए)	कथ+येव = कथयेव (हम दोनों को कहना चाहिए)	कथ+येम = कथयेम (हमें कहना चाहिए)

प्रत्यय ज्ञान (तव्यत्)

'चाहिए' अर्थ के लिए 'तव्यत्' प्रत्यय होता है।

'तव्यत्' का 'तव्य' शेष रहता है।

धातु से तव्यत् प्रत्यय लगाने का सरल उपाय यह है कि तुमुन् प्रत्यय वाले श से 'तुम्' हटाकर 'तव्य' लगा दीजिए। जैसे— 'पठितुम्'।

यहाँ 'तुम्' के स्थान पर तव्य लगा दीजिए—पठितव्यः।

इसके तीनों लिङ्गों के रूप चलते हैं। (कर्मवाच्य में)

पुंल्लिंग—पठितव्यः—(राम शब्द की तरह)

स्त्रीलिंग—पठितव्या—(रमा शब्द की तरह)

(भाववाच्य में केवल नपुंसकलिङ्ग तथा एकवचन ही होगा)

ल्युट् (अन्) प्रत्यय

इस प्रत्यय से नपुंसकलिंग के संज्ञा शब्द बनते हैं (कभी-कभी जब शब्द से कर्ता का बोध होता है तब स्त्रीलिङ्ग और पुंल्लिङ्ग शब्द भी बनते हैं)

गम् = ल्युट् (अन्) गमनम्

पा = ल्युट् (अन्) पानम्

गै = ल्युट् (अन्) गायनम्

आस् = ल्युट् (अन्) आसनम्

यहाँ नपुंसकलिङ्ग के रूप दिये जा रहे हैं—

धातु	रूप	अर्थ
अस्	भवितव्यम्	होना चाहिए
ईक्ष्	ईक्षितव्यम्	देखना चाहिए
कथ्	कथयितव्यम्	कहना चाहिए
कुप्	कोपितव्यम्	क्रोधित होना चाहिंए
कृ	कर्तव्यम्	करना चाहिए
गम्	गन्तव्यम्	जाना चाहिए
चि	चेतव्यम्	चुनना चाहिए
जन्	जनितव्यम्	पैदा होना चाहिए
ज्ञा	ज्ञातव्यम्	जानना चाहिए
त्यज्	त्यक्तव्यम्	छोड़ना चाहिए
दा	दातव्यम्	देना चाहिए
दृश्	द्रष्टव्यम्	देखना चाहिए
नम्	नन्तव्यम्	झुकना चाहिए
पच्	पक्तव्यम्	पकाना चाहिए
पठ्	पठितव्यम्	पढ़ना चाहिए
प्रच्छ्	प्रष्टव्यम्	पूछना चाहिए
भू	भवितव्यम्	होना चाहिए
मुच्	मोक्तव्यम्	छोड़ना चाहिए
मुद्	मोदितव्यम्	प्रसन्न होना चाहिए
रक्ष्	रक्षितव्यम्	रक्षा करनी चाहिए
लभ्	लब्धव्यम्	प्राप्त करना चाहिए
लिख्	लेखितव्यम्	लिखना चाहिए

श्रु	श्रोतव्यम्	सुनना चाहिए
सेव्	सेवितव्यम्	सेवा करना चाहिए
स्था	स्थातव्यम्	ठहरना चाहिए
स्वप्	स्वप्तव्यम्	सोना चाहिए
हस्	हसितव्यम्	हँसना चाहिए
हन्	हन्तव्यम्	मारना चाहिए

अपठित पद्य

पिता धर्मः पिता स्वर्गः पिता हि परमं तपः।
पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः॥

अर्थात्—जन्म देने वाला पिता ही श्रेष्ठ धर्म है, पिता ही स्वर्ग है, पिता ही परम तप है। पिता के प्रसन्न हो जाने पर सभी प्रसन्न हो जाते हैं।

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते॥

अर्थात्—इस पृथ्वी पर तीन रत्न हैं— जल, अन्न और अच्छी वाणी। मूर्ख लोग पत्थर के रंग-बिरंगे टुकड़ों को रत्न कहते हैं।

गगनमिव नष्टतारं शुष्कमिव सरः श्मशानमिव रौद्रम्।
प्रियदर्शनमपि रूक्षं भवति गृहं धनविहीनस्य॥

अर्थात्—धनहीन व्यक्ति का अत्यन्त सुन्दर घर धन के अभाव में तारा रहित आकाश म··ल की तरह सूना, सूखे हुए तालाब के समान रूखा और भयानक मरघट के समान लगता है।

जीर्यन्ते जीर्यतः केशाः दन्ताः जीर्यन्ति जीर्यतः।
चक्षुः श्रोत्रे च जीर्येते तृष्णैका तरुणायते॥

अर्थात्—वृद्ध होने पर मनुष्य के केश पक जाते हैं। दांत जीर्ण होकर गिर जाते हैं। आँखें और कान भी शिथिल हो जाते हैं, लेकिन लालसा सदा युवती ही बनी रहती है। सभी इन्द्रियों के शिथिल हो जाने पर भी मनुष्य की लालसा कम नहीं होती, अधिक बढ़ती जाती है।

अपठित गद्य

भागीरथ्याः उत्तरे तीरे कपिलवस्तु नाम किमपि नगरमासीत्। तत्र शुद्धोदनो नाम नृपतिरभवत्। तस्य सिद्धार्थो नाम पुत्रः अजायत। सः राजसूनुः आसीत्। यदा सिद्धार्थः तरुणः अभवत् तदा तस्य विवाहः सञ्जातः। तस्य भार्या यशोधरा सुरूपा सुशीला च आसीत्। तयोरेकः पुत्रः अजायत। महानासीत्तस्य जन्मोत्सवः, सन्तुष्टाश्च सर्वे प्रजाजनाः तेन।

प्रश्न

१. "भागीरथ्याः.......तीरे कपिलवस्तु नगरम् आसीत्।"

रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु उचित पद है—

(क) पूर्वे (ख) दक्षिणे

(ग) पश्चिमे (घ) उत्तरे। ( )

२. शुद्धोदनस्य पुत्रः कः आसीत्?

३. सिद्धार्थस्य विवाहः कदा अभवत्?

४. सिद्धार्थस्य भार्या का आसीत्?

५. प्रजाजनाः केन सन्तुष्टाः आसन्?

अभ्यास

१. चिन्त् धातु के रूप लिखिए (परस्मैपदी)।

२. वस्, वद्, या, शुभ्, चिन्त्, घ्रा, क्री— धातुओं से तव्यत् प्रत्ययान्त शब्द बनाइए।

३. हन्तव्यम्, श्रोतव्यम्, प्रष्टव्यम्, पक्तव्यम्, चेतव्यम्— के रूप स्त्रीलिङ्ग में परिवर्तित कीजिए।

४. अनुवाद कीजिए—

उसे पढ़ना चाहिए।

तुम्हें प्रतिदिन व्यायाम करना चाहिए।

प्रत्येक भारतीय को संस्कृत पढ़ना चाहिए।

तुम्हें कक्षा प्रतिनिधि बनना चाहिए।

राम ने अपने घर में ही चोरी की।

राधा विवाह के बारे में विचार करेगी।

तुम सभी को अपने-अपने गांव जाना चाहिए।

प्रजातन्त्र में विचार-स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

स्कूल में सफाई होनी चाहिए।

सीता को आज भात पकाना चाहिए।

५. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

.........विद्या परं दैवतम् (विदेशागमन), सर्वे भवन्तु ....(सुखी)। परोपकारः.........(पुण्य)। भारतवर्षस्य पराधीनतां.........(दृश्), सः परं खिन्नोऽभवत्।

□ □ □

अध्याय-२५

सूक्ति-प्रकरण

अविवेकः परमापदां पदम्।

अर्थात्—"विवेकहीन कार्य आपत्तियों का स्थान है।" (जल्दी का काम शैतान का)।

आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया।

अर्थात्—गुरुजनों (बड़ों) की आज्ञा-पालन में कुछ भी विचार नहीं करना चाहिए।

जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।

अर्थात्—एक-एक बूँद से घड़ा भर जाता है। (बूँद-बूँद सों घट भरे)।

दीर्घसूत्री विनश्यति।

अर्थात्—आलसी नष्ट होता है।

धातुरूप

भक्ष् (खाना) उभयपदी

(आत्मनेपदी)

लट्

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयते	भक्षयेते	भक्षयन्ते
मध्यम पुरुष	भक्षयसे	भक्षयेथे	भक्षयध्वे
उत्तम पुरुष	भक्षये	भक्षयावहे	भक्षयामहे

लोट्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयताम्	भक्षयेताम्	भक्षयन्ताम्
मध्यम पुरुष	भक्षयस्व	भक्षयेथाम्	भक्षयध्वम्
उत्तम पुरुष	भक्षयै	भक्षयावहै	भक्षयामहै

लङ्

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	अभक्षयत	अभक्षयेताम्	अभक्षयन्त
मध्यम पुरुष	अभक्षयेथाः	अभक्षयेथाम्	अभक्षयध्वम्
उत्तम पुरुष	अभक्षये	अभक्षयावहि	अभक्षयामहि

लृट्

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयिष्यते	भक्षयिष्येते	भक्षयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	भक्षयिष्यसे	भक्षयिष्येथे	भक्षयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	भक्षयिष्ये	भक्षयिष्यावहे	भक्षयिष्यामहे

विधिलिङ्

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	भक्षयेत	भक्षयेयाताम्	भक्षयेरन्
मध्यम पुरुष	भक्षयेथाः	भक्षयेयाथाम्	भक्षयेध्वम्
उत्तम पुरुष	भक्षयेय	भक्षयेवहि	भक्षयेमहि

इस प्रकार चुरादिगण आत्मनेपदी अन्य धातुओं के रूप भी बनाये जा सकते हैं।

त्यय-ज्ञान (अनीयर्)

'चाहिए' अर्थ के लिए 'अनीयर्' प्रत्यय होता है।

'अनीयर्' का 'अनीय' शेष रहता है। जैसे—

पठ्+अनीयर् [अनीय] = पठनीयः [पढ़ना चाहिए]।

तीनों लिङ्गों में रूप बनते हैं।

पुंल्लिङ्ग में 'राम' की तरह रूप चलते हैं।

स्त्रीलिङ्ग में 'रमा' की तरह रूप चलते हैं।

नपुंसकलिङ्ग में 'फल' की तरह रूप चलते हैं।

अनीयर् प्रत्ययान्त शब्द (नपुंसकलिंग)

धातु	पद	धातु	पद
पठ्	पठनीयम्	हस्	हसनीयम्
भू	भवनीयम्	वद्	वदनीयम्
अर्च्	अर्चनीयम्	रक्ष्	रक्षणीयम्
गम्	गमनीयम्	दृश्	दर्शनीयम्
पच्	पचनीयम्	पा	पानीयम्
नम्	नमनीयम्	स्था	स्थानीयम्
जि	जयनीयम्	क्रीड्	क्रीडनीयम्
त्यज्	त्यजनीयम्	चर्	चरणीयम्
भक्ष्	भक्षणीयम्	भज्	भजनीयम्
नी	नयनीयम्	क्रन्द्	क्रन्दनीयम्
गै	गानीयम्	तृ	तरणीयम्
वस्	वसनीयम्	हृ	हरणीयम्

श्रु	श्रवणीयम्	स्वप्	स्वपनीयम्
लभ्	लभनीयम्	हन्	हननीयम्
सेव्	सेवनीयम्	दुह	दोहनीयम्
सह्	सहनीयम्	दा	दानीयम्
वृध्	वर्धनीयम्	नृत्	नर्तनीयम्
मुद्	मोदनीयम्	सेव्	सेवनीयम्
यत्	यतनीयम्	जन्	जननीयम्
चि	चयनीयम्	शक्	शकनीयम्
प्रच्छ्	प्रच्छनीयम्	लिख्	लेखनीयम्
स्पृश्	स्पर्शनीयम्	सृज्	सर्जनीयम्
मुच्	मोचनीयम्	रुध्	रोधनीयम्
भुज्	भोजनीयम्	कृ	करणीयम्
ज्ञा	ज्ञानीयम्	चुर्	चोरणीयम्
कथ्	कथनीयम्	चिन्त्	चिन्तनीयम्
गण्	गणनीयम्	पाल्	पालनीयम्

इस प्रकार अन्य धातुओं से भी अनीयर् प्रत्यय जोड़कर शब्द रूप बनाए जा सकते हैं।

अपठित पद्य

गौरवं प्राप्यते दानान्न तु वित्तस्य संचयात्।
स्थितिरुच्चैः पयोदानां पयोधीनामधः स्थितिः ॥

अर्थात्—दान से गरिमा बढ़ती है, न कि धन संचय करने से। दान से प्रसिद्धि प्राप्त होती है। बादलों का दान के कारण उच्च स्थान है और संचय-वृत्ति के कारण समुद्र का स्थान नीचे की ओर है।

वाचयति नान्यलिखितम्
लिखितमनेनापि वाचयति नान्यः।
अयमपरोऽत्र विशेषः
स्वं लिखितं स्वयं न वाचयति॥

अर्थात्—अन्य व्यक्ति का लिखा हुआ नहीं वांच सकता है और न इसके द्वारा लिखा हुआ दूसरा ही वांच सकता है। यह और भी बढ़कर बात है कि स्वयं का लिखा हुआ ही स्वयं नहीं वांच पाता है (यह हास्य श्लोक है)

हा हा पुत्रक! नाधीतं सुगतैतासु रात्रिपु।
तेन त्वं विदुषां मध्ये पङ्के गौरिव सीदसि॥

अर्थात्— (कोई पिता अपने पुत्र से कहता है) हे पुत्र! सुख से व्यतीत होने वाली रातों में तुमने पढ़ाई नहीं की। जिसके फलस्वरूप तुम विद्वानों की सभा में दु:खित होते हो, जिस तरह गाय कीचड़ में फंसकर दु:खी होती है।

अपठित गद्य

प्रजातन्त्रं लोकतन्त्रं वा प्रजाभि: प्रजानां शासनं निरूपयति। आधुनिकयुगे प्रजातन्त्रस्य बहु-विकसितं स्वरूपं निर्मितमेव। प्रजातन्त्र-विधानस्य विकासः प्रधानतः इंगलैण्डदेशवासिभिः मध्ययुगे सम्पादितः। प्रजातन्त्रे बहुगुणाः सन्ति। तथा हि प्रत्येकं जनः सर्वोच्चं पदं प्राप्तुमर्हति, यदि केवलं स योग्यो भवति। अत एव स्वस्मिन् योग्यता आधेया इति विचारः सर्वेषामभ्युदयाय प्रवर्तते। वयमेव स्वकीये देशे सुशासनस्य व्यवस्थापका इति भवति आनन्दकारणम्। भारतमेव स एक देशो, यत्र विश्वस्य समधिका जनाः प्रजातन्त्र-शासनसूत्रेण निबद्धाः सन्ति।

प्रश्न

1. प्रजातन्त्र से क्या तात्पर्य है?
2. प्रजातन्त्र का आरम्भ कहाँ से हुआ?
3. प्रजातन्त्र के कौन से गुण हैं?
4. किस देश में सर्वाधिक जन प्रजातन्त्र शासन में हैं?

हीयते हि मतिस्तात! हीनैः सह समागमात्।
समैश्च समतामेति विशिष्टैश्च विशिष्टताम्॥

अर्थात्—नीच व्यक्ति के साथ रहने से बुद्धि नीच हो जाती है। बराबर वाले की संगति से बुद्धि बराबर होती है और स्वयं से अधिक बुद्धि वाले के साथ रहने से बुद्धि उत्तम हो जाती है। (जैसी संगति वैसा प्रभाव)।

गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥

अर्थात्—गुणियों में गुण, गुण ही रहते हैं, परन्तु वे ही गुण गुणहीन के पास पहुँच कर दोष हो जाते हैं। नदियाँ मीठे जल वाली होती हैं, पर वे ही समुद्र में पहुँचकर पीने योग्य नहीं रह जाती हैं।

कहानी-लेखन

कहानी-लेखन भाषा-शिक्षण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण विधा है। सामान्यतः कहानी सुनने व पढ़ने की ओर बालक की सहज प्रवृत्ति होती है। वह सुनी हुई कहानियों को अपने घर व साथियों के बीच दुहराने की लालसा रखता है।

हिन्दी में सुनी या पढ़ी हुई कहानियों को वह लिखने की ओर प्रवृत्त होता है तथा इनके आधार पर अन्य कहानियों की रचना भी चाहता है।

श्रु	श्रवणीयम्	स्वप्	स्वपनीयम्
लभ्	लभनीयम्	हन्	हननीयम्
सेव्	सेवनीयम्	दुह्	दोहनीयम्
सह	सहनीयम्	दा	दानीयम्
वृध्	वर्धनीयम्	नृत्	नर्तनीयम्
मुद्	मोदनीयम्	सेव्	सेवनीयम्
यत्	यतनीयम्	जन्	जननीयम्
चि	चयनीयम्	शक्	शकनीयम्
प्रच्छ्	प्रच्छनीयम्	लिख्	लेखनीयम्
स्पृश्	स्पर्शनीयम्	सृज्	सर्जनीयम्
मुच्	मोचनीयम्	रुध्	रोधनीयम्
भुज्	भोजनीयम्	कृ	करणीयम्
ज्ञा	ज्ञानीयम्	चुर्	चोरणीयम्
कथ्	कथनीयम्	चिन्त्	चिन्तनीयम्
गण्	गणनीयम्	पाल्	पालनीयम्

इस प्रकार अन्य धातुओं से भी अनीयर् प्रत्यय जोड़कर शब्द रूप बनाए जा सकते हैं।

अपठित पद्य

गौरवं प्राप्यते दानान्न तु वित्तस्य संचयात्।
स्थितिरुच्चैः पयोदानां पयोधीनामधः स्थितिः ॥

अर्थात्—दान से गरिमा बढ़ती है, न कि धन संचय करने से। दान से प्रसिद्धि प्राप्त होती है। बादलों का दान के कारण उच्च स्थान है और संचय-वृत्ति के कारण समुद्र का स्थान नीचे की ओर है।

वाचयति नान्यलिखितम्
लिखितमनेनापि वाचयति नान्यः।
अयमपरोऽत्र विशेषः
स्वं लिखितं स्वयं न वाचयति॥

अर्थात्—अन्य व्यक्ति का लिखा हुआ नहीं बांच सकता है और न इसके द्वारा लिखा हुआ दूसरा ही बांच सकता है। यह और भी बढ़कर बात है कि स्वयं का लिखा हुआ ही स्वयं नहीं बांच पाता है (यह हास्य श्लोक है)

हा हा पुत्रक! नाधीतं सुगतैतासु रात्रिषु।
तेन त्वं विदुषां मध्ये पङ्के गौरिव सीदसि॥

अर्थात्— (कोई पिता अपने पुत्र से कहता है) हे पुत्र! सुख से व्यतीत होने वाली रातों में तुमने पढ़ाई नहीं की। जिसके फलस्वरूप तुम विद्वानों की सभा में दुःखित होते हो, जिस तरह गाय कीचड़ में फंसकर दुःखी होती है।

अपठित गद्य

प्रजातन्त्रं लोकतन्त्रं वा प्रजाभिः प्रजानां शासनं निरूपयति। आधुनिकयुगे प्रजातन्त्रस्य बहु-विकसितं स्वरूपं निर्मितमेव। प्रजातन्त्र-विधानस्य विकासः प्रधानतः इंगलैण्डदेशवासिभिः मध्ययुगे सम्पादितः। प्रजातन्त्रे बहुगुणाः सन्ति। तथा हि प्रत्येकं जनः सर्वोच्चं पदं प्राप्तुमर्हति, यदि केवलं स योग्यो भवति। अत एव स्वस्मिन् योग्यता आधेया इति विचारः सर्वेषामभ्युदयाय प्रवर्तते। वयमेव स्वकीये देशे सुशासनस्य व्यवस्थापका इति भवति आनन्दकारणम्। भारतमेव स एक देशो, यत्र विश्वस्य समधिका जनाः प्रजातन्त्र-शासनसूत्रेण निबद्धाः सन्ति।

प्रश्न

1. प्रजातन्त्र से क्या तात्पर्य है?
2. प्रजातन्त्र का आरम्भ कहाँ से हुआ?
3. प्रजातन्त्र के कौन से गुण हैं?
4. किस देश में सर्वाधिक जन प्रजातन्त्र शासन में हैं?

हीयते हि मतिस्तात! हीनैः सह समागमात्।
समैश्च समतामेति विशिष्टैश्च विशिष्टताम्॥

अर्थात्—नीच व्यक्ति के साथ रहने से बुद्धि नीच हो जाती है। बराबर वाले की संगति से बुद्धि बराबर होती है और स्वयं से अधिक बुद्धि वाले के साथ रहने से बुद्धि उत्तम हो जाती है। (जैसी संगति वैसा प्रभाव)।

गुणाः गुणज्ञेपु गुणाः भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥

अर्थात्—गुणियों में गुण, गुण ही रहते हैं, परन्तु वे ही गुण गुणहीन के पास पहुँच कर दोष हो जाते हैं। नदियाँ मीठे जल वाली होती हैं, पर वे ही समुद्र में पहुँचकर पीने योग्य नहीं रह जाती हैं।

कहानी-लेखन

कहानी-लेखन भाषा-शिक्षण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण विधा है। सामान्यतः कहानी सुनने व पढ़ने की ओर बालक की सहज प्रवृत्ति होती है। वह सुनी हुई कहानियों को अपने घर व साथियों के बीच दुहराने की लालसा रखता है।

हिन्दी में सुनी या पढ़ी हुई कहानियों को वह लिखने की ओर प्रवृत्त होता है तथा इनके आधार पर अन्य कहानियों की रचना भी चाहता है।

संस्कृत साहित्य मनोरंजन एवं कुतूहल भरी कहानियों का भण्डार है। प्रारम्भिक शिक्षा से ही कथा-साहित्य का अध्ययन-अध्यापन कराया जाता रहा है। इन कहानियों को अपनी भाषा में लिखना ही कहानी-लेखन है।

कहानियाँ लिखने की अनेक विधाएँ हैं—

(क) सुनी या पढ़ी हुई कहानी अपने शब्दों में लिखना।

(ख) बिन्दुओं के आधार पर कहानी लिखना।

(ग) शीर्षक के आधार पर कहानी लिखना।

(घ) अन्य भाषा से संस्कृत में लिखना।

(ङ) किसी की जीवनी को कहानी के रूप में लिखना।

(च) सत्य घटनाओं को कहानी का रूप देना।

(छ) कल्पना के आधार पर कहानी लिखना।

(ज) अनुकरण की प्रवृत्ति से कहानी लिखना।

कहानी का शीर्षक देने के लिए महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए—

(i) किसी प्रमुख घटना के आधार पर।

(ii) किसी प्रमुख पात्र के आधार पर।

(iii) किसी प्रमुख वृत्ति के आधार पर।

यह ध्यान रहे कि कौनसी वृत्ति, घटना या पात्र अधिक प्रभावित कर रहा है।

दीजिए

(i) अधूरे बिन्दुओं को एक से अधिक बार पढ़ें।

(ii) प्रत्येक शब्द के अर्थ को पूरी तरह समझें।

(iii) रिक्त स्थानों के लिए स्मरण या कल्पना करें।

(iv) सरल भाषा का प्रयोग करें।

(v) तारतम्य बना रहे।

पठित आधार पर

दशमस्त्वमसि

एकदा दश यात्रिणः तीर्थयात्रायै अगच्छन्। मार्गे एकां नदीं बाहुभ्यां तरन्तः परं तीरं प्राप्तवन्तः। तत्र ते परस्परं गणयितुं प्रारभन्त, परं प्रत्येकं यात्री आत्मानं विस्मृत्य गणयामास—एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः, पञ्च, षट्, सप्त, अष्टौ, नव इति। तैः परस्परं कथितम्—इति विचार्य ते क्रन्दनं अकुर्वन्। एतदन्तरे तत्र कश्चित् साधुः सम्प्राप्तः। तेषां गणनाभ्रान्तिं ज्ञात्वा सोऽहसत्। साधुः अकथयत्– रे मूर्खाः! यूयं आत्मानं विस्मृत्य गणयथ। अहं गणयामि— पश्य, एते नव, दशमस्त्वमसि।

अभ्यास

१. "तव पितृव्यः.......... नदीं प्रयास्यति।"

वाक्य में रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए सही विकल्प है—

(क) स्नातुम् (ख) स्नात्वा

(ग) स्नातः (घ) स्नातव्यम्

(ङ) स्नातवान्। ( )

२. पठ् धातु के रूप दुहराइए (पुनरावृत्ति)।

३. पठ्, लिख्, कृ, चिन्त्, रक्ष्— धातुओं के साथ तव्यत्, अनीयर्, क्त्वा, तुमुन् व क्त प्रत्यय जोड़कर प्रत्ययान्त शब्दों की सारणी बनाइए। (पुनरावृत्ति)

४. अनुवाद कीजिए—

दशरथ नाम का एक राजा था।

उसके तीन रानियाँ थीं।

उसके चार लड़के हुए।

उन लड़कों में राम सबसे श्रेष्ठ था।

राजा ने राम को वन में जाने को कहा।

राम अपनी पत्नी सीता और लक्ष्मण सहित दण्डकारण्य में गया।

लंका का राजा रावण बड़ा दुष्ट था।

वे तीन भाई थे, उनमें विभीषण धर्मात्मा था।

राम ने वानरों की सहायता से रावण पर विजय प्राप्त की।

५. रामचन्द्र के जीवन को कहानी के रूप में लिखिए (केवल दस पंक्तियाँ)

□ □ □

अध्याय-२६

सूक्ति प्रकरण

१. महान् महत्येव करोति विक्रमम्।

(शेर बादल के गरजने पर ही गरजता है)

(शक्तिशाली शक्तिशाली को देखकर पराक्रम दिखलाता है)

युक्तिः शक्तेर्गरीयसी।

(बल से बुद्धि बडी, भैंस बड़ी कि बुद्धि)

लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति?

(अन्धे को कांच दिखाना व्यर्थ है)

छिद्रेष्वनर्थाः बहुलीभवन्ति।

(गरीबी में आटा गीला)

(क्लेश में क्लेश बढ़ता ही जाता है)

प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्?

(हाथ कंगन को आरसी क्या)

न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्।

अर्थात्—"रत्न स्वयं किसी को ढूँढने नहीं जाता, उसी को सब खोजते फिरते हैं।"

भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र।

(होनी के द्वार सब जगह खुले रहते हैं।)

धातु रूप

पाल् (पालना) उभयपदी

लट् (पर.)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	पालयति	पालयतः	पालयन्ति
मध्यम पुरुष	पालयसि	पालयथः	पालयथ
उत्तम पुरुष	पालयामि	पालयावः	पालयामः

लट् (आ.)

प्रथम पुरुष	पालयते	पालयेते	पालयन्ते
मध्यम पुरुष	पालयसे	पालयेथे	पालयध्वे
उत्तम पुरुष	पालये	पालयावहे	पालयामहे

लोट् (पर.)

प्रथम पुरुष	पालयतु	पालयताम्	पालयन्तु

लोट् (आ.)

प्रथम पुरुष	पालयताम्	पालयेताम्	पालयन्ताम्

लङ् (पर.)

प्रथम पुरुष	अपालयत्	अपालयताम्	अपालयन्

लङ् (आ.)

प्रथम पुरुष	अपालयत	अपालयेताम्	अपालयन्त

लृट् (पर.)

प्रथम पुरुष	पालयिष्यति	पालयिष्यत:	पालयिष्यन्ति

लृट् (आ.)

प्रथम पुरुष	पालयिष्यते	पालयिष्येते	पालयिष्यन्ते

विधिलिङ् (पर.)

प्रथम पुरुष	पालयेत्	पालयेताम्	पालयेयुः

विधिलिङ् (आ.)

प्रथम पुरुष	पालयेत	पालयेताम्	पालयेरन्

(चुर् धातु की तरह अन्य पुरुषों के रूप चलेंगे)

अपठित पद्य

सर्पाणां च खलानां च सर्वेषां दुष्टचेतसाम्।
अभिप्राया न सिद्ध्यन्ति तेनेदं वर्तते जगत्॥

अर्थात्—सर्प, नींच एवं दुष्ट व्यक्तियों के मनोरथ पूर्णत: सफल नहीं होते हैं, अन्यथा इस संसार का अस्तित्व ही नहीं रहता।

इच्छति शती सहस्रं, सहस्री, लक्षमीहते।
लक्षाधिपस्तथा राज्यं, राज्यस्थ: स्वर्गमीहते॥

जिसके पास सौ रुपये हैं, वह हजार चाहता है और जिसके पास हजार हैं, वह लाख रुपया चाहता है और लखपति राज्य की इच्छा करता है। जिसके पास राज्य है, वह स्वर्ग की कामना करता है।

मृषा वदति लोकोऽयं ताम्बूलं मुखभूषणम्।
मुखस्य भूषणं पुंस: स्यादेकैव सरस्वती॥

यह संसार पान को मुख की शोभा असत्य ही कहता है, अर्थात् पान मुख की शोभा नहीं है। पुरुषों के मुख की शोभा तो एक सरस्वती (वाणी) ही है।

आरोग्यं परमो लाभ: सन्तुष्टि: परमं धनम्।
विश्वास: परमा ज्ञाति:, निर्वाणं परमं सुखम्॥

आरोग्य (नीरोग) परम लाभ है, सन्तोष परम धन है। विश्वास परम सम्बन्धी है तथा मोक्ष परम सुख है।

अपठित-गद्य

आंग्लशासनस्य समय आसीत्। न जाने कियन्तो देशभक्ता: भारतीया: आंग्लशासकै: शूलमारोपिता:, कियन्त: कारागारेषु निक्षिप्ता:। सत्याहिंसाव्रतिना महात्मना श्रीगान्धिना समुपदिष्टमार्गेण युद्ध्यमानान् भारतीयान् केवलं छलयितुं वा लोकलज्जया वा गौराङ्गै: प्रभुभि:

प्रान्तीयस्वराज्यं भारताय प्रदत्तम्। "पलायितस्य चौरस्य कन्थैव लाभः।" इति आमाणकमनुसृत्य महात्मना तत्स्वीकृतमपि।

प्रश्न

१. "श्रीगान्धिना" पद का उचित विशेषण है—

(क) महात्मा (ख) महात्मनः (ग) महात्मभिः (घ) महात्मना। ( )

२. देशभक्ताः कैः शूलम् आरोपिता?

३. गौरांगैः प्रान्तीयस्वराज्यं कस्मै प्रदत्तम्?

४. भारतीयान् सैनिकान् कः उपदिष्टवान्?

५. महात्मना किं स्वीकृतम्?

प्रत्यय ज्ञान (यत् प्रत्यय)

'चाहिए' अर्थ में यत् प्रत्यय होता है।

'यत्' प्रत्यय का 'य' शेष रहता है।

'यत् प्रत्यय' कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में होता है।

'कर्मवाच्य में कर्म के समान लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन होंगे।

भाववाच्य में कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है तथा क्रिया नपुंसकलिङ्ग एकवचन की होती है। जैसे—

दा+यत् = देयम् (न.) देना चाहिये (देने योग्य)

पा+यत् = पेयम् (न.) पीना चाहिये या पीने योग्य।

यत् प्रत्ययान्त शब्द (नपुं.)

चि+यत् (य) = चेयम्।

क्षि+यत् (य) = क्षेयम्।

स्था+यत् (य) = स्थेयम्।

नी+यत् (य) = नेयम्।

जि+यत् (य) = जेयम्।

उप+मा+यत् (य) = उपमेयम्।

वि+धा+यत् (य) = विधेयम्।

ध्यै+यत् (य) = ध्येयम्।

मया जलं पेयम्।

प्रयोग

ण्यत् प्रत्यय

यत् प्रत्यय के अर्थ में ही (चाहिए अर्थ में) ऋकारान्त तथा व्यञ्जनान्त धातु से ण्यत् (य) प्रत्यय होता है। इसके पूर्व धातु के अन्तिम च् और ज् को क्रमशः क् और ग् हो जाते हैं। अन्तिम स्वर तथा उपधा के अ को वृद्धि हो जाती है। उप-

के अन्य स्वरों को गुण होता है। यथा— कृ = कार्यम्, धृ = धार्यम्, ग्रह् = ग्राह्यम्, वच् = वाक्यम्, लू = लाव्यम्, भुज् = भोज्यम् इत्यादि।

कहानी लेखन

विद्यया बुद्धिरुत्तमा

कस्मिंश्चिद्.......... चत्वारो ब्राह्मणपुत्राः ....।......... त्रयः शास्त्रपारंगताः, परन्तु .... एकस्तु .... बुद्धिमान् ....। .... ते पूर्वदेशं ....। .... कतिचिद् अस्थीनि ....। एकेन .... विद्याप्रभावेण.........। .... अस्थिसंचयम् करोति ....। .... औत्सुक्याद्.........कृतः। द्वितीयेन चर्ममांसरुधिरं...........। तृतीयोऽपि......... जीवनम्।.........सुबुद्धिना एष सिंहो ....निषिद्धः परं तेन.........।.........प्रतीक्षस्व ....आरोहामि। तथाऽनुष्ठिते.........त्रयोऽपि ....व्यापादिताः।

बिन्दुओं के आधार पर

कस्मिंश्चिद् ग्रामे चत्वारो ब्राह्मणपुत्राः वसन्ति स्म। तेषां त्रयः शास्त्रपारंगताः परन्तु बुद्धिरहिताः। एकस्तु बुद्धिमान् केवलं शास्त्रविमुखः। एकदा ते उपार्जनार्थं पूर्वदेशं अगच्छन्। तैः मार्गाश्रितैः अटव्यां कतिचित् अस्थीनि दृष्टानि। एकेन अभिहितम्—एतानि मृतसत्त्वस्य अस्थीनि तिष्ठन्ति तत् विद्याप्रभावेण जीवनसहितं कुर्मः। 'अहं अस्थिसंचयम् करोमि।' इत्युक्त्वा तेन औत्सुक्यात् अस्थिसंचयः कृतः।

द्वितीयेन चर्ममांसरुधिरं संयोजितम्। तृतीयोऽपि यावज्जीवनं संचारयति, ततः सुबुद्धिना कथितम्—एष सिंहः प्रतीयते। तेन जीवनाय निषिद्धः, परं तेन अभिहितम्—धिङ् मूर्ख! नाहं विद्याया विफलां करोमि। तावत्प्रतीक्षस्व क्षणं, यावदहं वृक्षमारोहामि।' तथा अनुष्ठिते यावत्सजीवः कृतः तावत् ते त्रयोऽपि सिंहेन व्यापादिताः।

जीवनी के आधार पर

महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी १८६९......... द्वितीये......... पोरबन्दर......... कर्मचन्द गाँधी.........। मोहनदासः......... माता परमासाध्वी......... विधानशास्त्रं......... लन्दनदेशं.........। ततः अफ्रीकादेशं.........। तत्र गौराङ्गाः......... अपीडयन्।......... भृशमदूयत।......... सत्याग्रहाख्यमान्दोलनं.........। .... कारागारे.........। स्वतन्त्रतायाः समर्थकः......... नवीनयुगं.........। अन्ततः.........।

पत्र लेखन

व्यावहारिक ज्ञान के लिए पत्र-लेखन अनिवार्य है। रचना की दृष्टि से यह विधा उपयोगी है। पत्रों के माध्यम से ही विचार एवं समाचारों का आदान-प्रदान होता है। मुख्यतः पत्र तीन प्रकार के होते हैं—

(i) व्यावहारिक पत्र।

(ii) निजी पत्र।

(iii) सरकारी पत्र।

पत्र-लेखन के आवश्यक नियम

(क) पत्र लेखन में सरल भाषा होनी चाहिए।

(ख) स्पष्ट भाव हों—जिसे सहज रूप से समझा जा सके।

(ग) पाण्डित्य प्रदर्शन नहीं करना चाहिए।

(घ) संक्षिप्तता हो, किन्तु उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए।

निजी पत्र

अपने रिश्तेदारों को जो पत्र लिखे जाते हैं, वे निजी पत्र कहलाते हैं।

(क) पत्र के आरम्भ में ऊपर की ओर (दाहिने भाग में) अपना स्थान एवं तिथि (तारीख) अंकित करनी चाहिए। जैसे—

उदयपुरत:
दिनांक १७-५-९२

(ख) उसके नीचे सम्बोधन के साथ प्रणाम, नमस्कार अथवा आशीर्वाद आदि का उल्लेख होना चाहिए। जैसे—

बड़ों के लिए
- श्रीमत: पितृवर्यस्य चरणयो: सादरं प्रणति:।
- श्रीमत्या: मातुश्चरणयो: सादरं प्रणति:।
- समादरणीयस्य भ्रातुश्चरणयो: सादरं प्रणति:।
- श्रीमत् आचार्यस्य चरणयो: सादरं प्रणति:।

समान के लिए
- प्रिय मित्र हमीद! नमस्ते।
- प्रिय सखि रेणु! नमस्ते।

छोटे के लिए
- चिरायुषे रामाय स्वस्ति।
- चिरञ्जीविने सलीमाय शुभाशी:।
- सौभाग्यकांक्षिण्यै रमायै शुभाशीर्वाद:।

अपरिचित के लिए
- श्रीमान् अथवा मान्यवर या
- महोदय नमस्ते, प्रणाम: आदि।

पत्र के अन्त में नाम से पूर्व इस प्रकार लिखना चाहिए—

बड़ों के लिए
- भवदाज्ञाकारी, भवत्कृपाकांक्षी, भवतां शिष्य:,
- भवतां पुत्र:, पुत्री, भ्राता व स्वसा आदि।

समान के लिए — भवद्बन्धु:, भवदीय:, भवदीया आदि।

छोटों के लिए — शुभाकांक्षी, शुभचिन्तक: आदि।

अपरिचित के लिए — भवदीय:

(घ) कुशलता प्रदर्शन

अत्र कुशलं तत्रास्तु' या 'अत्र शं तत्रास्तु।'

(ङ) उसके बाद उद्देश्यात्मक समाचार लिखना चाहिए। जैसे—

पित्रे पत्रम्

जोधपुरतः

दिनांक ३०-३-९२

श्रीमतः पितृवर्यस्य चरणयोः

सादरं प्रणतिः।

अत्र शं तत्रास्तु। भवदीयं कृपापत्रं अधिगतम्। सम्प्रति स्वाध्याये दत्तचित्तोऽस्मि। संस्कृतस्याध्ययनं प्रति विशिष्टा प्रवृत्तिः। आशासे वार्षिकपरीक्षायां प्रथमश्रेण्यां सफलो भविष्यामि। मान्यायाः मातुश्चरणयोः मे प्रणतिर्वाच्या।

भवदाज्ञाकारी पुत्रः

राकेशः

मात्रे-पत्रम्

सीकरतः

दिनांक ११-४-१९९२

श्रीमत्याः मातुश्चरणयोः

सादरं प्रणतिः।

अत्र कुशलं तत्रास्तु। भवदीयं कृपापत्रं समधिगतम्। अस्माकं छात्रावासाधीक्षिका सरला, गम्भीरा कुशलिनी चाऽस्ति। सेयं छात्रासु स्निह्यति। यथासमयं हितान् संरक्षति। अतो हि भवत्या काऽपि चिन्ता न विधेया, परीक्षाऽनन्तरमहमागमिष्यामि। श्रीमतः पितृवर्यस्य चरणयोः प्रणतिर्वाच्या।

भवदाज्ञाकारी पुत्री

हमीदा

मित्राय पत्रम्

नागोर...

दिनांक ८-५-९२

प्रिय मित्र जॉर्ज!

सप्रणयं नमस्ते।

अत्र शं तत्रास्तु। भवत्स्नेहपत्रं प्राप्य नितरामामोदे। आगामिनि ग्रीष्मावकाशे ाजस्थानयात्रायै मतिर्विधेया। राजस्थाने जयपुर, अजमेर, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेरादीनि गराणि दर्शनीयानि। अनेकानि ऐतिहासिकानि, रम्याणि स्थानानि सन्ति। अस्मिन् प्रान्ते हाराणाप्रताप-दुर्गादासप्रभृतयः वीराः स्वतन्त्रताप्रियाः अभवन्। अत्रैव बेहारी-रैदास-दादूसदृशाः कवयः संजाताः। भक्तिमूर्तिः मीरा अत्रत्यं निधिः। आशासे भत्रागमनेन मामनुग्रहीष्यति। कुशलमन्यत्।

भवद्बन्धुः

महीपाल-गुप्तः

अभ्यास

. यत् प्रत्ययान्त शब्द बनाइए—

क्री, ज्ञा, धा, श्रु, विधा, भू।

अपनी प्रिय सखी राधा को पत्र लिखिए, जिसमें अजमेर आने का निमन्त्रण हो। (अजमेर के दर्शनीय स्थलों का संक्षिप्त विवरण)।

. अपठित गद्य का अर्थ लिखिए।

न धर्मशास्त्रं पठतीति कारणम्।

न चापि वेदाध्ययनं दुरात्मनः।

स्वभाव एवात्र तथातिरिच्यते।

यथा प्रकृत्या मधुरं गवां पयः।

. अनुवाद कीजिए—

वह घर आकर चला गया। राम पढ़ता हुआ सो गया। उसे राष्ट्र के प्रति समर्पित होना चाहिए। धातु के अन्त में प्रत्यय जोड़ना चाहिए। स्त्री का गहना लज्जा है। जो संघर्ष से जूझते हैं, वे बहादुर कहे जाते हैं। ईश्वर सभी का पालन करता है।

□□□

अध्याय-२७

सूक्ति प्रकरण

बुभुक्षितः किं न करोति पापम् ?

(भूखा क्या नहीं करता ?)

विद्या धर्मेण शोभते।

(विद्या धर्म से शोभित होती है)

संघे शक्तिः कलौ युगे।

(कलियुग में संगठन में शक्ति है)

प्रक्षालनाद् हि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम्।

(इलाज से बचाव बेहतर)

अर्थात्—कीचड़ को धोने की अपेक्षा इससे दूर रहना अच्छा है।

न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे।

(आग लगने पर कुआ खोदने से क्या लाभ ?)

पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्।

(जो तू सींचे दूध से नीम न मीठा होय)

अर्थात्—सर्पों को दूध पिलाने से केवल जहर ही बढ़ता है

शठे शाठ्यं समाचरेत् .

(जैसे को तैसा)

अर्थात्—दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना चाहिए।

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः।

(चींटी के पर निकलना)

वीरभोग्या वसुन्धरा।

(जिसकी लाठी उसकी भैंस)

निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते।

(अन्धों में काना राजा)

महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः।

(बड़े आदमी प्रकृति से मितभाषी होते हैं)

सहसा विदधीत न क्रियाम्।

(बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय)

वक्तारो दर्दुराः यत्र तत्र मौनं हि शोभते।

(मूर्खों में चुप्पी भली)

शरीरमाद्यं खलु धर्म-साधनम्।

(पहला सुख नीरोगी काया)

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।

(मीठी और रोगों को दूर करने वाली दवा का मिलना कठिन है।)

अर्थात्—हितकारी भी हो और मनोहर भी हो, ऐसा वचन दुर्लभ है।

न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते।

(विशिष्ट धर्म वालों की उम्र नहीं देखी जाती है)

अपठित पद्य

गंगा पापं शशी तापं दैन्यं कल्पतरुस्तथा।
पापं सुतापं दैन्यं च घ्नन्ति सन्तो महाशयाः॥

प्रश्न

(क) गङ्गा किं करोति?

(ख) तापं को हरति?

(ग) दैन्यं को हरति?

(घ) सन्तः किं कुर्वन्ति?

सुजीर्णमन्नं सुविचक्षणः सुतः
सुशासिता स्त्री नृपतिः सुसेवितः।
सुचिन्त्य चोक्तं सुविचार्य यत्कृतं
सुदीर्घकालेऽपि न याति विक्रियाम्॥

अर्थात्—भली-भाँति पचा हुआ अन्न, बुद्धिमान् पुत्र, सुन्दर ढंग से शासित स्त्री (पत्नी), अच्छी प्रकार सेवा किया हुआ राजा, भली प्रकार सोचकर कहा हुआ वचन और अच्छी तरह किया हुआ कार्य बहुत काल में भी निरर्थक नहीं होते, अर्थात् किसी प्रकार से भी विकार को प्राप्त नहीं होते।

प्रश्न

(क) सुजीर्णं किं निरर्थकं न भवति?

(ख) कीदृशः सुतो न याति विक्रियाम्?

(ग) सुशासिता का?

(घ) सुदीर्घकालेऽपि किं न याति विक्रियाम्?

फलं स्वेच्छालभ्यं प्रतिवनमखेदं क्षितिरुहां
पयः स्थाने-स्थाने शिशिरमधुरं पुण्यसरिताम्।
मृदुस्पर्शा शय्या सुललितलतापल्लवमयी
सहन्ते सन्तापं तदपि धनिनां द्वारि कृपणाः॥

अर्थात्—प्रत्येक वन में वृक्षों से अपनी इच्छानुसार बिना श्रम के फल प्राप्त होते

हैं। स्थान-स्थान पर पवित्र नदियों में शीतल एवं मधुर जल बहता रहता है। लताओं के कोमल पत्तों की मुलायम सेज सर्वत्र सुलभ है, फिर भी कृपण (अनुदार) धनवानों की हवेलियों के दरवाजे पर खड़े होकर कष्ट पाते रहते हैं।

प्रश्न—(क) स्वेच्छालभ्यं किम्?

(ख) शिशिरमधुरं पयः कुत्र?

(ग) सहजशय्या कथं लभ्यते?

(घ) कृपणाः कथं सन्तापं सहन्ते?

अपठित गद्य

इदं हि विज्ञानप्रधानं युगम्। सम्प्रति मानवः प्रकृतिं वशीकृत्य तां स्वेच्छया कार्येषु नियुङ्क्ते। प्रकृतिः पुरुषस्य दासतामानीता इव प्रतिभाति। तथाहि वैज्ञानिकैरनेके आविष्काराः विहिताः। मानवजातेः हिताहितम् अपश्यद्भिः वैज्ञानिकैः राजनीतिविज्ञैर्वा परमाणुशक्तेः अस्त्रनिर्माणे एवं विशेषतः उपयोगो विहितः। तदुत्पादितं च लोकध्वंसकार्यम् अतिघोरं निर्घृणं च। अयं च न विज्ञानस्य दोषः न वा परमाणुशक्तेरपराधः। पुरुषापराधः खलु एषः।

प्रश्न—(क) इदं युगं कीदृशम्?

(ख) कैः आविष्काराः विहिताः?

(ग) परमाणुशक्तेः कस्मिन् उपयोगो विहितः?

(घ) कः पुरुषापराधः?

प्रत्यय-ज्ञान (मतुप्)

'वाला' अर्थ को व्यक्त करने के लिए 'मतुप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

'मतुप्' प्रत्यय प्रथमान्त में होता है।

'मतुप्' का 'मत्' शेष रहता है।

यह 'मत्वर्थक' या 'मत्वर्थीय प्रत्यय' कहलाता है।

पुंल्लिङ्ग में 'धीमत्' शब्द की तरह रूप चलेंगे।

मतुप् प्रत्ययान्त शब्द

मति+मतुप् (मत्) = मतिमत् (बुद्धिवाला)

श्री+मतुप् (मत्) = श्रीमत् (लक्ष्मीवाला)

धी+मतुप् (मत्) = धीमत् (बुद्धिवाला)

आयुष्+मतुप् (मत्) = आयुष्मत् (आयुवाला)

जिन शब्दों के अन्त में अथवा अन्तिम वर्ण के पूर्व में 'अ' या 'आ' या 'म्' होता है तो मतुप् के 'म्' के स्थान पर 'व' हो जाता है।

विद्या+मतुप् (मत् = वत्) विद्यावत् (विद्यावाला)

लक्ष्मी+मतुप् (मत् = वत्) लक्ष्मीवत् (लक्ष्मीवाला)

बल+मतुप् (मत् = वत्) बलवत् (बलवाला)

कुछ अपवाद भी हैं—जैसे भूमि, कृमि, ऊर्मि, आदि।

जिस शब्द के अन्त में वर्गों के प्रथम चार वर्णों में से पूर्व में कोई हो तो 'मतुप्' के 'म' को 'व' हो जाता है जैसे—

सुहृद्+मतुप् (मत् = वत्) सुहृद्वत् (सुहृदवाला)

स्त्रीलिङ्ग में नदी की तरह रूप चलते हैं—

मतिमती, श्रीमती, धीमती, आयुष्मती, विद्यावती व लक्ष्मीवती आदि।

नपुंसकलिङ्ग में जगत् शब्द की तरह रूप चलते हैं।

इनि प्रत्यय

'वाला' अर्थ को व्यक्त करने के लिए अकारान्त शब्दों के साथ 'इनि' प्रत्यय किया जाता है।

'इनि' का 'इन्' शेष रहता है।

पुंल्लिंग में 'शशिन्' की तरह रूप चलते हैं।

स्त्रीलिङ्ग में 'नदी' की तरह रूप चलते हैं।

नपुंसकलिङ्ग में 'गुणिन्' की तरह रूप चलते हैं।

इनि प्रत्ययान्त शब्द

सुख+इनि (इन्) = सुखिन् (सुखवाला)

गुण+इनि (इन्) = गुणिन् (गुणवाला)

पाप+इनि (इन्) = पापिन् (पाप वाला)

माला+इनि (इन्) = मालिन् (माला वाला)

धन+इनि (इन्) = धनिन् (धन वाला)

वीणा+इनि (इन्) = वीणिन् (वीणा वाला)

क्तिन् प्रत्यय

यह प्रत्यय स्त्रीलिंग का वाचक बन जाता है। इससे बनने वाले पद भाववाचक संज्ञा के बोधक भी होते हैं।

गै = क्तिन् (ति) गीतिः

कृ = क्तिन् (ति) कृतिः

स्तु+क्तिन् (ति) स्तुतिः

चि+क्तिन् (ति) चितिः

पत्र-लेखन

(विद्यालय सम्बन्धी)

विद्यालय के प्रधान को लिखे जाने वाले पत्रों की प्रणाली कुछ भिन्न है।

(क) आरम्भ में स्थान एवं दिनाङ्क नहीं लिखा जाता है।

(ख) पत्र के अन्त में अपने नाम के नीचे पता आदि लिखना चाहिए।

(ग) नाम के बायीं ओर तिथि का उल्लेख करना चाहिए।

(घ) आरम्भ में जिसे पत्र लिखा जा रहा हो—उस पद का उल्लेख किया जाता है। पद के नीचे संस्था का नाम होगा।

(ङ) सम्बोधन के लिए—मान्यवर! सम्माननीय! महोदय! आदि का उल्लेख किया जाता है।

अवकाश-प्रार्थना-पत्रम्

(१)

श्रीमन्तः प्रधानाध्यापकाः महोदयाः
राजकीय-उच्च-माध्यमिक विद्यालयः, चूरू

मान्यवर!

सविनयं निवेदनमस्ति—अहं ज्वरेण पीडितोऽस्मि। अतो विद्यालयमागन्तुं न शक्नोमि। कृपया दिनत्रयस्यावकाशं स्वीकृत्य मामनुग्रहीष्यन्ति।

भवतां शिष्यः
राधागोविन्दः बैरवा
(दशमकक्षा)

दिनाङ्कः २६-७-९४

(२)

श्रीमत्यः प्रधानाध्यापिकाः महोदयाः,
श्रीपोद्दार-बालिका-विद्यालयः, फतेहपुरम्।

सम्माननीयाः,

सविनयं विनिवेद्यते यद् ज्येष्ठभगिन्याः विवाहोत्सवे व्यस्तोऽस्मि। पाणिग्रहणसंस्कारस्य तिथिः २०-७-९४ अस्ति। अतो हि दशदिनस्यावकाशं स्वीकृत्य मामनुग्रहीष्यन्ति।

भवतीनां शिष्या
राधा
(दशमकक्षा)

दिनाङ्कः १३-७-९४

(३)

श्रीमन्तः प्रधानाध्यापकाः महोदयाः
राजकीय-उच्च-माध्यमिक-विद्यालयः,
बीकानेरम्।

माननीयाः!

सविनयं निवेद्यते—यदहं नवमकक्षायां प्रविष्टोऽस्मि। मम पिता सामान्य-कर्मकरः।

तेषां वेतनं प्रतिमासं शतत्रयमेव। वयं पञ्चभ्रातरः। अतो हि शिक्षणशुल्कं प्रदातुमशक्तोऽस्मि
शिक्षणशुल्कमुक्ति–प्रार्थनामङ्गीकृत्य मामनुग्रहीष्यन्ति श्रीमन्तः।
दिनांक: १०-८-९४

भवतां शिष्य
अब्दुलसत्ता
(नवमकक्षा 'ब' भागः

निबन्ध-लेखन

रचना की दृष्टि से निबन्ध उपयोगी विधा है। निबन्ध, प्रबन्ध, रचना, लेख आदि सभी समानार्थक हैं। किसी विषय पर अपने विचारों एवं भावों को क्रमबद्ध सुन्दर भाषा में लिखने को निबन्ध कहते हैं। मुख्यतः निबन्ध तीन प्रकार के होते हैं—

(i) वर्णनात्मक निबन्ध।
(ii) कल्पनात्मक निबन्ध।
(iii) विवरणात्मक निबन्ध।

इनके अतिरिक्त आख्यान, आलोचना, विचार आदि अनेक भेद हैं।

(क) निबन्ध के शीर्षक पर मनन करें।
(ख) सम्बन्धित सामग्री का संकलन करें।
(ग) निबन्ध को तीन भागों में बांटना चाहिए—(१) प्रस्तावना (२) विवेचन और (३) उपसंहार।
(घ) प्रस्तावना में लक्षण व महत्त्व का प्रतिपादन कीजिए।
(ङ) विवेचन में गुण, दोष, स्थिति आदि का विवरण दीजिए।
(च) उपसंहार में उपयोगिता व प्रभाव का उल्लेख कीजिए।
(छ) भाषा सरल हो।
(ज) अनावश्यक विस्तार न हो।

आरम्भ में दस पंक्तियों वाले निबन्ध से अभ्यास कीजिये।

अस्माकं देशः

अस्माकं देशस्य नाम 'भारतम्' अस्ति।
अस्मिन् देशे पुरा 'भरत' नामको राजा बभूव।
तस्य सम्बन्धादस्य नाम 'भारतम्' जातम्।
उत्तरस्यां दिशि हिमालयः पर्वतः शोभते।
अन्यासु दिक्षु समुद्राः इमं रक्षन्ति।
अयं बहुषु प्रान्तेषु विभक्तः।
अत्र बहूनि नगराणि स्थानानि च सन्ति।

अयं स्वतन्त्र-देशः, अत्र अनेकधर्मावलम्बिनो जनाः सानन्दं वसन्ति।
अत्रत्याः जनाः सरलाः धर्मप्रियाः वीराः कर्मपरायणाः सन्ति।
सर्वे देशमिमं स्वगौरवं मन्यन्ते।
इस प्रकार छोटे-छोटे वाक्य लिखकर रचना के विकास की ओर अग्रसर होइए।

अस्माकं विद्यालयः

अस्माकं विद्यालयो नगरात् बहिः रमणीये स्थाने विद्यते।
सर्वे जनाः अस्य भवनस्य विशालतां रमणीयतां च प्रशंसन्ति।
विद्यालयं परितः रम्यमुपवनमस्ति।
विद्यालये विंशतिसंख्याका अध्यापकाः सन्ति।
ते सस्नेहं अस्मान् पाठयन्ति।
विद्यालयस्य छात्राः प्रतिभाशालिनः मर्यादाप्रियाश्च सन्ति।
छात्राः न केवलमध्ययने एव कुशला भवन्ति, प्रत्युत ते क्रीडने, प्रतियोगितासु, भाषणे, लेखने च योग्यतां प्रदर्श्य पुरस्काराणि लभन्ते।
छात्राणां स्वास्थ्य-संवर्धनाय व्यायामस्य सुन्दरः प्रबन्धोऽस्ति।
अस्माकं विद्यालयः आदर्शप्रतीकोऽस्ति।

अपठित गद्य

एकदा राजा दुष्यन्तो मृगयायै वने भ्रमति स्म। तत्र कञ्चन मृगमनुसरन् सः कण्वर्षेः श्रमसमीपम् समायात्। यावत् राजा मृगे बाणं क्षिपति तावत् कश्चित् आश्रमवासी तं वारयत्–"अहो राजन्! अयमाश्रममृगः, एनं हन्तुं भवान् नार्हसि। राजा रथादवतीर्य श्रमवासिनञ्च प्रणम्यावदत्, अयमाश्रममृगः इति अहं न जानामि। एनं न हनिष्यामि।

प्रश्न

"तावत् कश्चित् आश्रमवासी तं न्यवारयत्" इस वाक्य को लट् लकार में बदलने पर रेखांकित पद के स्थान पर लिखा जाने वाला उचित पद होगा—

(क) निवारयेत् (ख) निवारयति
(ग) निवारयिष्यति (घ) निवारयतु। ( )

राजा मृगमनुसरन् कस्य आश्रमसमीपं समायात्?
राजा रथादवतीर्य कं प्रणम्य अवदत्?
किं राजा एनं मृगं हनिष्यति?
राजा रथात् किमर्थं अवातरत्?

अभ्यास

सूक्तियों के अर्थ बतलाइए—

अल्पविद्या विनाशकारी। इतो नष्टस्ततो भ्रष्टः। गतानुगतिको लोकः। दैवो दुर्बलघातकः। नैकत्र सर्वे गुणाः। द्रव्येण सर्वे वशाः।

२. **अपठित पद्य का भाव-विवेचन कीजिए—**

सत्यं परित्यजति मुञ्चति बन्धुवर्गं
शीघ्रं विहाय जननीमपि जन्मभूमिम्।
सन्त्यज्य गच्छति विदेशमभीष्टलोकं,
चिन्ताकुलीकृतमतिः पुरुषोऽत्र लोके॥

३. **अपने विद्यालय की प्रधानाध्यापिका को प्रार्थना-पत्र लिखिए, जिसमें पुस्तकाल की व्यवस्था के बारे में निवेदन हो।**

४. **दस पंक्तियों में निबन्ध लिखिए—**

(क) व्यायामः।

(ख) उपयोगिनः पशवः।

□□□

अध्याय-२८

सूक्ति प्रकरण

किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।

(सुन्दर आकृतियों के लिए कौन-सी वस्तु अलंकार नहीं।)

पुराणमित्येव न साधु सर्वम्।

(पुराना सब कुछ अच्छा ही हो, यह सम्भव नहीं है।)

पदं ही सर्वत्र गुणैर्निधीयते।

(गुण सर्वत्र स्थान बनाते हैं।)

भिन्नरुचिर्हि लोकः।

(सबकी अपनी-अपनी रुचि।)

प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते।

(बिना प्रयोजन के मूर्ख भी कोई कार्य नहीं करता)

अतिलोभो न कर्तव्यो लब्धं नैव परित्यजेत्।

(अति लोभ नहीं करना चाहिए, प्राप्त का त्याग नहीं करना चाहिए)

सर्वः स्वार्थं समीहते।

(सब मतलब के गरजी हैं)

विना पुरुषकारेण दैवमत्र न सिद्ध्यति।

(बिना पुरुषार्थ के भाग्य भी सफल नहीं होता)

सत्यमेव जयते नानृतम्।

(सत्य की जय होती है, झूंठ की नहीं)

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

(उदार चरित्र वालों के पृथ्वी ही परिवार है)

ननु प्रवातेऽपि निष्कम्पाः गिरयः।

(साहसी विपदाओं में अडिग रहते हैं)

तूफान के सामने पर्वत निष्कम्प रहते हैं।

अपठित पद्य

भानुः सकृद् युक्ततुरंग एव
रात्रिन्दिवं गन्धवहः प्रयाति।
शेषः सदैवाहित- भूमिभारः,
षष्ठांशवृत्तेरपि धर्म एषः॥

अर्थात्—सूर्य एक बार ही अश्वों को जोतता है, वायु रात-दिन चलता रहता है। शेषनाग सदैव पृथ्वी के भार को उठाये रहने वाला है। उपज के छठे भाग से निर्वाह करने वाले शासक का भी यही कर्त्तव्य होता है।

प्रश्न—(क) रात्रिन्दिवं कः प्रयाति?
(ख) शेषः किं करोति?
(ग) षष्ठांशभागी कः?

मद्यपस्य कुतः सत्यं, दया मांसाशिनः कुतः।
कामिनश्च कुतो विद्या, निर्धनस्य कुतः सुखम्॥

अर्थात्—शराबी सत्य नहीं बोलता है, मांसभक्षी के मन में दया नहीं होती है। कामी विद्या नहीं प्राप्त करता है और निर्धन सुख नहीं पा सकता है।

प्रश्न—(क) कस्य सत्यं नास्ति?
(ख) कस्य दया नास्ति?
(ग) को विद्यां न लभते?
(घ) निर्धनः किं न प्राप्नोति?

स जीवति यशो यस्य, कीर्तिर्यस्य सः जीवति।
अयशोऽकीर्ति-संयुक्तो जीवन्नपि मृतोपमः॥
यस्मिञ्जीवति जीवन्ति बहवः सोऽत्र जीवतु।
कुरुते किं न काकोऽपि चञ्च्वा स्वोदरपूरणम्॥

अर्थात्—संसार में वही जीता है, जिसका यश जीवित है, जिसकी कीर्ति सर्व व्याप्त है। जिसका अपयश और अकीर्ति है, वह जीता हुआ भी मरे हुए के समान है। जिसके जीने से बहुत से प्राणी अपना जीवन जी रहे हैं, उसी का जीवन सार्थक है। ऐसे तो कौआ भी अपनी चोंच से अपना पेट भरता ही है।

प्रश्न—(क) संसारे को जीवति ?

(ख) अकीर्तियुक्तस्य का गतिः ?

(ग) काकोऽपि किं कुरुते ?

अपठित-गद्य

इदं अस्माकं गुरुकुलम्! एतत् नगरात् निकटे एव वर्तते। अत्रातीव वर्तते रम्यम् उद्यानम्। अस्मिन् उद्याने नानाविधाः तरवः लताश्च सन्ति। तरुषु मधुराणि फलानि वर्तन्ते। छात्राः तरून् लताः च उदकेन सिञ्चन्ति। गुरुकुलस्य निकटे एकः सरोवरः वर्तते। सरोवरस्य उदकं अतिनिर्मलं अस्ति। अत्र शीतलः सुखदश्च वायुः वहति। सरोवरस्य तटे बालकाः कन्दुकेन क्रीडन्ति। दुष्टाः बालकाः जले पाषाणखण्डानि क्षिपन्ति।

प्रश्न

१. "अस्मिन्.........नानाविधाः तरवः लताश्च सन्ति" इस वाक्य के रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए उपयुक्त पद है—

(क) उद्यानम् (ख) उद्यानस्य

(ग) उद्याने (घ) उद्यानेषु। ( )

२. एकः सरोवरः कुत्र वर्तते ?

३. बालकाः कुत्र क्रीडन्ति ?

४. जले पाषाणखण्डानि के क्षिपन्ति ?

५. छात्राः तरून् लताश्च केन सिञ्चन्ति ?

पत्र-लेखन

कुछ पत्र ऐसे भी लिखे जाते हैं जिनके द्वारा हम सामान आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, तथा सामान मंगवा सकते हैं, या बेचने के सन्दर्भ में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार के पत्र व्यावसायिक कहलाते हैं। जैसे—

पुस्तकप्रेषणाय पत्रम्

श्रीव्यवस्थापक-महोदय,
अजमेरा बुक कम्पनी,
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर।

महोदय,

भवत्प्रकाशितं 'संस्कृत-व्याकरणम्' पुस्तकमवलोकितम्। कृपया एकादश-पुस्तकानि निम्नसंकेते वी० पी० पी० द्वारा शीघ्रमेव प्रेषणीयानि।

पूर्णसंकेत: भवदीय:
६५, नयापुरा इकरामुद्दीन:
कोटा-नगरम् (राज०) दिनांक: २५-७-९२

निमन्त्रणपत्रम्

म्मान्या: !

एतद् विज्ञाय भवन्तो हर्षं प्राप्स्यन्ति यत् भगवतो महत्यनुकम्पया मम कनिष्ठाया: ताया: 'शोभादेव्या:' पाणिग्रहणसंस्कार: अलवरवास्तव्यस्य श्रीमत: महावीरप्रसादशर्मण: त्रेण श्रीनलिनेन सह १८-२-९२ दिनांके भविष्यति।

भवन्त: सुकुटुम्बं समागत्य शुभाशीर्वादेन वर-वधूयुगलमनुग्रहीष्यन्ति।

उत्तरापेक्षी दर्शनाभिलाषी
राधेश्याम: राममोहन: राधेश्याम:
५, नया बाजार, भरतपुरम्

कथा-लेखन

निम्न बिन्दुओं के आधार पर कथाएँ लिखने का अभ्यास कीजिए—

(१)

कस्मिंश्चिद्........ देवशर्मा........ ब्राह्मण:........।........ भार्या सुतमजनयत्। स्मिन्नेव दिने नकुली नकुलम्........ मृता। सा ब्राह्मणी तं नकुलं........।........ परञ्च ततमेवाशंकते ....। एकदा........जलकुम्भमादाय........ ब्राह्मण! जलार्थम्........ कुलाद्रक्षणीय:। ब्राह्मणोऽपि........ निर्गत:। अत्रान्तरे कृष्णसर्पो........। भ्रातु:........ क्षणार्थं........ खण्डश:........। रुधिरप्लावितवदन: मातु:........ आलोक्य........ ात्मना........। इति....... जलकुम्भं चिक्षेप।

(२)

एकदा चत्वारो ब्राह्मणा:........ देशान्तरं........ निर्गता:। सर्वे ास्त्रविशारदा:.......। पुस्तकानि नीत्वा........। द्वौ पन्थानौ........ महाजनो येन गत: पन्था:। इति........। तत्र रासभ:........। द्वितीयेन........ अस्मदीयो बान्धव:। तस्य ीवायां........ पादौ:........ उष्ट्रमवलोक्य तृतीयेन........ धर्मस्य त्वरिता गति:। तुर्थेन........ "इष्टं धर्मेण योजयेत्।" रजक:........ समायात:........ प्रणष्ट:। ाचिन्नदी........ एकेन .... आगमिष्यति तत्पत्रं तारयिष्यति........ इत्युक्त्वा ारश्चिच्छेद........ कश्चन ग्राम:........।........ निमंत्रिता:। सूत्रिका........दीर्घसूत्री विनश्यति। अपर:........ मण्डका........ अतिविस्तारवितीर्णं तद् भवेन्न चिरायुषम्। तीय:........ वाटिका:........ "छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवन्ति।"........ ोकैर्हास्यमाना:........ स्वदेशं गता:।

(३)

एकस्मिन्........राजा........।........स्वभावात् दानशील:........। अलसे
सविशेषं........ दापयति स्म। तेन....... अलसशाला........। शनैः शनैः तत्र......
आगताः। मन्त्रिभिः........ कपटेन........ गृह्णन्ति। यथार्थान्........ परीक्षेमहि।......
ते नियोगपुरुषा अग्निं ज्वालयित्वा........पलायिताः। चत्वारः पुरुषाः तत्रैव........ कोऽ
धार्मिको नास्ति यद्........। चतुर्थेन........। तूष्णीं तिष्ठत। श्रुत्वा नियोगिपुरुषैः......
बहिरानीताः।

निबन्ध लेखन

परोपकार:

परेषामुपकारः इति परोपकारः। जनानां निःस्वार्थसेवा 'परोपकारः' कथ्यते।

पृथिव्यां परहितसदृशो धर्मो नास्ति।

परोपकारस्यान्तर्गतानि—विद्यादानम्, धर्मशालानिर्माणम् आर्तसेवा, पतितोद्धार समाजसेवा-प्रभृति कर्माणि सन्ति।

वेदव्यासेन कथितम्—

''परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्।''

अर्थात्—परोपकारः सर्वधर्मसारः पुण्यञ्च वर्तते। परोपकारेण मानवस्य, समाजस्य राष्ट्रस्य च लाभो भवति।

अचेतनाः (निर्जीवाः) अपि परोपकारं कुर्वन्ति। यथा—

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः
परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः,
परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥

नद्यो जलं न पिबन्ति। वृक्षाः फलानि न खादन्ति। गावः स्वयं दुग्धं न पिबन्ति किन्तु सर्वेऽपि मानवेभ्य एव ददति। अतः दीनेभ्यो धान्यम्, वस्त्रम् दातव्यम्। महर्षि-दधीचिः राजा शिविः, गौतमः, महावीरः, महात्मा गाँधी इत्यादयः सन्तः परोपकारिणः अभवन्।

अतो हि सर्वैः परोपकारः कर्तव्यः।

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्

सर्वेषु धनेषु विद्याधनं प्रधानमस्ति। विद्यायां सर्वे गुणाः निवसन्ति। मनुष्येभ्यो विद्यायाः महती आवश्यकता उपयोगिता च विद्यते। विद्या विनयं ददाति। विद्यैव कर्तव्याकर्तव्यं जानाति। विद्यया मानवः शिक्षितः, सभ्यः, आचारशीलश्च कथ्यते। उक्तञ्च-विद्याविहीनः नरः पशुतुल्यः।

विद्यया मानवः सर्वत्र पूज्यते। विद्यावतां कृते जगति किमपि न दुर्लभम्। स्वदेशे विदेशे वा विद्या मानवं मित्रवत् रक्षति। यत्र वित्तस्यापि प्रभावो विफली-भवति, तत्र विद्यायाः प्रभावः सफलीभवति। केनाऽपि कथितम्—

"विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्,
विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं,
विद्या राजसु पूज्यते नहि धनं विद्याविहीनः पशुः॥

विद्या मातेव रक्षति। पितेव हितं सम्पादयति। कान्तेव खेदमपनयति। यशः प्रसारयति, लक्ष्मीं तनोति। विद्यां कल्पलतेव सर्वं साधयति। विद्यावतां यशः सर्वत्र व्याप्नोति, न च धनवताम्। विद्याधनं सुरक्षितं धनमस्ति। यतो हि—

न चौरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥

चौरा विद्यां चोरयितुं न शक्नुवन्ति। शासकाः तामाहर्तुं न समर्थाः। भ्रातरोऽपि विभाजने असहायाः, विद्या व्ययतो वृद्धिमायाति। संसारेऽस्मिन् यः कोऽपि आत्मानं सुखिनं द्रष्टुमिच्छति तेन विद्याधनस्य संग्रहो विधेयः। यतो हि जगति विद्याधनमेव सर्वधनप्रधानम्।

सत्संगतिः

सतां सङ्गतिः सज्जनानां संगतिः सत्सङ्गतिः कथ्यते। सङ्गतिः—अर्थात् सज्जनैः सह निवासः। ये जनाः साधवः, धर्मपरायणाः, परोपकाररताः सन्ति, ते सज्जनाः कथ्यन्ते। अस्मिन् जगति सज्जनैः सह सम्मेलनं निवासो वा सत्सङ्गः, सत्सङ्गतिः सर्वेषां सुखानां कारणमस्ति। महता सौभाग्येन सतां सहवासो लभ्यते। सत्सङ्गत्या जनाः सुमार्गं गच्छन्ति। सुमार्गेण जनानामुन्नतिर्भवति। सत्सङ्गत्या सामान्य-जनोऽपि महत्त्वपदमलंकरोति। अनेक-कुमार्गगामिनोऽपि सज्जनानां सम्पर्कात् साधवो भवन्ति दुर्जनसङ्गतिः सदा परिहर्तव्या।

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालंकृतोऽपि सन्।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः॥

यथा—चन्दनसंसर्गेण वृक्षाः सुगन्धिताः भवन्ति, काचोऽपि स्वर्णसंसर्गेण दिव्यां द्युतिं दधाति, कीटाः पुष्पैः सह देवानां शिरः समारोहन्ति, तथैव कुमार्गगामिनः सज्जनैः सह सुखिनो भवन्ति। सज्जनानां मैत्री सदा वर्धनशीला भवति। तेषां सङ्गतिः सदा कर्तव्या। सत्सङ्गतिः कल्पलतेव सर्वं साधयति। उक्तञ्च—

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्,
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्,
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्॥

वयं सामाजिकाः समाजे वसामः, तत्र भिन्नरुचिर्हि लोकः, समाजेन सह सम्पर्कमप्यावश्यकम्। साधूनां जनानामेव सम्पर्केण सुखिनो भविष्यामः। अतो हि सत्सङ्गतिः विधेया।

भावनात्मकमैक्यम्

मानवो यत्र जन्म लभते तत्स्थानं तस्य राष्ट्रं कथ्यते। मानवश्चान्यराष्ट्रस्थोऽपि स्वराष्ट्रं कदापि न विस्मरति। सर्वेषां हृदये स्वराष्ट्रं प्रति समादरो भवति "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" उक्तिरियं सुप्रसिद्धा वर्तते। श्रीमदमृतवाग्भवाचार्यैः राष्ट्रलक्षणं कृतम्—

समानसंस्कृतिमतां यावती पितृपुण्यभूः।
तावतीं भुवमावृत्य राष्ट्रमेकं निगद्यते॥

यत्र मानवस्य बन्धुबान्धवा निवसन्ति, यस्यान्नजलेन शरीरपोषणं भवति तत् तस्य राष्ट्रं भवति। राष्ट्रस्योन्नत्यै राष्ट्रभक्तिभावनाया आवश्यकता वर्तते। राष्ट्रभक्ता एव राष्ट्रमुन्नतिशिखरमारोहन्ति। भारतस्येतिहासः राष्ट्रभक्तानां गाथाभिः परिपूर्णो वर्तते।

भारतीयसंस्कृतेर्वैशिष्ट्यमिदमेव वर्तते यत्सा मानवान् सर्वविधपापेभ्यो निवारयति, सर्वान् सन्मार्गमुपनयति। सर्वेषां हृदयेषु सत्यस्य, अहिंसायाः, धर्मस्य, दयायाः, धैर्यस्य त्यागस्य च सन्देशं स्थापयति विश्वबन्धुत्वस्यापि।

अस्माकं देशः परतन्त्रबन्धनान्मुक्तो जातः। विभिन्नधर्मावलम्बिनां वीराणां बलिदानैरस्माभिः स्वातन्त्र्यमधिगतम्। अस्माभिः लोकतन्त्रात्मके राष्ट्रे सम्प्रभुतासम्पन्नं नूतनं संविधानं विनिर्मितम्, स्वसंविधाने धर्मनिरपेक्षतायाः समुद्घोषणा कृता। येन वयं विश्वे समादृताः सन्तः राष्ट्रस्योन्नतिसाधने संलग्नाः।

यद्यपि अस्माकं राष्ट्रे भिन्नधर्मावलम्बिनो भिन्नजातीयाश्च जना विभिन्नप्रान्तेषु निवसन्ति तेषां समस्याश्च भिन्नाः सन्ति किन्तु राष्ट्रं तु सर्वेषामेकमेव वर्तते। एते एकत्वभावनया युक्ताः कार्यं कुर्वन्ति। इयमेकता तेषु बलमादधाति। यथा क्षुद्रतृणैः रज्जुः, जलविन्दुभिः सागरः, मृत्तिकाकणैः महापर्वतः, तन्तुसमूहैः सुदृढः पटो भवति— इत्येष एकताया महिमा वर्तते। अत एव ऋग्वेदे प्रतिपादितं यत्सर्वे जनाः एकत्वभावनया युक्ताः स्युः, तेषां मनांसि, विचाराश्च समानाः स्युः। समानया भावनया राष्ट्रियमैक्यं सुचिरं स्थापयितुं शक्यते।

प्रत्यय-ज्ञान (अण्)

अपत्यार्थ (सन्तान, पुत्र, पौत्र व वंश आदि बताने) के लिए 'अण्' प्रत्यय का प्रयोग होता है। 'अपत्य' शब्द का अर्थ है— 'सन्तान'।

'अण्' का 'अ' शेष रहता है। आदि स्वर को वृद्धि हो जाती है। जैसे—

मगध+अण् (अ) = मागधः।
वसुदेव+अण् (अ) = वासुदेवः।
मनस्+अण् (अ) = मानसः।
बन्धु+अण् (अ) = बान्धवः।

यहाँ अन्तिम 'उ' के स्थान पर 'ओ' गुण करके 'अव्' आदेश हुआ है।

यदु+अण् (अ) = यादवः।
मनु+अण् (अ) = मानवः।

रघु+अण् (अ) = राघवः।

युवन्+अण् (अ) = यौवनम्।

प्रज्ञा+अण् (अ) = प्राज्ञः।

सार्वनामिक दृष्टि से युष्मद् एवं अस्मद् सर्वनामों से भी अण् प्रत्यय होता है।

अस्मद् (मामक)+अण् = मामकः (मेरा)

युष्मद् (तावक)+अण् = तावकः (तेरा)

ष्यञ् प्रत्यय

यह स्वार्थिक प्रत्यय कहलाता है। इस प्रत्यय के जुड़ने पर अर्थ में किसी प्रकार का अन्तर नहीं होता है। 'ष्यञ्' में से 'य' शेष रहता है। शब्द के आदि स्वर को वृद्धि हो जाती है। जैसे—

अलस+ष्यञ् (य) = आलस्यम्।

समर्थ+ष्यञ् (य) = सामर्थ्यम्।

निपुण+ष्यञ् (य) = नैपुण्यम्।

सुन्दर+ष्यञ् (य) = सौन्दर्यम्।

चपल+ष्यञ् (य) = चापल्यम्।

सुख+ष्यञ् (य) = सौख्यम्।

मलिन+ष्यञ् (य) = मालिन्यम्।

मूर्ख+ष्यञ् (य) = मौर्ख्यम्।

तृच् प्रत्यय

लुट् लकार के अन्य पु० एकवचन के ता के समान किसी भी धातु से तृच् (तृ) प्रत्यय होता है। जैसे—

कृ+तृच् (तृ) कर्तृ = कर्त्ता

भृ+तृच् (तृ) भर्तृ = भर्ता

गम्+तृच् (तृ) गन्तृ = गन्ता

सोढ्+तृच् (तृ) सोढ़ृ = सोढा

अभ्यास

१. अपने पिताजी को एक पत्र लिखिए, जिसमें एक सौ रुपये धनादेश से भिजवाने की प्रार्थना हो।

२. निबन्ध लिखिए—

(क) हिमालयः

(ख) अहिंसा परमो धर्मः।

३. दानवः, शैशवः, साफल्यम्, चतुर्थः—शब्दों में प्रत्यय बताइए।

४. अनुवाद कीजिए—

धर्म जीवन का सुख है। धर्म से अर्थ मिलता है। अर्थ से इच्छाएँ पूरी होती हैं। इच्छाएँ पूरी होने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। प्रत्येक को अपना धर्म निभाना चाहिए। आचरण पहला धर्म है। धर्म के बिना जीवन व्यर्थ है। धर्म ही मनुष्यता का प्रतीक है।

□ □ □

अध्याय-२९

सूक्ति प्रकरण

असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।
(असत्य से सत्य की ओर ले जाओ, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाओ, मृत्यु से जीवन की ओर ले जाओ)

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
(जननी (माता) और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है)

साहसे श्रीः प्रतिवसति।
(हिम्मत सफलता है)

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते
(संसार में ज्ञान के समान पवित्र कुछ नहीं है)

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।
(अपनी आत्मा के विपरीत कार्य दूसरों के लिए भी मत करो)

मनुष्याः स्खलनशीलाः।
(मनुष्य गलती का पर्याय है)

सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते।
(अपयश मृत्यु से भी अधिक दुःखदायी है)

यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।
(जिसकी जैसी सूरत उसकी वैसी मूरत)

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।

(सोते हुए शेर के मुँह में हरिण स्वयं प्रवेश नहीं करते हैं)

काले दत्तं वरं ह्यल्पं अकाले बहुनापि किम् ?

(का वर्षा जब कृषि सुखाने)। असमय की वर्षा व्यर्थ है।)

इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः।

(स्वयं अपने गुणों की प्रशंसा करने से इन्द्र का भी महत्त्व घट जाता है।)

ते हि नो दिवसा गताः।

(सुख के दिन बीत गये)

महाजनो येन गतः स पन्थाः।

(बड़ों का अनुगमन उचित है)

क्षते क्षारप्रक्षेपः।

(घाव पर नमक छिड़कना)

सुखमुपदिश्यते परस्य।

(पर उपदेश कुशल बहुतेरे)

प्रत्यय ज्ञान (तरप् एवं तमप्)

दो की तुलना में एक की विशेषता बताये जाने के लिए तरप् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। 'तरप्' का तर शेष रहता है। तीनों लिंगों में रूप चलते हैं। जैसे—

लघु+तरप् (तर) = लघुतरः।

राम लक्ष्मण से सुन्दर है (रामः लक्ष्मणात् सुन्दरतरः)

महत्+तरप् (तर) = महत्तरः।

धनिन्+तरप् (तर) = धनितरः।

युवन्+तरप् (तर) = युवतरः।

दीर्घ+तरप् (तर) = दीर्घतरः।

तमप्

बहुतों में से एक का वैशिष्ट्य बताने के लिए 'तमप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। 'तमप्' का तम शेष रहता है, जैसे—

लघु+तमप् (तम) = लघुतमः।

वह सभी में श्रेष्ठ है—सः सर्वेषु श्रेष्ठतमः।

राम भाइयों में सबसे बड़ा है—रामः भ्रातृषु ज्येष्ठतमः।

महत्+तमप् (तम) = महत्तमः।

दीर्घ+तमप् (तम) = दीर्घतमः।

सुन्दर+तमप् (तम) = सुन्दरतमः।

युवन्+तमप् (तम) = युवतमः।

कथा लेखन

त्रयो धूर्ताः

एकः ब्राह्मणः स्वस्कन्धे अजम्........। मार्गे धूर्ताः........ अपहर्तुम्........। गच्छन् विप्रं प्रथमः धूर्तः........ भो ब्राह्मण ! किमिति सारमेयं........। रे मूढ ! नायम्........ ततः द्वितीयः धूर्तः........ ततः तृतीयः धूर्तः........। सः ब्राह्मणः अजं कुक्करं मत्वा........।

उपायेन सर्वं शक्यम्

एकस्मिन् कानने........ हस्ती। तं........ शृगालाः........ केनाप्युपायेन........ भोजनं भविष्यति। वृद्धशृगालेन........ स्वबुद्धेः प्रभावाद्........। सः वंचकः........ गत्वा........ उवाच—" भवादृशाः........ गौरवम्। पशुभिः........ अटवीराज्येऽभिषेक्तुम्........। तद् तथा लग्नवेला........ आगम्यताम्।........ धावन् महापंके........।........ विपत्काले........ शृगालेन........ पुच्छकावलम्बनं........ उत्तिष्ठ।........ निमग्नः........ भक्षितः।

जवाहरलालनेहरूः

भारतस्य हृदयसम्राट्........ प्रधानमन्त्री........ विभूतिरासीत्। अस्य........ १८८९........ नवम्बर........चतुर्दश........।........ पं० मोतीलालः........ ....।........इग्लेंड....... वाक्कील ....। राष्ट्रसेवायाम् ....। .... कारावासं स्वीचकार। स्वतंत्रतायाः........। १९४७ तः........ मई-मासस्य २७ तारिकापर्यन्तं........।........ दिवमगात्।

अपठित-गद्य

सर्वभाषासु संस्कृतभाषा अतिप्राचीना वर्तते। पुरा संस्कृतभाषा सर्वसाधारणानां जनानां भाषा आसीत् परं वैदेशिकशासकानां साम्राज्ये इयं भाषा ह्रासोन्मुखी बभूव। इयं भाषा सर्वभाषाणां जननी च वर्तते। ज्ञान-विज्ञान-विकासिनी-अमर-भारती पुराणनयंधर्मसाहित्यप्रकाशिनी वर्तते। इयं भाषा व्याकरण-निकष-परिष्कृता; कोमलपदान्विता अस्ति। संस्कृतोन्नतिं विना स्वतन्त्रभारतस्य प्रगतिः न भवितुमर्हति।

प्रश्न

१. "......भाषा सर्वभाषाणां जननी वर्तते" रिक्तस्थान की पूर्ति के लिए उचित पद है—

   (क) इदम् (ख) इयम्

   (ग) अयम् (घ) एतत्। ( )

२. अतिप्राचीना भाषा का ?

३. "व्याकरणनिकषपरिष्कृता" पदस्य कः अर्थः ?

४. इयं भाषा कदा ह्रासोन्मुखी बभूव ?

५. स्वतन्त्रभारतस्य प्रगतिः कां विना न भवितुमर्हति ?

संस्कृतभाषा

संस्कृतं सर्वभाषाणां जननी। परमप्राचीनाऽपि स्वदीप्त्या प्रकाशते। संस्कृतभाषा सर्वासां भाषाणां जननी अस्तीति विद्वांसः कथयन्ति। अद्यापि भारतीय-जीवने संस्कृतभाषाया अपरिमितप्रभावोऽवलोक्यते। संस्कृतं विना मानवजन्म निरर्थकमस्ति। अस्माकं महनीया संस्कृतिरस्यामेव प्रतिबिम्बिता दृश्यते। संस्कृतभाषायामेव ज्ञानविज्ञानयोर्निधिर्विद्यते। भारतीया एव न, प्रत्युत पाश्चात्याः विद्वांसोऽपि संस्कृतं प्रति श्रद्धावन्तः।

वेदाः, स्मृतयः, पुराणानि, रामायणम्, महाभारतञ्च यावन्तो वाङ्मयनिबन्धा उपलभ्यन्ते सर्वे ते संस्कृतभाषायामेव सन्ति। संस्कृतभाषायाः साहित्यं समुद्रवद् व्यापकम्; तत्र नानाविधानि काव्यरत्नानि सन्ति। संस्कृतभाषा सूक्तीनां रत्नाकरः। नैतिकी शिक्षा संस्कृतेनैव सम्भाव्यते। सम्प्रति संस्कृत-प्रचारः प्रसारो वा अपेक्षणीयः। सर्वकारेण संस्कृत-भाषाध्ययनमनिवार्यं कृतम्। अस्या उन्नतये शासकीयप्रयत्नः सम्पाद्यते। सर्वेषामस्माकं कर्तव्यमस्ति यत् वयं संस्कृतस्य प्रचारे प्रसारे प्रयत्नं कुर्याम।

अस्माकं भारतराष्ट्रम्

अस्माकं भारतीयानां देशो भारतवर्षनाम्ना प्रसिद्धः। पुरा भरतनामा महर्षिः बभूव। तस्य सम्बन्धादयं देशः भारतं कथ्यते। अस्य पूर्वस्यां ब्रह्मदेशः, दक्षिणस्यां हिन्दमहासागरः, उत्तरस्यां हिमालयः, पश्चिमायाञ्च पाकिस्तानदेशस्य भाग.। अत्र विन्ध्य-नीलगिरि-हिमालय-प्रभृतयः पर्वताः राजन्ते। पर्वतेभ्यो नद्यः प्रवहन्ति। ताः भूमिभागं शस्य-श्यामलं कुर्वन्ति।

भारतदेशो बहुषु प्रान्तेषु विभक्तः। अत्र नानाधर्मावलम्बिनो नानाभाषाभाषिणो नानावेशवन्तो निवसन्ति, परं सर्वे भारतीयाः स्वराष्ट्रं प्रति समर्पिताः। अस्माकं संविधाने धर्मनिरपेक्षता घोषिता, अतो हि सर्वे सुखिनः सन्ति। भारतस्य गौरवं सर्वप्राचीनमस्ति। सभ्यतायाः प्रथमाविर्भावः भारते एवाभूत्। अस्मिन् देशे मर्यादापुरुषो रामः, कर्मयोगी कृष्णः, अहिंसापथप्रदर्शको महावीरः, महात्मा बुद्धः, स्वातन्त्र्योपासकाः शिवाजी-प्रताप-दुर्गादास-भगतसिंह-चन्द्रशेखर-गाँधी-नेहरू-सुभाषादयः महापुरुषाः सञ्जाताः। अयं देशः १९४७ वर्षस्य अगस्तमासस्य पंचदशतारिकायां स्वतन्त्रोऽभवत्। अयं देशो मानवकल्याणाय सततं यतते। दिष्ट्याऽस्य प्रधानमन्त्री श्रीमान् पी.वी. नरसिंहरावः विश्वस्य प्रमुखनेतॄणामन्यतम आसीत्। सम्प्रति देशस्यार्थिकः, सांस्कृतिकः, सामाजिकः, औद्योगिकश्च विकासः पर्याप्तः समभूत्।

भारतस्य मानवकल्याणाय महती भावनेयं विद्यते—

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

वर्षर्तुः

ग्रीष्मानन्तरं वर्षर्तुः समायाति। अयमेव ऋतुः वर्षाकाल इत्यभिधीयते। ग्रीष्मकाले सूर्यकिरणैः प्रतप्ताः सर्वे प्राणिनः विकला भवन्ति। कुत्रापि हरीतिमा न दृश्यते, तडागाः, नद्यः, वाप्यादयः सर्वे शुष्यन्ति। वर्षाकालं दृष्ट्वा सर्वे नन्दन्ति। आकाशे नीलपयोदाः दृश्यन्ते, गर्जन्ति वर्षन्ति च। मेघेषु विद्युत् द्योतते, मनोहारीणि इन्द्रधनूंषि प्रतीयन्ते। मयूराः नृत्यन्ति, दर्दुराः भाषन्ते, पक्षिणः उड्डीयन्ते, जीवाः विवरेभ्योः बहिरागत्य विचरन्ति। वर्षाजलैः स्नाता वसुन्धरा नितरां मोदते। सर्वत्र हरीतिमा विभाति। निर्झराः मधुरं नदन्ति, नद्यः वेगेन प्रवहन्ति। वर्षाप्रभावादेव धरेयं सस्यश्यामला सजला च सञ्जायते।

वर्षाकाले सर्वे नवोत्साहेन कार्यरताः भवन्ति। सर्वेषु नवजीवनं संचरति। कृषकाणां कृते वर्षर्तुः जीवनमेव। कृषकाः स्व-स्व-क्षेत्रेषु बीजानि वपन्ति, अंकुराणि आरोपयन्ति, गीतानि गायन्ति च।

यदि समये वृष्टिर्न स्यात् तर्हि प्राणिनां जीवनं संकटग्रस्तं भवेत्। वर्षाभावात् महादुर्भिक्षमापतति। वर्षा जीवनम्, वर्षाभावः मृत्युः। वर्षाकाले मार्गाः अवरुध्यन्ते। अतिवृष्ट्या विनाशो जायते, यथा भवनानि पतन्ति, क्षेत्राणि जलप्लावितानि भवन्ति नगराणि विनष्टानि जायन्ते। इन्द्रस्य कृपयैव वर्षा यथासमयं वर्षति।

समाज-सेवा

मानवः सामाजिकः प्राणी अस्ति। समाजे परस्परं सेवाभावना अनिवार्या। अस्मिन् ॥ न कोऽपि एतादृशः मानवः, यः समाज-सेवायाः महत्त्वं न जानाति। समाजस्य सेवा मानवसेवा प्राणिसेवा वा विद्यते। समाजस्य सेवा मानवतायाः परिचायिकाऽस्ति।

ये जनाः समाजसेवां कुर्वन्ति ते सर्वाधिकं पुण्यं प्राप्नुवन्ति। समाजसेवया सेवकाः महान्तो भवन्ति महत्त्वपदं च प्राप्नुवन्ति। अनेके महापुरुषाः संजाताः ये जीवनं सेवायै समर्पितवन्तः।

समाजसेवायाः प्रकाराः विविधाः सन्ति। आर्तसेवा, दीनदया, निर्बलानां साहाय्यं, लेखनं, अध्यापनं, दिशानिर्देशनं, मैत्रीभावना, सहयोगः, धर्मशाला-विद्यालय-कूप-वापी निर्माणादीनि कार्याणि समाज-सेवाऽन्तर्गतानि सन्ति। केचन दीनेषु दयां कुर्वन्ति, अन्ये निःशुल्कं पाठयन्ति, इतरे आतुराणां चिकित्सां कुर्वन्ति, केचन धनिनः धर्मभवनानि निर्मान्ति।

महान्तः स्वभावत एव समाज-सेवकाः भवन्ति। मालवीय-गांधी-नेहरू- विनोबानां जीवनं सेवार्थमेवाऽसीत्। समाजसेवका एव समाजस्योन्नतिकारकाः भवन्ति। अतो हि समाजसेवा कर्तव्या।

जनसंख्या-समस्या

१९९१ तमे वर्षे विश्वस्य जनसंख्या ५ अर्बुद ४० कोटिपरिमिता सञ्जाता वर्तते। विश्वे प्रतिक्षणं १५० बालकाः समुत्पद्यन्ते भारते च ४८ बालकाः। प्रत्यहं प्रवर्धमाना जनसंख्या

भारतसदृशस्य विकासशीलदेशस्य कृते मुख्या समस्या वर्तते। स्वतन्त्रराष्ट्रस्य विकासाय या अर्थव्यवस्था निर्धार्यते सा जनसंख्याविस्फोटेनावरुध्यते।

जनसंख्याधिक्येन अनेकाः समस्याः समुत्पद्यन्ते। प्राकृतिकसंसाधनेषु न्यूनता समापतति। उत्पाद्यमानानां वस्तूनां वितरणे न्यूनता महर्घता च सञ्जायते। सर्वेषां जनानां कृते कार्यस्य, आवासस्य, शिक्षा-चिकित्सायाः भोजनवस्त्रादीनाञ्च व्यवस्था कर्तुं न पार्यते। सर्वकारस्यार्थव्यवस्था चञ्चूर्यते। विविधपञ्चवर्षीययोजनासु कृतायामपि व्यवस्थायां जनसंख्याधिक्यात् लक्ष्यपूर्तिर्न जायते।

जनसंख्यानियन्त्रणाय सर्वकारः प्रयतते। एतदर्थमनेके कार्यक्रमाः समायोजिता वर्तन्ते। अशिक्षिताः जना लघुपरिवारस्य महत्त्वं नोरीकुर्वन्ति। ग्रामीणमहिलासु जनसंख्याशिक्षाप्रसारेण जनसंख्यान्यूनीकरणाय जनजागरणं कर्तुं शक्यते। साधनानां दिग्दर्शनेन, नीतीनां क्रियान्वयनेन कुरीतिनिवारणेन च समस्यानां समाधानं कर्तुं पार्यते। परिवारं प्रति स्वोत्तरदायित्वस्य शिक्षा प्रदेया येन जना लघुपरिवारस्य महत्त्वं स्वीकुर्युः।

सम्प्रति जनसंख्यानियन्त्रणं मानवाधीनं वर्तते। एतादृशाः सरला उपाया साम्प्रतं समुपलब्धा वर्तन्ते येन जनसंख्यावृद्धिर्नियन्त्रयितुं शक्यते। शिक्षितास्तु स्वयमेव सावधानाः सञ्जाताः सन्ति।

जनसंख्यानियन्त्रणस्य समस्या भारते राष्ट्रिया समस्या वर्तते। जनसंख्याधिक्येन राष्ट्रस्य विकासश्चावरुध्यते। सम्प्रति "आवां द्वौ, आवयोः द्वौ" अयमुद्घोषः सर्वत्र श्रूयते। सर्वेषां राष्ट्रवादिनामिदं पुनीतं कर्तव्यं यत्ते जनसंख्यासमस्यां समाधातुं प्रयतेरन् येन भारतराष्ट्रं समृद्धं भवेत्।

परिवार-नियोजनम्

सामान्येन निखिले जगति विशेषतश्च भारते जनसंख्या प्रतिसंवत्सरम् आक्रामकरूपेण परिवर्धते। यथा भारते जनसंख्या-वृद्धिः, न तथा खाद्यसामग्रीवृद्धिः। खाद्य-सामग्र्यभावे जनसंपोषणं न संजायेत। अन्नाभावे शरीरापचयः, मनोबलक्षयः, स्वाभिमानावनतिः। परिवार-नियोजनाभावे जनसंख्यावृद्धौ खाद्याभावेन सममेव जीवनस्तरस्यावनतिः, कार्यक्षमता-न्यूनत्वम्, रोग-शोक-ताप-सन्ताप- विपत्पात-क्लेश-दैन्य-हीनत्वभावनादयो विवृद्धिम् अश्नुवते।

सन्तति-निरोधाभावे न पारिवारिकी शान्तिः। सन्तति-सुख-साधनार्थं माता-पितरौ महान्तं क्लेशम् अनुभवतः। मातॄणां तु बालसंरक्षणादिषु स्वास्थ्यमेवोपक्षीयते प्रतिदिनम् प्रतिपलं चावश्यकताया वृद्ध्या, लाभस्य साधनानां चाभावेन, जीवनमेव नारकीयं संजायते। साधनानां अभावे बालानां समुचितपोषणाभावः, शिक्षाया अभावः, अन्नपानाद्यभावः, जीवनस्तरन्यूनत्वं च संजायते।

परिवार-नियोजनार्थं सर्वकारेण बह्व्यो योजनाः प्रवर्तिताः। प्रतिक्षेत्रं प्रतिनगरं प्रतिग्रामं बहुविधया रीत्या परिवार-नियोजनप्रचारो दृश्यते श्रूयते च। परिवार-नियोजनं सन्ततिनिरोधं

वा सिद्धान्तरूपेण ग्राह्यम्। व्यवहाररूपेण च संयमपालनमेव सन्ततिनिग्रहस्य सर्वोत्कृष्ट उपायः। एषः उपायः प्रयुक्तो व्यवहृतश्चेत् तदा सन्ततिनिरोधने सममेव लोकजीवनं लोककर्म लोक-व्यवहृतिश्च सदा श्रेयसे भविष्यति।

अपठित-गद्य

(१)

अस्माकं देशे कृषियोग्यक्षेत्राणामभावो नास्ति। तथापि सत्यमिदं यत् पंचविंशति-प्रतिशतं कृषियोग्यं क्षेत्रमकृष्टमेव वर्तते। जनताया आलस्यमेव तत्र कारणम्, यत्ने कृते तत्सर्वं शस्यश्यामलं भवितुमर्हति। यत्र-तत्र तृणकमुत्पद्यते, तत्र-तत्रान्नं शस्यमुत्पादयितुं शक्यते इति वैज्ञानिकः सिद्धान्तः। परमं सौभाग्यमेवास्माकं देशस्य भविष्यति। यत् सर्वं तृणक्षेत्रं शस्यक्षेत्रे परिवर्तते।

प्रश्न—१. अस्माकं देशे कियत् क्षेत्रमकृष्टमेव ?

२. वैज्ञानिकानां किं मतम् ?

३. *अस्माकं सौभाग्यं किं भविष्यति ?*

(२)

परोपकारो हि महान् धर्मः। सत्पुरुषाः कदापि न स्वार्थतत्परा भवन्ति, अपितु परार्थसाधने स्वजीवनस्य साफल्यं मानयन्ति। ते तु परकीयं दुःखं स्वकीयमेव मन्यन्ते यतन्ते च तन्नाशाय। ते च असहायेभ्यः साहाय्यं, निर्धनेभ्यो धनं ज्ञानरहितेभ्यश्च ज्ञानं ददति। परहितसाधनं हि परमो धर्मः। परोपकारस्तु धर्मस्य सारः। अत एव सर्वशास्त्रेषु विविधेषु च मतेषु परोपकारस्य वर्णिता स्मरणीयं चात्र विषये भगवतो वेदव्यासस्य सारगर्भितं वचनम्।'

प्रश्न—१. किं नाम जीवनसाफल्यम् ?

२. सत्पुरुषाः कथमाचरन्ति ?

३. वेदव्यासस्य किं वचनम् ?

अभ्यास

१. तरप् एवं तमप् प्रत्यय में क्या अन्तर है ?

२. निबन्ध लिखिए—

(क) कृषकजीवनम्।

(ख) विजयादशमी।

(ग) विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवः।

३. अनुवाद कीजिए—

दण्डक वन में एक मुनि रहता था। उसने कौए के मुख से गिरती हुई एक चुहिया को देखा। दया करके उसे अपनी कुटी में ले आया। चुहिया की इच्छानुसार उसे बिल्ली बना दिया। बिल्ली से कुतिया और कुतिया से व्याघ्री बना दिया। वह व्याघ्री बनने पर मुनि को ही खाने के लिए दौड़ी। मुनि ने फिर उसे चुहिया बना दिया।

□ □ □

अध्याय-३०

शब्द-प्रयोग

अधिकारवन्तः (अधिकारी गण)—अधिकारवन्तः कार्याणि निरीक्षन्ते।

अनपत्यः (निःसन्तान)—अनपत्यस्य भवनं शून्यम्।

अनाहूतः (बिना बुलाया)—अयं अनाहूतोऽपि आगतः।

अनसूयः (ईर्ष्या रहित)—अनसूयः सदा सुखं लभते।

शरणवत्सलः (शरण देने वाला)—भारतदेशः सदा शरणवत्सलः।

अवाङ् मुखः (नीचा मुँह किए हुए)—सोऽवाङ्मुखः स्थितः किमपि नाऽवदत्।

अविवेकता (अज्ञान)—अविवेकता परमापदां पदम्।

आधयः (रोग)—वामा कुलस्याधयः।

आपन्नसत्त्वा (गर्भिणी)—आपन्नसत्त्वा शकुन्तला पतिगृहं यास्यति।

आर्जवम् (सरलता)—आर्जवं विदुषां भूषणम्।

ऋजवः (सरल)—ग्रामीणाः ऋजवो भवन्ति।

उज्झितम् (छोड़ा हुआ)—उज्झितमहं पुनर्न गृह्णामि।

उपरोधः (रुकावट)—कर्मणि उपरोधो न सोढव्यः।

क्षणभंगुरः (विनाशशील)—क्षणभंगुरोऽयं संसारः।

महान्तः (बड़े लोग)—महान्तो जनाः विपत्कालेऽपि स्वलक्ष्यं न त्यजन्ति।

सर्वतः (चारों ओर)—चरित्रस्य रक्षा सर्वतः विधेया।

भूषणम् (गहना)—वाणी मनुष्यस्य भूषणम्।

शिक्षेरन् (सीखना चाहिए)—स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।

निरामयाः (रोग रहित)—सर्वे सन्तु निरामयाः।

उत्तरस्याम् (उत्तर में)—उत्तरस्यां हिमालयो विराजते।

परितः (चारों ओर)—ग्रामं परितः सस्यश्यामला धरित्री राजते।

दारिद्र्यम् (गरीबी)—प्रायशो जनाः दारिद्र्यं गर्हन्ति।

आसक्तिः (लगाव)—धनस्यासक्तिः दुःखं प्रददाति।

कुटुम्बकम् (परिवार)—उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

समया (निकट)—गंगायमुनासंगमं समया प्रयागो वर्तते।

हीनः (रहित)—स विद्यया हीनः।

अर्थः (प्रयोजन, क्या)—धनेन कोऽर्थः ?

किम् (प्रयोजन)—विवादेन किम् ?

स्वदते (अच्छा स्वाद लगना)—बाला दुग्धं स्वदते।

रोचते (अच्छा लगना)—मह्यं मोदकं रोचते।

अलम् (बन्द करना)—कलहेनालम्। अलं कलहेन।

अलम् (समर्थ)—मल्लो मल्लाय अलम्।

निलीयते (छिपना)—समाजात् निलीयते चौरः।

जायते (उत्पन्न होना)—बीजात् अंकुरः जायते।

पाहि (बचाओ)—पाहि दुष्टात्।

दण्डयति (सजा देना)—राजा चौरं शतं दण्डयति।

पठितवान् (पढ़ा)—अहं वेदं पठितवान्।

प्रार्थितः (प्रार्थना की गई)—शिष्येण गुरुः प्रार्थितः।

अनृतम् (झूठ)—सत्यमेव जयते नानृतम्।

स्वार्थम् (मतलब)—सर्वः स्वार्थं समीहते।

जरा (बुढ़ापा)—जरा रूपं हरति।

अजीर्णः (अपच)—अजीर्णे भोजनं विषम्।

मद्यपः (शराबी)—मद्यपाः किं न जल्पन्ति।

शूरः (वीर)—शतेषु जायते शूरः।

पराश्रयः (पराधीनता)—कष्टः खलु पराश्रयः।

दुर्लभः (दुष्प्राप्य)—दुर्लभः स्वजनप्रियः।

श्रेयसे (कल्याण के लिए)—एष विधिः युष्माकं श्रेयसे।

काकिणी (कौडी)—नाहं गृह्णामि काकिणीमपि।

औत्सुक्यम् (उत्कण्ठा)—ग्रामीणानामौत्सुक्यं निःसीमं भवति।

आहूयताम् (बुलाओ)—आहूयताम् स छात्रः।

वञ्चितः (ठग लिए गये)—वञ्चितः खलु भवान्।

भूयः (फिर)—नैवं भूयोऽपि वाच्यम्।

कोलाहलः (शोर)—किमयं कोलाहलो नगरमध्ये?

कुकृत्यम् (कुकर्म)—किमेतद् भवता कुकृत्यमनुष्ठितम्?

समायाताः (आ रहे हैं)—कुतो भवन्तः समायाताः?

अग्रे (आगे)—नाऽहमग्रे यास्यामि।

शाठ्यम् (धूर्तता)—शठे शाठ्यं समाचरेत्।

निर्मक्षिकम् (शून्य, एकान्त)—निर्मक्षिकं कृत्वा रहस्यं भण।

अशक्तः (शक्तिहीन)—अशक्तः जनः सुखं न लभते।

यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार)—मानवाः यथाशक्ति कार्यं कुर्वन्तु।

जननी (जननी)—संस्कृतभाषा सर्वासां भाषाणां जननी।

उद्यमेन (परिश्रम से)—उद्यमेन-कार्याणि सिध्यन्ति।

बुभुक्षा (भूख)—बुभुक्षा पापानां मूलमस्ति।

विश्वविश्रुत: (विश्व विख्यात)—श्री नेहरू: विश्वविश्रुतो नेता आसीत्।

रुद्यते (रोना)—किमर्थं भवती रुद्यते?

तुतोष (प्रसन्न हुआ)—भ्राता भगिनीं विलोक्य भृशं तुतोष।

विमाता (सौतेली माता)—विमाता बालिकायां नास्निह्यत्।

स्वीचकार (स्वीकार किया)—पिता पुत्रस्य प्रार्थनां स्वीचकार।

कलहप्रिया (झगड़ालू)—सा कलहप्रिया आसीत्।

प्रयतमानोऽपि (प्रयत्न करने पर भी)—स प्रयतमानोऽपि किमपि नाससाद।

प्रोवाच (कहा)—प्रहसन् वृद्ध: प्रोवाच—तुष्टोऽस्मि।

रुग्ण: (बीमार)—बालक: रुग्णोऽभवत्।

मलीमसा: (गन्दे)—गृहस्य कोष्ठा: मलीमसा अभवन्।

समारोह: (उत्सव)—नगरे संस्कृतदिवससमारोह: सम्पन्न:।

विरचितम् (रचा हुआ)—कालिदासविरचितं मेघदूतकाव्यम् अस्ति।

(इस प्रकार अन्य शब्दों के प्रयोग द्वारा अभ्यास किया जाना चाहिए)

अव्यय-शब्दों का प्रयोग

एव—सज्जनानां सम्पत्तय: परोपकाराय एव भवन्ति।

खलु—सर्वं खलु इदं ब्रह्म।

किल—किल ते निर्मलं वपु:।

अपि—सर्वेऽपि सुखिन: सन्तु।

च—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

यथा—यथा रोचते तथा विधीयताम्।

किं—किं नाम सत्यम्?

तु—उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

अहो—अहो! अद्य ते दर्शनम्।

चिरम्—चिरं पठित्वाऽपि अबोध:।

प्रात:—प्रात: सूर्य: उदेति।

कारक शब्दों का प्रयोग

धिक्—धिक् देशद्रोहिणम्।

प्रति—चन्द्रं प्रति पश्यति।

विना—ज्ञानेन विना जीवनं व्यर्थम्।

सह—पुत्रेण सह आगत: पिता।

अलम्—मल्लाय मल्ल: अलम्।

नम:—कृष्णाय नम:।

स्वस्ति—पुत्राय स्वस्ति।

क्रुध्—रामः रावणाय क्रुध्यति।

तरप्—रामात् श्यामः श्रेष्ठतरः।

तमप्—कविषु कालिदासः श्रेष्ठतमः।

अंगविकार—कर्णेन बधिरः।

प्रत्ययों का वाक्य प्रयोग

तरप्—रामात् केशवः श्रेष्ठतरः।

तमप्—कक्षायां रामः श्रेष्ठतमः।

क्त्वा—छात्रः पठित्वा गृहम् आगच्छति।

ल्यप्—सः कार्यं विधाय गच्छति।

तुमुन्—श्यामः पठितुम् आगच्छति।

व्यावहारिक शब्द

आक्रीडी (खिलाड़ी)—आक्रीडी यशः लभते।

द्यूतकारः (जुवारी)—द्यूतकारः सर्वं नाशयति।

लवणान्नम् (नमकीन)—मह्यं रोचते लवणान्नम्।

पत्रवाहकः (डाकिया)—पत्रवाहकः पत्राणि वितरति।

प्रतिभूः (जामिन)—कस्ते प्रतिभूः ?

प्रतोलिका (गली)—प्रतोलिकासु यामिकाः भ्रमन्ति।

द्रावकवर्तिका (मोमबत्ती)—कुत्र वर्तते द्रावकवर्तिका ?

सम्मार्जनी (झाड़ू)—सम्मार्जनीम् आनय।

हसन्ती (अंगीठी)—हसन्तीं चेतय।

मसितूलिका (डाटपेन)—मसितूलिकया मा लिख।

उपहासचित्रम् (कार्टून)—विचित्रमिदं उपहासचित्रम्।

भ्रष्टापूपः (टोस्ट)—चायेन साकं भ्रष्टापूपं भक्षय।

प्रावृत्तम् (लूँगी)—निशायां प्रावृत्तं धारय।

तमाखुवर्तिका (सिगरेट)—तमाखुवर्तिका हानिप्रदा।

यामिकः (पहरेदार)—यामिका रक्षन्ति नगरम्।

सन्धितम् (अचार)—आपणाद् सन्धितमानय।

निर्णेजकः (ड्राईक्लीनर)—अत्र सौचिकाः, एजकाः निर्णेजकाश्च

पानपात्रम् (प्याला)—त्वं पानपात्राणि प्रक्षालय।

वृहतिका (ओवरकोट)—शीतकाले वृहतिकाः धारयन्ति जनाः।

लेखपालः (पटवारी)—लेखपालः ग्रामप्रशस्तिपत्रं प्रेषयति।

कङ्कतिका (कंघी)—सा कंकतिकां आनयति।

वधिकः (जल्लाद)—वधिकः अपराधिनं मारयति।

पाखण्डिकः (ढोंगी)—पाखण्डिकः जनं व्यथते।

भारिकः (पलेदार)—भारिकः भारं वहति।

जल्पाकः (बकवादी)—जल्पाकः मानं न लभते।

दस्युः (डाकू)—अत्र दस्यवः न भ्रमन्ति।

आवपनम् (बाल काटना)—नापितः शिशोः आवपनं करोति।

इस प्रकार अन्य शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य रचना की जा सकती है।

अपठित-पद्य

(क) गच्छन् पिपीलको याति योजनानां शतानि च।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति॥

(ख) यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्॥
नारीं विनैव मर्त्योऽपि कर्तुं किमपि न प्रभुः॥

(ग) यं मातापितरौ क्लेशं सहेते सम्भवे नृणाम्॥
न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि॥

(घ) अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण! रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥

(ङ) दृष्टिपूतं न्यसेत्पादम्, वस्त्रपूतं पिबेज्जलम्।
सत्यपूतां वदेत् वाणीम्, मनःपूतं समाचरेत्॥

(च) यदि सन्ति गुणाः पुंसां विकसन्त्येव ते स्वयम्।
न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते॥

(छ) सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥

(ज) वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थः प्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ॥

(झ) गायन्ति देवाः किल गीतकानि,
धन्यास्तु हे भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्ग-भूते,
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

(ञ) पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्तगतं धनम्।
कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम्।

(ट) माता वैरी पिता शत्रुर्येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥

इन श्लोकों का उच्चारण करते हुए भाव-विवेचन कीजिए।

अनुवाद (अभ्यास कीजिए)

(१)

आकाश में दिनभर सूर्य विचरण करता है। भारत की रक्षा करना भारतीयों परम कर्त्तव्य है। केशव स्नातक परीक्षा में सर्वप्रथम आया है। वे सुरक्षा कोष में सर्व दान करेंगे। हमारे स्कूल में हैडमास्टर व पन्द्रह मास्टर हैं। उन्हें अपने गुरुओं को नमस् करना चाहिए। एक मास में तीस दिन होते हैं।

(२)

तुम इस मुकदमे में गवाह बनो। कल सुबह उन दोनों के बीच झगड़ा हुआ। उ बोलना चाहिए। वे हमारे साथ नहीं चलेंगे। अध्यापकों के बिना पढ़ाई बन्द है। सर के साथ गाँव वाले जायेंगे। शिक्षा मन्त्री से मिलकर व्यवस्था के लिए कहेंगे। उसने अख पढ़ते हुए कहा—'आज मन्त्री से मिलना सम्भव नहीं है।'

(३)

एक वन में अकेला सिंह रहता था। वह प्रतिदिन अनेक पशुओं को मारता थ जंगल के सभी प्राणी उसके इस कृत्य से दुःखी थे। एक दिन वे सभी मिलकर सिंह पास पहुँचे और निवेदन करने लगे—'एक पशु से आपका पेट भर सकता है। आप हम राजा हैं, आपको कष्ट करना होता है। हममें से प्रतिदिन एक पशु आपकी सेवा में आ रहेगा।' सिंह ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

(४)

गर्मियों के दिन थे। आकाश में उड़ता हुआ एक कौआ वृक्ष पर आ बैठा। व बहुत प्यासा था, किन्तु पास में कहीं भी जल नहीं दिखाई दे रहा था। वृक्ष के नी एक घड़ा रखा हुआ था। कौवे ने घड़े के भीतर देखा, जल बहुत नीचे था, लेकिन व हताश न था। एक-एक कंकरी घड़े में गिराने लगा, धीरे-धीरे जल घड़े के मुँह तक आया कौए ने जल पीकर अपने प्राण बचाये।

(५)

किसी समय भारत में उत्तानपाद नामक राजा थे। उनके दो रानियाँ थीं। बड़ी रान का नाम सुनीति और छोटी का नाम सुरुचि था। सुनीति के बेटे का नाम ध्रुव था औ सुरुचि के बेटे का नाम उत्तम था। राजा को सुरुचि से बहुत स्नेह था। एक दिन ध्रु अपने पिता की गोद में आ बैठा तो सुरुचि ने कहा—"मूर्ख बच्चे! यह गोद तेरे लि नहीं है।" ध्रुव रोने लगा उसकी माता ने कहा— "रोने से कोई लाभ नहीं है। ईश्व ही सबका साथी है।" माँ की बात सुनकर वह ईश्वर की खोज में निकल पड़ा। उ तपस्वी को भगवान् ने दर्शन दिये।

(६)

महारानी अहिल्या इन्दौर की रानी थी। रानी के पति एवं पुत्र मर चुके थे। रान

सम्भालना रानी के लिए सहज न था। रानी अपने राज्य पर शासन करने लगी। जगह-जगह सरायें बनवाई, प्याऊ खुलवाई, गरीबों के लिए अनाज व कपड़े की व्यवस्था की। वह प्रजा में देवी की तरह पूजी जाने लगी। रानी ने तीस वर्ष तक राज्य किया। आज भी रानी की मूर्ति को सभी लोग पूजते हैं।

(७)

भारत की राजधानी दिल्ली है। दिल्ली बहुत बड़ा नगर है। यह यमुना नदी के किनारे पर बसा हुआ है। बड़े-बड़े रेलवे स्टेशन हैं। पालम व सफदरगंज में हवाई अड्डे हैं। दिल्ली में अनेक दर्शनीय स्थान हैं। जिनमें लाल किला, कुतुबमीनार, लौहस्तम्भ, राष्ट्रपति भवन, पुराना किला, जामा मस्जिद व गुरुद्वारा आदि हैं। दिल्ली बहुत प्राचीन नगर है। युधिष्ठिर ने इसे इन्द्रप्रस्थ के नाम से बसाया था।

(८)

पाण्डवों के तीसरे भाई अर्जुन का एक पुत्र था। उसका नाम अभिमन्यु था। अभिमन्यु की माता का नाम सुभद्रा था। सुभद्रा श्रीकृष्ण की बहिन थी। वह एक पढ़ी-लिखी और योग्य नारी थी। अर्जुन भी उस समय का बहुत बड़ा वीर था। अभिमन्यु ने अपने माता-पिता और मामा से बहुत कुछ सीखा था। वह अस्त्र-शस्त्र चलाने और युद्ध करने की विद्या में बहुत निपुण था। उसने कौरवों के चक्रव्यूह को तोड़कर अपनी वीरता का प्रदर्शन किया।

(९)

किसी नगर में एक सेठ कपड़े की दुकान करता था। उसकी दुकान का एक नौकर बीड़ी-सिगरेट पिया करता था। सेठ ने कई बार समझाया कि "भाई, बीड़ी-सिगरेट पीना बुरा है।" एक दिन सेठ घर गया हुआ था, नौकर ने बीड़ी पीना आरम्भ कर दिया। अचानक सेठ के आने पर उसने बीड़ी को कपड़ों के नीचे दबा लिया। दुकान में आग लग गई। सेठ का सब कुछ नष्ट हो गया।

(१०)

मनुष्य सभी भाई-भाई हैं। इनमें न कोई बड़ा और न कोई छोटा है। इनमें से कोई अछूत नहीं है, सभी को समान हक है। ऊँच-नीच का भेद-भाव अपराध है। जो अपने भीतर घृणा को जन्म देता है, उसके प्रति सभी घृणा करते हैं। जाति प्रथा समाज के लिए अभिशाप है। जो पिछड़ गये हैं, उन्हें साथ लेकर चलना ही सच्चा धर्म है।

(११)

संसार में न कोई हिन्दू हैं और न कोई मुसलमान। न कोई ईसाई और न कोई पारसी। हम सभी मनुष्य हैं। मानवता ही हमारा धर्म है। हमें एक-दूसरे को भाई मानना चाहिए। धार्मिक भावना साम्प्रदायिकता को जन्म देती है। धर्म के नाम पर युद्ध होते हैं और इन युद्धों में विनाश होता है। मनुष्य वही है, जो दूसरों के लिए स्वयं को अर्पित कर दे।

यद्यपि भारतवर्षः विभिन्नेषु प्रान्तेषु विभक्त आसीत्। काममत्र विभिन्नधर्मावलम्बिनो नानाभाषाभाषिणश्च जना निवसन्ति परन्तु स्वराष्ट्रं प्रति संकटं वीक्ष्य सर्वे राष्ट्रियभावनया युक्ता भूत्वा समग्रस्य राष्ट्रस्य रक्षणं कुर्वन्ति। स्वातन्त्र्यप्राप्तये भारतीया बलिदानशतं कृत्वा विश्वस्येतिहासे प्रसिद्धिमभजन्।

भारतस्य सभ्यता अतिप्राचीना, गौरवञ्चास्य राष्ट्रस्य विश्वप्रसिद्धम्। शस्यश्यामलायामस्यां भूम्यां देवा अपि जन्म कामयन्ते। इन्द्रादिदेवान् ध्वजदशरथदुष्यन्तादिभिः सह मैत्रीभाव आसीत्। सर्वमिदं राष्ट्रियत्वेनैव सञ्जातमासीत्।

यत्र राष्ट्रियत्वं विद्यते तत्र संघठनमपि जायते। यत्र संघटनं वर्तते तत्र सिद्धिरपि निश्चिता। यदि वयं स्वदेशसीमारक्षणं, सौहार्दं, समानतां, आर्थिकीं समुन्नतिं, शान्तिं, तुष्टिं पुष्टिञ्चाभिलषामश्चेत्तर्हि राष्ट्रियत्वस्य संरक्षणमावश्यकम्। राष्ट्रियत्वरक्षणेन विभिन्न-धर्मावलम्बिषु सौहार्दं सौमनस्यादि मानवीयगुणानामुत्तरोत्तरं विकासः सम्भविष्यतीति निश्चप्रचम्।

अभ्यास

(पुनरावृत्ति)

१. "समोऽहम्" में सन्धि है?
   (क) यण् सन्धि (ख) दीर्घ सन्धि
   (ग) अयादि सन्धि (घ) विसर्ग सन्धि
   (ङ) वृद्धि सन्धि। (   )

२. मति शब्द के रूप लिखिए।

३. सह् धातु के लङ् लकार के रूप लिखिए।

४. प्रकृति-प्रत्यय बताइये—
   पठितः, गन्तुम्, सेवमानः, आगच्छन्, स्मृत्वा, आकर्ण्य, दीर्घतमः।

५. उपसर्ग बताइये—
   निर्वाहः, पराजितः, उत्कण्ठा, प्रकर्षः, अनुगमनम्।

६. कौन-सी विभक्ति होगी?—
   (क) अङ्गविकारी शब्द होने पर।
   (ख) सह शब्द का प्रयोग करने पर।
   (ग) स्मृ धातु के रहने पर।
   (घ) अभितः शब्द के होने पर।
   (ङ) रुच् धातु के रहने पर।

□□□

अध्याय-३१

निबन्धानां रूपरेखा

अस्माकं ग्रामः

- भारतदेशो ग्रामाणां देशः। तत्रैव प्राचीना संस्कृतिः विराजते।
- ग्रामस्य स्थितिः।
- वर्तमानं वैशिष्ट्यम्। उन्नत्यै क्रियमाणाः प्रयत्नाः।

सत्यमेव जयते

- किं नाम सत्यम्? यथार्थकथनं, लेखनं, सम्भाषणं, क्रियमाणं वा सत्यमभिधीयते। संसारे सत्यमेव विशिष्यते, जयति च।
- सत्येनैव लोकस्थितिः। सत्येनैव प्रतिष्ठा, गौरवञ्च वर्धते। यतो हि सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।
- न हि सत्यात्परं किंचित्।

अश्वमेधसहस्रञ्च सत्यं च तुलया धृतम्।
अश्वमेधसहस्राद् हि सत्यमेव विशिष्यते ॥

- न हि सत्यात् परो धर्मो नानृतात् पातकं महत्।

अतिथि-सत्कारः

- भारतीय-संस्कृतौ 'अतिथिदेवो भव' इति कथ्यते। अतिथिः भगवतो मूर्तिः वर्तते। अतिथेः पूजनात् महत्फलं प्राप्यते।

बालो वा यदि वा वृद्धो युवा वा गृहमागतः।
पूजनीयो यथायोग्यं सर्वदेवमयोऽतिथिः ॥

- यथाशक्ति कर्तव्यो विधेयः—

तृणानि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी च सूनृता।
एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥

- अतिथिसत्कारकरणेन यशः, धर्मः, पुण्यञ्च लभ्यते।
- भग्नाशः अतिथिर्यस्य गृहात् प्रतिनिवर्तते, स तस्मै दुष्कृतं दत्त्वा गच्छति।

विज्ञानस्य प्रगतिः

- आवश्यकता नवाविष्काराणां जननी कथ्यते। मानवबुद्धिः नूतनवस्तूनां आविष्कारे प्रवर्तते।
- अस्यां शताब्द्यां अनेके वैज्ञानिक-आविष्काराः संजाताः।
- सर्वाणि कार्याणि विज्ञानेन सञ्चालितानि भवन्ति।
- विज्ञानस्य कतिपये प्रसिद्धाऽऽविष्काराः (रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन आदि) तेषां लाभाश्च।

३. घातकशस्त्रेभ्यो मानवविनाशस्य आशंका।

४. विज्ञानस्योपयोगः मानवहिताय भवेत्।

विद्यार्थि-जीवनम्

१. मानवजीवने विद्यार्थिजीवनस्यातीव महत्त्वं वर्तते। विद्यार्थिजीवनं विद्यार्जनकालः कथ्यते। जीवनस्य साफल्याय ब्रह्मचर्याश्रमस्य आवश्यकता।

२. विद्यालयानां महत्त्वम्। शिक्षाया उपयोगिता।

प्रथमे वयसि नाधीतं, द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये न तपस्तप्तं, चतुर्थे किं करिष्यसि ॥

३. छात्रजीवने विशेष-नियमाः भवन्ति। प्रातरुत्थाय विद्याध्ययनं, विद्यालय-गमनं, नियताहारविहारौ, अनुशासनञ्चेति।

४. साम्प्रतं छात्राणां स्थितिः शोचनीया।

स्त्री-शिक्षा

१. समाजे नारीणां स्थानम्। प्राचीनभारते स्त्रीणां स्थितिः।

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।'
'पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।'
पुत्रस्तु स्थविरे रक्षेन्न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ॥''

२. स्त्रीणामध्ययनस्य उपयोगिता। शिक्षा सर्वमान्या। सर्वेषां शिक्षाप्राप्त्यधिकारः।

दीपमालिका

१. भारतीयानां चत्वारः उत्सवाः। तेषु एकः दीपमालिकोत्सवः।

२. कार्तिककृष्णपक्षस्य अमावस्यायां तिथौ दीपमालिका सम्पन्ना भवति।

३. अस्मिन् दिने सर्वे प्रसन्नाः दृश्यन्ते। सर्वत्र आमोदः प्रमोदश्च संलक्ष्यते। रात्रौ लक्ष्मीपूजनं भवति।

४. अस्मिन् दिने दीपानां पंक्तयः प्रकाशन्ते।

होलिका

१. पर्वणां महत्त्वम्। फाल्गुनमासस्य शुक्ले पक्षे पूर्णिमायां तिथौ होलिकोत्सवः।

२. वसन्तकालस्य रमणीयता।

३. होलिकोत्सवस्य इतिहासः—प्रह्लादकथा।

४. होलिकोत्सवस्य विशिष्टकृत्यानि।

५. अस्मिन् दिने सभ्यतायाः प्रदर्शनं विचारणीयम्।

विजया-दशमी

१. पर्वणां महत्त्वम्। आश्विनमासस्य शुक्लपक्षस्य दशम्यां तिथौ विजयादशमीसमारोहः।

२. शरदृतुसौन्दर्यम्।

३. राम-रावणयोर्युद्धे रामविजयप्रतीकदिवसः।

४. क्षत्रियाणां प्रमुखोत्सवः।

५. रामादिवद् व्यवहर्तव्यम् न च रावणादिवत्—इत्युपदेशः।

स्वप्रेयान् कविः

(कालिदासः)

१. संस्कृत-साहित्ये अपूर्वोऽयं कविः।

पुरा कवीनां गणनाप्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठित-कालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव ॥
'कविकुलगुरुः कालिदासः' उपाधिविभूषितः।

२. कवेर्जीवनविषये निश्चयेन किमपि कथयितुं न शक्यते।

३. त्रीणि नाटकानि—अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्। त्रीणि काव्यानि—रघुवंशम्, कुमारसंभवम्, मेघदूतञ्च। अभिज्ञानशाकुन्तलं जगति प्रसिद्धम्।

४. सर्वत्र प्रसादगुणसम्पन्ना भाषा। भारतीय-संस्कृति-समन्वितं कवितोद्देश्यम्।

स्वप्रियपुस्तकम्

श्रीमद्भगवद्गीता

१. श्रीमद्भगवद्गीतायाः माहात्म्यम्।

"गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।"

२. गीतायाः उपदेशः।

३. कर्मणो वैशिष्ट्यम्।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"
"योगः कर्मसु कौशलम्।"

४. सम्प्रति गीतायाम् उपदिष्टमार्गस्य आवश्यकता।



अध्याय-३२

छन्द-परिचय

जहाँ अक्षर, मात्रा और विराम का विशेष नियम हो, उसे 'छन्द' कहा जाता है।

छन्द दो तरह के होते हैं—वर्णिक छन्द और मात्रिक छन्द।

जिनमें वर्णों (अक्षर) की संख्या व लघु-गुरु वर्णों का स्थान व क्रम नियत हो, वे वर्णिक छन्द कहलाते हैं।

जिनमें मात्राओं का ही परिगणन हो, वे मात्रिक छन्द कहलाते हैं।

गण-नियम

'य मा ता रा ज भा न स ल गा:'

इस नियम में क्रमशः यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण, (आठ गण) लघु एवं दीर्घ वर्ण हैं।

यगण	।ऽऽ	मगण	ऽऽऽ
तगण	ऽऽ।	रगण	ऽ।ऽ
जगण	।ऽ।	भगण	ऽ।।
नगण	।।।	सगण	।।ऽ
	लघु।	गुरु ऽ	

इन्द्रवज्रा

यह वर्णिक छन्द है। इसका लक्षण है—

"स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।"

इसके प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण तथा क्रमशः तगण, तगण, जगण और अन्त में दो गुरु अक्षर होते हैं—

ऽऽ । ऽऽ ।।ऽ। ऽऽ
अर्थो हि कन्या परकीय एव
तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामम्
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥

विशेष—चरण के अन्त में आने वाला लघु भी गुरु माना जाता है।

उपेन्द्रवज्रा

यह वर्णिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण और अन्त में दो गुरु अक्षर होते हैं। प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं।

।ऽ। ऽऽ । ।ऽ ।ऽऽ
त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

उपजाति

यह वर्णिक छन्द है। इसके अधिकतम तीन व न्यूनतम एक चरण इन्द्रवज्रा या
द्रवज्रा के होते हैं। दोनों छन्दों के मिश्रण से यह बनता है।

लक्षण–"अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ता:।"

।ऽ।ऽ ऽ।।ऽ ।ऽऽ
तमध्वरे विश्वजिति क्षितीशं (उपेन्द्रवज्रा)
ऽऽ।ऽऽ।।ऽ। ऽऽ
नि:शेष विश्राणित कोष जातम्। (इन्द्रवज्रा)
।ऽ। ऽऽ ।।ऽ।ऽऽ
उपात्त विद्यो गुरु दक्षिणार्थी (उपेन्द्रवज्रा)
ऽऽ।।ऽऽ।।ऽ। ऽऽ
कौत्स: प्रपेदे वरतन्तु शिष्य:। (इन्द्रवज्रा)

द्रुतविलम्बित

यह वर्णिक छन्द है, इसमें नगण, भगण, भगण और रगण होता है। प्रत्येक चरण
बारह वर्ण होते हैं।

लक्षण—"द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ।"

।। ।ऽ ।।ऽ ।।ऽ ।ऽ
यदि यथा वदति क्षितिप स्तथा
त्वमसि किं पितुरुत्कुलया त्वया।
अथ तु वेत्सि शुचि व्रतमात्मन:
पतिकुले तव दास्यमपि क्षमम्॥

वंशस्थ

यह वर्णिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में क्रमश: जगण, तगण, जगण और
ग होता है। बारह वर्ण होते हैं।

लक्षण—"जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।"

।ऽ।ऽऽ।।ऽ। ऽ।ऽ
श्रिय:कुरूणामधिपस्य पालनीं

प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्।
स वर्णलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः॥

भुजङ्गप्रयात

यह वर्णिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में चार यगण होते हैं। बारह वर्ण होते हैं।

लक्षण—"भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः।

ISS ISS ISS ISS
महेशः सुरेशः परेशः परात्मा
दिनेशः निशेशो युगेशोऽसि देव।
त्वमेवासि देवेश देवाधिदेवः
प्रभो पाहि पाहि द्रुतं पापभूमेः॥

वसन्ततिलका

यह वर्णिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण और अन्त में दो गुरु होते हैं। चौदह वर्ण होते हैं।

लक्षण—"ज्ञेया वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।"

उदाहरण

SSI SII ISI ISISS
अम्भोजि नीवन निवास विलासमेव
हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता।
न त्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धां
वैदग्ध्यकीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः॥

मालिनी

यह वर्णिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः, नगण, नगण, मगण, यगण तथा यगण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में १५ वर्ण होते हैं और आठवें व सातवें अक्षर पर यति होती है।

लक्षण—"ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।"

उदाहरण

III IIISS S ISS ISS
कुमुद वनमपश्रि श्री मदम्भो जखण्डं
त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः।
उदयमहिमरश्मिर्याति शीतांशुरस्तं
हत विधिलसितानां ही विचित्रो विपाकः॥

मन्दाक्रान्ता

यह वर्णिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण, तगण, तगण और अन्त में दो गुरु होते हैं। यह १७ वर्ण का छन्द है। इसमें चार, छः तथा सात अक्षर पर यति होती है।

लक्षण—"मन्द्राक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मोभनौ तौ गयुग्मम्।"

उदाहरण

ऽ ऽ ऽ ऽ । । ।।। ऽ ऽ । ऽऽ। ऽ ऽ
कश्चित्का न्ताविर हगुरु णास्वाधि कारात्प्र मत्तः
शापेनास्तंगमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनया स्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छाया तरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु॥

शिखरिणी

यह वर्णिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः यगण, मगण, नगण, सगण, भगण और अन्त में एक लघु और एक गुरु अक्षर होता है। इसमें छठे और बाद में ग्यारहवें अक्षर पर यति होती है। १७ वर्ण होते हैं।

लक्षण—रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।

उदाहरण

।ऽऽ ऽ ऽ ऽ । । । । ।ऽ ऽ।। । ऽ
करेश्ला घ्यस्त्यागः शिरसि गुरुपा दप्रण यिता
मुखे सत्या वाणी विजयि भुजयोर्वीर्यमतुलम्।
हृदि स्वेच्छा वृत्तिः श्रुतमधिगतैकव्रतफलं
विनाप्यैश्वर्येण प्रकृति महतां मण्डनमिदम्॥

शार्दूलविक्रीडित

यह वर्णिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण तगण और अन्त में एक गुरु अक्षर होता है। इसके प्रत्येक चरण में बारहवें और बाद में सातवें अक्षर पर यति होती है।

लक्षण—"सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्।"

उदाहरण

ऽऽऽ ।।ऽ। ऽ । । ।ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ । ऽ
लोभश्चे दगुणेन किं पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः
सत्यं चेत्तपसा च किं? शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्?
सौजन्यं यदि किं निजैः? सुमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनैः?
सद्विद्या यदि किं धनैः? अपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना?

आर्या

यह मात्रिक छन्द है। इसके पहले और तीसरे चरण में १२-१२ मात्राएँ होती और दूसरे चरण में १८ एवं चौथे में १५ मात्राएँ होती हैं।

लक्षण—

यस्या पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीये स्युः।
अष्टादशद्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या॥

उदाहरण

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
किं कार्यम्, सत्कार्यम् (१२ मात्रा

ऽ ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ । ऽ ऽ
किं धार्यम्, सत्यमात्मना वृत्तम्। (१८ मात्रा

ऽ। । ऽ ऽ ऽ ऽ
कुत्र विधेया भक्तिः (१२ मात्रा

ऽ।ऽऽऽ।। ऽऽ
तत्त्वज्ञाने राष्ट्रसम्माने ॥ (१५ मात्रा

अनुष्टुप्

इस छन्द के प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं। प्रत्येक चरण में छठा अक्षर गुरु एवं पाँचवाँ अक्षर लघु होता है। दूसरे और चौथे चरण का सातवाँ अक्षर लघु तथा पहले और तीसरे चरण का सातवाँ अक्षर गुरु होता है।

लक्षण—

श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

उदाहरण—वर्ण ५ ६ ७

।ऽऽ ।ऽ।
अथ सीतामनुज्ञाप्य कृतकौतुकमंगलः।

।ऽऽ ।ऽ।
निश्चक्राम सुमन्त्रेण सह रामो निवेशनात्॥

अभ्यास

१. तीनों वर्ण लघु होते हैं:—
(क) मगण में। (ख) सगण में।
(ग) नगण में। (घ) यगण में। ( )

२. प्रत्येक श्लोक में चरण होते हैं :—
(क) दो। (ख) चार।
(ग) एक। (घ) तीन। ( )

३. समवृत्त कहते हैं:—

(क) जिनमें चारों चरण समान हों।

(ख) जिनमें द्वितीय व चतुर्थ चरण समान हों।

(ग) जिनमें चारों चरण असमान हों।

(घ) जिनमें प्रथम व तृतीय चरण समान हों। ( )

४. विसमवृत्त का उदाहरण है:—

(क) वंशस्थ। (ख) आर्या।

(ग) मालिनी। (घ) पुष्पिताग्रा। ( )

५. छन्द का प्रयोग किया जाता है :—

(क) गद्य में (ख) संवाद में

(ग) पद्य में (घ) कथा में। ( )

६. लघु एवं दीर्घ की परिभाषा लिखिए।

७. उपजाति छन्द किन दो छन्दों के मेल से बनता है?

८. मात्रिक छन्द किसे कहते हैं।

९. यति किसे कहते हैं?



परिशिष्ट-१

धातु रूप

लङ्

धातु	लट्	लोट्	लङ्	लृट्	विधिलिङ्	सामान्य लुङ्
अट् (घूमना)	अटति	अटतु	आटत्	अटिष्यति	अटेत्	आटीत्
अर्ज् (कमाना)	अर्जति	अर्जतु	आर्जत्	अर्जिष्यति	अर्जेत्	आर्जीत्
अर्ह् (योग्य होना)	अर्हति	अर्हतु	आर्हत्	अर्हिष्यति	अर्हेत्	आर्हीत्
अस् (होना)	अस्ति	अस्तु	आसीत्	भविष्यति	स्यात्	अभूत्
आप् (पाना)	आप्नोति	आप्नोतु	आप्नोत्	आप्स्यति	आप्नुयात्	आपत्
इष् (चाहना)	इच्छति	इच्छतु	ऐच्छत्	एषिष्यति	इच्छेत्	ऐषीत्

धातु	लट्	लोट्	लङ्	लृट्	विधिलिङ्	सामान्य लुङ्
कथ्	कथयति	कथयतु	अकथयत्	कथयिष्यति	कथयेत्	अचकथत्
(कहना)	कथ्यते	कथयताम्	अकथयत	कथयिष्यते	कथयेत	अचकथत
कम्प् (कांपना)	कम्पते	कम्पताम्	अकम्पत	कम्पिष्यते	कम्पेत	अकम्पिष्ट
काश् (चमकना)	काशते, काश्यते	काशताम्	अकाशत	काशिष्यते	काशेत	अकाशिष्ट
कुप् (क्रोध करना)	कुप्यति	कुप्यतु	अकुप्यत्	कोपिष्यति	कुप्येत्	अकुपत्
कृ	करोति	करोतु	अकरोत्	करिष्यति	कुर्यात्	अकार्षीत्
(करना)	कुरुते	कुरुताम्	अकुरुत	करिष्यते	कुर्वीत	अकृत
कृष् (जोतना)	कर्षति	कर्षतु	अकर्षत्	कर्क्ष्यति	कर्षेत्	अकार्क्षीत्
क्री	क्रीणाति	क्रीणातु	अक्रीणात्	क्रेष्यति	क्रीणीयात्	अक्रेषीत्
(खरीदना)	क्रीणीते	क्रीणीताम्	अक्रीणीत	क्रेष्यते	क्रीणीत	अक्रेष्ट
क्षाल्	क्षालयति	क्षालयतु	अक्षालयत्	क्षालयिष्यति	क्षालयेत्	अचिक्षलत्
(धोना)	क्षालयते	क्षालयताम्	अक्षालयत	क्षालयिष्यते	क्षालयेत	अचिक्षलत
खन् (खोदना)	खनति	खनतु	अखनत्	खनिष्यति	खनेत्	अखनीत्
खाद् (खाना)	खादति	खादतु	अखादत्	खादिष्यति	खादेत्	अखादीत्
गण्	गणयति	गणयतु	अगणयत्	गणयिष्यति	गणयेत्	अजीगणत्
(गिनना)	गणयते	गणयताम्	अगणयत	गणयिष्यते	गणयेत	अजीगणत
गम् (जाना)	गच्छति	गच्छतु	अगच्छत्	गमिष्यति	गच्छेत्	अगमत्

धातु	लट्	लोट्	लङ्	लृट्	विधिलिङ्	सामान्य लुङ्
गै (गाना)	गायति	गायतु	अगायत्	गास्यति	गायेत्	अगासीत्
ग्रह्	गृह्णाति	गृह्णातु	अगृह्णात्	ग्रहीष्यति	गृह्णीयात्	अग्रहीत्
(लेना)	गृह्णीते	गृह्णीताम्	अगृह्णीत	ग्रहीष्यते	गृह्णीत	अग्रहीष्ट
चर् (चलना)	चरति	चरतु	अचरत्	चरिष्यति	चरेत्	अचारीत्
चल् (हिलना)	चलति	चलतु	अचलत्	चलिष्यति	चलेत्	अचालीत्
चि	चिनोति	चिनोतु	अचिनोत्	चेष्यति	चिनुयात्	अचैषीत्
(चुनना)	चिनुते	चिनुताम्	अचिनुत	चेष्यते	चिन्वीत	अचेष्ट
चिन्त्	चिन्तयति	चिन्तयतु	अचिन्तयत्	चिन्तयिष्यति	चिन्तयेत्	अचिचिन्तत्
(सोचना)	चिन्तयते	चिन्तयताम्	अचिन्तयत	चिन्तयिष्यते	चिन्तयेत	अचिचिन्तत
चुर्	चोरयति	चोरयतु	अचोरयत्	चोरयिष्यति	चोरयेत्	अचूचुरत्
(चुराना)	चोरयते	चोरयताम्	अचोरयत	चोरयिष्यते	चोरयेत	अचूचुरत
जि (जीतना)	जयति	जयतु	अजयत्	जेष्यति	जयेत्	अजैषीत्
जीव् (जीना)	जीवति	जीवतु	अजीवत्	जीविष्यति	जीवेत्	अजीवीत्
ज्ञा	जानाति	जानातु	अजानात्	ज्ञास्यति	जानीयात्	अज्ञासीत्
(जानना)	जानीते	जानीताम्	अजानीत	ज्ञास्यते	जानीत	अज्ञास्त
उत्+डी (उड़ना)	उड्डीयते	उड्डीयताम्	उड्डीयेत	उड्डीष्यते	उड्डीयत	उड्डयिष्ट

धातु	लट्	लोट्	लङ्	लृट्	विधिलिङ्	सामान्य लुङ्
ताड्	ताडयति	ताडयतु	अताडयत्	ताडयिष्यति	ताडयेत्	अतीतडत्
(पीटना)	ताडयते	ताडयताम्	अताडयत	ताडयिष्यते	ताडयेत	अतीतडत
तुल्	तोलयति	तोलयतु	अतोलयत्	तोलयिष्यति	तोलयेत्	अतूतुलत्
(तोलना)	तोलयंते	तोलयताम्	अतोलयत	तोलयिष्यते	तोलयेत	अतूतुलत
तृ (तैरना)	तरति	तरतु	अतरत्	तरिष्यति	तरेत्	अतारीत्
त्यज् (छोड़ना)	त्यजति	त्यजतु	अत्यजत्	त्यक्ष्यति	त्यजेत्	अत्याक्षीत्
त्वर् (जल्दी करना)	त्वरते	त्वरताम्	अत्वरत	त्वरिष्यते	त्वरेत	अत्वरिष्ट
दण्ड्	दण्डयति	दण्डयतु	अदण्डयत्	दण्डयिष्यति	दण्डयेत्	अददण्डत्
(दण्ड देना)	दण्डयते	दण्डयताम्	अदण्डयत	दण्डयिष्यते	दण्डयेत	अददण्डत
दिश्	दिशति	दिशतु	अदिशत्	देक्ष्यति	दिशेत्	अदिक्षत्
(कहना)	दिशते	दिशताम्	अदिशत	देक्ष्यते	दिशेत	अदिक्षत
दीप् (चमकना)	दीप्यते	दीप्यताम्	अदीप्यत	दीपिष्यते	दीप्येत	अदीपिष्ट
दुह्	दोग्धि	दोग्धु	अधोक्	धोक्ष्यति	दुह्यात्	अधुक्षत्
(दुहना)	दुग्ध	दुग्धाम्	अदुग्ध	धोक्ष्यते	दुहीत	अधुक्षत
दृश् (देखना)	पश्यति	पश्यतु	अपश्यत्	द्रक्ष्यति	पश्येत्	अद्राक्षीत्
धाव् (दौड़ना)	धावति	धावतु	अधावत्	धाविष्यति	धावेत्	अधावीत्

धातु	लट्	लोट्	लङ्	लृट्	विधिलिङ्	सामान्य लुङ्
धृ	धरति	धरतु	अधरत्	धरिष्यति	धरेत्	अधार्षीत्
(रखना)	धरते	धरताम्	अधरत	धरिष्यते	धरेत	अधृत
नन्द् (प्रसन्न होना)	नन्दति	नन्दतु	अनन्दत्	नन्दिष्यति	नन्देत्	अनन्दीत्
नम् (झुकना)	नमति	नमतु	अनमत्	नंस्यति	नमेत्	अनंसीत्
नश् (नष्ट होना)	नश्यति	नश्यतु	अनश्यत्	नशिष्यति	नश्येत्	अनशत्
नी	नयति	नयतु	अनयत्	नेष्यति	नयेत्	अनैषीत्
(ले जाना)	नयते	नयताम्	अनयत	नेष्यते	नयेत	अनेष्ट
पच्	पचति	पचतु	अपचत्	पक्ष्यति	पचेत्	अपाक्षीत्
(पकाना)	पचते	पचताम्	अपचत	पक्ष्यते	पचेत	अपक्त
पठ् (पढ़ना)	पठति	पठतु	अपठत्	पठिष्यति	पठेत्	अपाठीत्
पत् (गिरना)	पतति	पततु	अपतत्	पतिष्यति	पतेत्	अपातत्
पा (पीना)	पिबति	पिबतु	अपिबत्	पास्यति	पिबेत्	अपात्
पाल्	पालयति	पालयतु	अपालयत्	पालयिष्यति	पालयेत्	अपीपलत्
(पालना)	पालयते	पालयताम्	अपालयत	पालयिष्यते	पालयेत	अपीपलत
पीड्	पीडयति	पीडयतु	अपीडयत्	पीडयिष्यति	पीडयेत्	अपीपिडत्
(दुख देना)	पीडयते	पीडयताम्	अपीडयत	पीडयिष्यते	पीडयेत	अपीपिडत

धातु	लट्	लोट्	लङ्	लृट्	विधिलिङ्	सामान्य लुङ्
पूर्	पूरयति	पूरयतु	अपूरयत्	पूरयिष्यति	पूरयेत्	अपूपुरत्
(भरना)	पूरयते	पूरयताम्	अपूरयत	पूरयिष्यते	पूरयेत	अपूपुरत
पृच्छ् (पूछना)	पृच्छति	पृच्छतु	अपृच्छत्	प्रक्ष्यति	पृच्छेत्	अप्राक्षीत्
प्री (प्रसन्न होना)	प्रीणाति	प्रीणातु	अप्रीणात्	प्रीणयिष्यति	प्रीणीयात्	अप्रैणीत्
बन्ध् (बाँधना)	बध्नाति	बध्नातु	अबध्नात्	भन्त्स्यति	बध्नीयात्	अभान्तसीत्
भक्ष्	भक्षयति	भक्षयतु	अभक्षयत्	भक्षयिष्यति	भक्षयेत्	अबभक्षत्
(खाना)	भक्षयते	भक्षयताम्	अभक्षयत	भक्षयिष्यते	भक्षयेत	अबभक्षत
भाष् (कहना)	भाषते	भाषताम्	अभाषत	भाषिष्यते	भाषेत	अभाषिष्ट
भू (होना)	भवति	भवतु	अभवत्	भविष्यति	भवेत्	अभूत्
भ्रम् (घूमना)	भ्रमति	भ्रमतु	अभ्रमत्	भ्रमिष्यति	भ्रमेत्	अभ्रमीत्
मन्त्र् (सलाह)	मन्त्रयते	मन्त्रयताम्	अमन्त्रयत	मन्त्रयिष्यते	मन्त्रयेत	अममन्त्रत
मिल्	मिलति	मिलतु	अमिलत्	मेलिष्यति	मिलेत्	अमेलीत्
(मिलाप)	मिलते	मिलताम्	अमिलत	मेलिष्यते	मिलेत	अमेलिष्ट
मुद् (प्रसन्न होना)	मोदते	मोदताम्	अमोदत	मोदिष्यते	मोदेत	अमोदिष्ट
यत् (प्रयत्न करना)	यतते	यतताम्	अयतत	यतिष्यते	यतेत	अयतिष्ट
या (जाना)	याति	यातु	अयात्	यास्यति	यायात्	अयासीत्

धातु	लट्	लोट्	लङ्	लृट्	विधिलिङ्	सामान्य लुङ्
याच्	याचति	याचतु	अयाचत्	याचिष्यति	याचेत्	अयांचीत्
(माँगना)	याचते	याचताम्	अयाचत	याचिष्यते	याचेत	अयाचिष्ट
रक्ष् (रक्षा करना)	रक्षति	रक्षतु	अरक्षत्	रक्षिष्यति	रक्षेत्	अरक्षीत्
रच्	रचयति	रचयतु	अरचयत्	रचयिष्यति	रचयेत्	अररचत्
(बनाना)	रचयते	रचयताम्	अरचयत	रचयिष्यते	रचयेत	अररचत
रम् (रमना)	रमते	रमताम्	अरमत	रंस्यते	रमेत	अरंस्त
रुच् (अच्छा लगना)	रोचते	रोचताम्	अरोचत	रोचिष्यते	रोचेत	अरोचिष्ट
रुह् (उगना)	रोहति	रोहतु	अरोहत्	रोहिष्यति	रोहेत्	अरुक्षत्
लभ् (पाना)	लभते	लभताम्	अलभत	लप्स्यते	लभेत	अलब्ध
लिख् (लिखना)	लिखति	लिखतु	अलिखत्	लेखिष्यति	लिखेत्	अलेखीत्
लुभ् (लोभ करना)	लुभ्यति	लुभ्यतु	अलुभ्यत्	लोभिष्यति	लुभ्येत्	अलोभीत्
लोक्	लोकयति	लोकयतु	अलोकयत्	लोकयिष्यति	लोकयेत्	अलुलोकत्
(देखना)	लोकयते	लोकयताम्	अलोकयत	लोकयिष्यते	लोकयेत	अलुलोकत
वद् (बोलना)	वदति	वदतु	अवदत्	वदिष्यति	वदेत्	अवादीत्
वन्द् (प्रणाम)	वन्दते	वन्दताम्	अवन्दत	वन्दिष्यते	वन्देत	अवन्दिष्ट
वस् (रहना)	वसति	वसतु	अवसत्	वत्स्यति	वसेत्	अवात्सीत्

धातु	लट्	लोट्	लङ्	लृट्	विधिलिङ्	सामान्य लुङ्
वह्	वहति	वहतु	अवहत्	वक्ष्यति	वहेत्	अवाक्षीत्
(ढोना)	वहते	वहताम्	अवहत	वक्ष्यते	वहेत	अवोढ
विद् (जानना)	वेत्ति	वेत्तु	अवेत्	वेदिष्यति	विद्यात्	अवित्त
नि+विद् (कहना)	निवेदयते	निवेदयताम्	न्यवेदयत	निवेदयिष्यते	निवेदयेत	न्यवीविदत
विश् (घुसना)	विशति	विशतु	अविशत्	वेक्ष्यति	विशेत्	अविक्षत्
वृ (चुनना)	वृणोति	वृणोतु	अवृणोत्	वरिष्यति	वृणुयात्	अवारीत्
वृत् (होना)	वर्तते	वर्तताम्	अवर्तत	वर्तिष्यते	वर्तेत	अवर्तिष्ट
वृध् (बढ़ना)	वर्धते	वर्धताम्	अवर्धत	वर्धिष्यते	वर्धेत	अवर्धिष्ट
वृष् (बरसना)	वर्षति	वर्षतु	अवर्षत्	वर्षिष्यति	वर्षेत्	अवर्षीत्
शक् (सकना)	शक्नोति	शक्नोतु	अशक्नोत्	शक्ष्यति	शक्नुयात्	अशकत्
शिक्ष् (सीखना)	शिक्षते	शिक्षताम्	अशिक्षत	शिक्षिष्यते	शिक्षेत	अशिक्षिष्ट
शुच् (शोच करना)	शोचति	शोचतु	अशोचत्	शोचिष्यति	शोचेत्	अशोचीत्
शुभ् (शोभित होना/ करना)	शोभते	शोभताम्	अशोभत	शोभिष्यते	शोभेत	अशोभिष्ट
श्रि	श्रयति	श्रयतु	अश्रयत	श्रयिष्यते	श्रयेत्	अशिश्रियत्
(आश्रय)	श्रयते	श्रयताम्	अश्रयत	श्रयिष्यते	श्रयेत	अशिश्रियत

	लट्	लोट्	ङ्	लृट्	विधिलिङ्	सामान्य लुङ्
श्रु (सुनना)	शृणोति	शृणोतु	अशृणोत्	श्रोष्यति	शृणुयात्	अश्रौषीत्
सह् (सहना)	सहते	सहताम्	असहत	सहिष्यते	सहेत	असहिष्ट
सिध् (पूरा होना)	सिध्यति	सिध्यतु	असिध्यत्	सेत्स्यति	सिध्येत्	असिधत्
सृ (सरकना)	सरति	सरतु	असरत्	सरिष्यति	सरेत्	असार्षीत्
सृज् (बनाना)	सृजति	सृजतु	असृजत्	स्रक्ष्यति	सृजेत्	अस्राक्षीत्
सेव् (सेवा करना)	सेवते	सेवताम्	असेवत	सेविष्यते	सेवेत	असेविष्ट
स्था (ठहरना)	तिष्ठति	तिष्ठतु	अतिष्ठत्	स्थास्यति	तिष्ठेत्	अस्थात्
स्ना (नहाना)	स्नाति	स्नातु	अस्नात्	स्नास्यति	स्नायात्	अस्नासीत्
स्निह् (स्नेह)	स्निह्यति	स्निह्यतु	अस्निह्यत्	स्नेहिष्यति	स्निह्येत्	अस्निहत्
स्पृश् (छूना)	स्पृशति	स्पृशतु	अस्पृशत्	स्प्रक्ष्यति	स्पृशेत्	अस्प्राक्षीत्
स्मृ (याद करना)	स्मरति	स्मरतु	अस्मरत्	स्मरिष्यति	स्मरेत्	अस्मार्षीत्
स्वप् (सोना)	स्वपिति	स्वपितु	अस्वपीत्	स्वप्स्यति	स्वप्यात्	अस्वाप्सीत्
हन् (मारना)	हन्ति	हन्तु	अहन्	हनिष्यति	हन्यात्	अहनीत्
हस् (हंसना)	हसति	हसतु	अहसत्	हसिष्यति	हसेत्	अहसीत्
आ+ह्वे	आह्वयति	आह्वयतु	आह्वयत्	आह्वयिष्यति	आह्वयेत्	आह्वत्
(बुलाना)	आह्वयते	आह्वयताम्	आह्वयत	आह्वयिष्यते	आह्वयेत	आह्वास्त

□ □ □

परिशिष्ट-२

प्रत्यय परिचय

धातु	क्त	क्तवतु	शतृ/शानच्	क्त्वा	ल्यप्	तुमुन्	तव्यत्
अर्ज्	अर्जितः	अर्जितवान्	अर्जन्	अर्जित्वा	प्रार्ज्य	अर्जितुम्	अर्जितव्यम्
अद्	जग्धः	जग्धवान्	अदन्	जग्ध्वा	प्रजग्ध्य	अत्तुम्	अत्तव्यम्
अश्	अष्टः	अष्टवान्	अश्नुवानः	अशित्वा	समश्य	अशितुम्	अशितव्यम्
अस्	भूतः	भूतवान्	सन्	भूत्वा	संभूय	भवितुम्	भवितव्यम्
आप्	आप्तः	आप्तावान्	आप्नुवन्	आप्त्वा	प्राप्य	आप्तुम्	आप्तव्यम्
आस्	आसितः	आसितवान्	आसीनः	आसित्वा	उपास्य	आसितुम्	आसितव्यम्
इष्	इष्टः	इष्टवान्	इच्छन्	इष्ट्वा	समिष्य	एषितुम्	एषितव्यम्

धातु	क्त	क्तवतु	शतृ/शानच्	क्त्वा	ल्यप्	तुमुन्	तव्यत्
कथ्	कथितः	कथितवान्	कथयन्	कथयित्वा	संकथ्य	कथयितुम्	कथयितव्यम्
कुप्	कुपितः	कुपितवान्	कुप्यन्	कुपित्वा	प्रकुप्य	कोपितुम्	कोपितव्यम्
कृष्	कृष्टः	कृष्टवान्	कर्षन्	कृष्ट्वा	प्रकृष्य	कर्ष्टुम्	कर्ष्टव्यम्
क्री	क्रीतः	क्रीतवान्	क्रीणन्	क्रीत्वा	विक्रीय	क्रेतुम्	क्रेतव्यम्
गम्	गतः	गतवान्	गच्छन्	गत्वा	आगत्य	गन्तुम्	गन्तव्यम्
ग्रह	गृहीतः	गृहीतवान्	गृह्णन्	गृहीत्वा	संगृह्य	ग्रहीतुम्	ग्रहीतव्यम्
चि	चितः	चिन्वान्	चिन्वन्	चित्वा	संचित्य	चेतुम्	चेतव्यम्
चिन्त्	चिन्तितः	चिन्तितवान्	चिन्तयन्	चिन्तयित्वा	संचिन्त्य	चिन्तयितुम्	चिन्तयितव्यम्
चुर्	चोरितः	चोरितवान्	चोरयन्	चोरयित्वा	संचोर्य	चोरयितुम्	चोरयितव्यम्
जि	जितः	जितवान्	जयन्	जित्वा	विजित्य	जेतुम्	जेतव्यम्
त्यज्	त्यक्तः	त्यक्तवान्	त्यजन्	त्यक्त्वा	परित्यज्य	त्यक्तुम्	त्यक्तव्यम्
दा	दत्तः	दत्तवान्	ददन्	दत्वा	आदाय	दातुम्	दातव्यम्
दुह्	दुग्धः	दुग्धवान्	दुहन्	दुग्ध्वा	संदुह्य	दोग्धुम्	दोग्धव्यम्
दृश्	दृष्टः	दृष्टवान्	पश्यन्	दृष्ट्वा	संदृश्य	द्रष्टुम्	द्रष्टव्यम्
धा	हितः	हितवान्	दधन्	हित्वा	विधाय	धातुम्	धातव्यम्
नम्	नतः	नतवान्	नमन्	नत्वा	प्रणम्य	नन्तुम्	नमितव्यम्,नंतव्यम्

धातु	क्त	क्तवतु	शतृ/शानच्	क्त्वा	ल्यप्	तुमुन्	तव्यत्
नश्	नष्टः	नष्टवान्	नश्यन्	नष्ट्वा	विनश्य	नष्टुम्	नष्टव्यम्
नी	नीतः	नीतवान्	नयन्	नीत्वा	आनीय	नेतुम्	नेतव्यम्
पच्	पक्तः	पक्तवान्	पचन्	पक्त्वा	विपच्य	पक्तुम्	पक्तव्यम्
पठ्	पठितः	पठितवान्	पठन्	पठित्वा	संपठ्य	पठितुम्	पठितव्यम्
पा	पीतः	पीतवान्	पिबन्	पीत्वा	निपीय	पातुम्	पातव्यम्
प्रच्छ्	पृष्टः	पृष्टवान्	पृच्छन्	पृष्ट्वा	संपृच्छ्य	प्रष्टुम्	प्रष्टव्यम्
बन्ध्	बद्धः	बद्धवान्	बध्नन्	बद्ध्वा	संबद्ध्य	बद्धुम्	बद्धव्यम्
भक्ष्	भक्षितः	भक्षितवान्	भक्षयन्	भक्षयित्वा	संभक्ष्य	भक्षयितुम्	भक्षयितव्यम्
भू	भूतः	भूतवान्	भवन्	भूत्वा	संभूय	भवितुम्	भवितव्यम्
भ्रम्	भ्रान्तः	भ्रान्तवान्	भ्राम्यन्	भ्रान्त्वा	संभ्रम्य	भ्रमितुम्	भ्रमितव्यम्
मन्थ्	मथितः	मथितवान्	मथ्नन्	मन्थित्वा	संमथ्य	मन्थितुम्	मन्थितव्यम्
मुच्	मुक्तः	मुक्तवान्	मुञ्चन्	मुक्त्वा	विमुच्य	मोक्तुम्	मोक्तव्यम्
मुद्	मुदितः	मुदितवान्	मोदमानः	मुदित्वा	प्रमुद्य	मोदितुम्	मोदितव्यम्
या	यातः	यातवान्	यान्	यात्वा	प्रयाय	यातुम्	यातव्यम्
याच्	याचितः	याचितवान्	याचमानः	याचित्वा	प्रयाच्य	याचितुम्	याचितव्यम्
रक्ष्	रक्षितः	रक्षितवान्	रक्षन्	रक्षित्वा	संरक्ष्य	रक्षितुम्	रक्षितव्यम्

धातु	क्त	क्तवतु	शतृ/शानच्	क्त्वा	ल्यप्	तुमुन्	तव्यत्
रुद्	रुदितः	रुदितवान्	रुदन्	रुदित्वा	प्ररुद्य	रोदितुम्	रोदितव्यम्
रुध्	रुद्धः	रुद्धवान्	रुन्धन्	रुद्ध्वा	विरुद्ध्य	रोद्धुम्	रोद्धव्यम्
लभ्	लब्धः	लब्धवान्	लभमानः	लब्ध्वा	उपलभ्य	लब्धुम्	लब्धव्यम्
लिख्	लिखितः	लिखितवान्	लिखन्	लिखित्वा	आलिख्य	लेखितुम्	लेखितव्यम्
वद्	उदितः	उदितवान्	वदन्	उदित्वा	अनूद्य	वदितुम्	वदितव्यम्
वस्	उषितः	उषितवान्	वसन्	उषित्वा	प्रोष्य	वस्तुम्	वस्तव्यम्
वह्	ऊढः	ऊढवान्	वहन्	ऊढ्वा	प्रोह्य	वोढुम्	वोढव्यम्
विद्	विदितः	विदितवान्	विदन्	विदित्वा	संविद्य	वेदितुम्	वेदितव्यम्
वृत्	वृत्तः	वृत्तवान्	वर्तमानः	वर्तित्वा	निवृत्य	वर्तितुम्	वर्तितव्यम्
वृध्	वृद्धः	वृद्धवान्	वर्धमानः	वर्धित्वा	संवर्ध्य	वर्धितुम्	वर्धितव्यम्
शक्	शक्तः	शक्तवान्	शक्नुवन्	शक्त्वा	संशक्य	शक्तुम्	शक्तव्यम्
शास्	शिष्टः	शिष्टवान्	शासन्	शिष्ट्वा	अनुशिष्य	शासितुम्	शासितव्यम्
शी	शयितः	शयितवान्	शयानः	शयित्वा	संशय्य	शयितुम्	शयितव्यम्
श्रु	श्रुतः	श्रुतवान्	शृण्वन्	श्रुत्वा	संश्रुत्य	श्रोतुम्	श्रोतव्यम्
सह्	सोढः	सोढवान्	सहमानः	सोढ्वा	संसह्य	सोढुम्	सोढव्यम्
सेव्	सेवितः	सेवितवान्	सेवमानः	सेवित्वा	संसेव्य	[illegible]	